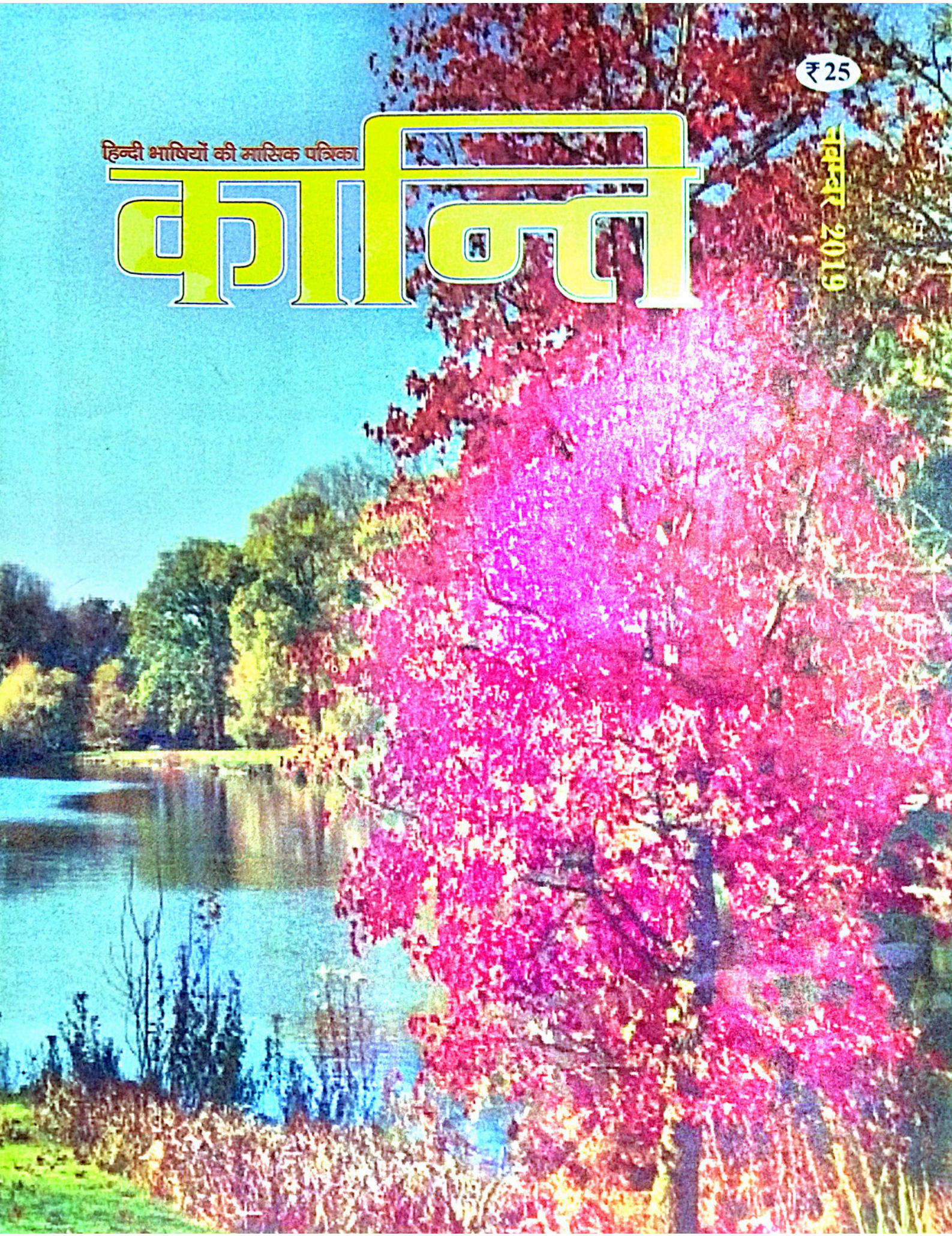
₹25
हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कादम्बिनी
नवम्बर 2019

M. +91-9430765155
E mail : gheyas2012@gmail.com

BHARAT ELECTRONICS

www.bharatelectronics.co.in ● E-mail : bharatelectronics@yahoo.in

BRANCHES

- Tourist Complex, Main Road, Ranchi-1
  Tele. 0651-2331385
- Ashreeta Complex, Club Road, Ranchi
  Contact : 96933 35354
- Anjuman Plaza, Main Road, Ranchi
  Tele. 0651-2331203
- R. Ali Building, Ranchi
- Ratu Road, Ranchi

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 29 अंक 05 नवम्बर 2019

यह तुम्हारा समुदाय (उम्मत) वास्तव में एक ही समुदाय है और मैं तुम्हारा रब हूं, अतः तुम मेरी बन्दगी करो, मगर यह लोगों की कारस्तानी है कि उन्होंने आपस में अपने दीन (धर्म) को टुकड़े-टुकड़े कर डाला–सबको हमारी ओर पलटना है। –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल managerkantidelhi@gmail.com

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 60/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : www.kanti.in

चेक / ड्राफ्ट 'कान्ति' के नाम से बनवाएं

वैचारिकी

शुक्र की जगह शिकवा

वह भूखी ही निकल पड़ी कॉलेज को
क्योंकि नाश्ते में पका था दलिया।
मेट्रो स्टेशन पर बैठी वह लगी सोचने,
झगड़ा तो दलिया से है, नाश्ते की बलि क्यों ?
सामने की टक शॉप से ले आयी बिस्कुट का डिब्बा
वह रुक गयी, उसे खोलते-खोलते
सोचा, क्यों न पहले पानी पी लूं !
पर्स पे रख बिस्कुट का डिब्बा वह उठी
पास ही था वाटर कूलर, बढ़ गयी उसकी ओर।
पानी पीकर उठी तो देखा,
बड़े चाव से उसके बिस्कुट खा रहा है
वहीं खड़ा एक लड़का।
गुस्सा तो बहुत आया, पर चुप रही वह
पर आंखें चुप नहीं थीं उसकी,
जिन्हें देख लड़का घबराया, पर कुछ समझ न पाया।
बढ़ा दिया बिस्कुट का डिब्बा उसकी ओर,
लो बहन तुम भी खाओ।
उसने भी उठा लिया एक बिस्कुट, बिना सोचे।
फिर दोनों एक-एक कर बिस्कुट खाने लगे।
अंत में बचा बिस्कुट एक, नज़रें थीं दोनों की उस पर।
लड़का बाज़ी मार गया।
बिस्कुट लिया, तोड़ा, आधा उसकी ओर बढ़ाया
आधा अपने मुंह में डाला, हाथ झाड़ा, चलता बना।
लड़की थी स्तब्ध, यह कैसा लड़का आया,
मेरा ही बिस्कुट, मुझे ही खिला गया !
फिर आ गयी ट्रेन और वह जा बैठी उसमें।
अब खोला अपना पर्स तो हैरान हो गयी,
बिस्कुट का डिब्बा उसमें था मौजूद।
बेख़याली में अन्दर रख दिया था जिसे उसने।
जो बिस्कुट खाये थे उसने नहीं था वह अधिकार,
एक अजनबी लड़का उस पर कर गया उपकार।
पर शुक्र की जगह शिकवा रही करती रही वह।
यही रवैया है हम सबका
रोम-रोम पर, सांस-सांस पर ईश्वर का उपकार
शुक्र नहीं शिकवा करते हैं, फिर भी बारम्बार।

● मुशर्रफ़ अली



कहां क्या है ?

शुक्र की जगह शिकवा (वैचारिकी) —मुशर्रफ़ अली 3

कुरआन ज्योति 5

हदीस मंजरी 6

मानव का मौलिक जीवन-सिद्धांत और इस्लाम (संपादकीय) 7

एकेश्वरवाद मानव-प्रकृति के पूर्णतः अनुकूल (आस्था)
—मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ इस्लाही 9

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की विशिष्टताएं (जीवन आदर्श)
—मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां 13

हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र अल-दौसी (रज़ि॰) (नेकी के सिपाही)
—अब्दुर्रहमान राफ़त पाशा 19

भोजन के विषय में ईश्वरीय मार्गदर्शन —वारिस हुसैन 23

मानवता (कविता) —बाक़र अली 24

अध्ययन ने इस्लाम तक पहुंचाया (चेतना) 25

सर्वधर्म समभाव और इस्लाम (विशेष आयोजन) —मुहम्मद इक़बाल मुल्ला 26-27

धार्मिक राष्ट्रवाद बनाम भारतीय राष्ट्रवाद —राम पुनियानी 33

एक विश्व एक परिवार —स्वामी अग्निवेश 35

इस्लामोफ़ोबिया अभियान के निहितार्थ (विचारार्थ) —डॉ॰ फ़रहत हुसैन 37

क़दम जमाए हुए हैं पत्रिकाएं (साहित्यिकी) —पल्लव 41

मीठी नींद (कहानी) —प्रवीण कुमार सहगल 43

लघुकथाएं —योगेन्द्र पाल 45

हुमायूं का मक़बरा (बालवीथी) 47

कुरआन ज्योति

(8) और अगर हम एक विशेष अवधि तक उनकी सज़ा को टालते हैं, तो वे कहने लगते हैं कि आख़िर किस चीज़ ने उसे रोक रखा है ? सुनो, जिस दिन उस सज़ा का समय आ गया तो वह किसी के फेरे न फिर सकेगा और वही चीज़ उनको आ घेरेगी जिसका वे उपहास कर रहे हैं ।

(9) अगर कभी हम इन्सान को अपनी रहमत से नवाज़ने के बाद फिर उससे महरूम कर देते हैं तो वह निराश होता है और नाशुक्री करने लगता है । (10) और अगर उस विपत्ति के बाद जो उस पर आयी थी, हम उसे नेमत का मज़ा चखाते हैं तो कहता है कि मेरी तो सारी दरिद्रता दूर हो गयी, फिर वह फूला नहीं समाता और अकड़ने लगता है ।[10] (11) इस दोष से मुक्त अगर कोई हैं तो बस वे लोग जो सब्र करने (धैर्य रखने) वाले[11] और सत्कर्म करने वाले हैं । और वही हैं जिनके लिए क्षमा भी है और बड़ा बदला भी ।[12]

–क़ुरआन, 11:8-11

---

10. यह इन्सान के छिछोरेपन, संकीर्णदृष्टि, चिन्तन-अभाव का हाल है जिसका जीवन में हर समय प्रदर्शन होता रहता है और जिसको आमतौर से लोग अपने आपका हिसाब लेकर स्वयं अपने भीतर भी महसूस कर सकते हैं । आज समृद्ध और बलवान हैं तो अकड़ रहे हैं, घमंड कर रहे हैं, सावन के अंधे की तरह हर ओर हरा ही हरा नज़र आ रहा है और ध्यान तक नहीं जाता कि कभी इस वसंत पर पतझड़ भी आ सकता है ।

कल किसी विपत्ति के फेर में आ गये तो बिलबिला उठे, साक्षात निराशा बनकर रह गये और बहुत तिलमिलाये तो ख़ुदा को गालियां देकर और उसकी ख़ुदाई पर व्यंग्य करके दुख का भार हलका करने लगे फिर जब बुरा समय बीत गया और भले दिन आये तो वही अकड़, वही डींगें और नेमत के नशे में वही मद-मस्तियां फिर शुरू हो गयीं ।

इन्सान के इस घटिया दुर्गुण का यहां क्यों उल्लेख हो रहा है ? इसका उद्देश्य बड़ी सूक्ष्म शैली में लोगों को इस पर चेतावनी देनी है कि आज शान्ति के वातावरण में जब हमारा पैग़म्बर तुम्हें सचेत करता है कि अल्लाह की अवज्ञा करते रहोगे तो तुम पर अज़ाब आएगा, और तुम उसकी यह बात सुनकर एक ज़ोर का ठठ्ठा मारते हो और कहते हो कि "दीवाने ! देखता नहीं हम पर नेमतों की वर्षा हो रही है, हर ओर हमारी बड़ाई के फरेरे रहे हैं, इस समय तुम्हें दिन-दहाड़े यह डरावना सपना कैसे नज़र आ गया कि कोई अज़ाब हम पर टूट पड़ने वाला है", तो वास्तव में पैग़म्बर के उपदेशों के उत्तर में तुम्हारा यह ठठ्ठा इसी घटिया दुर्गुण का एक अति घृणित प्रदर्शन है ।

अल्लाह तो तुम्हारी पथ-भ्रष्टताओं और दुष्कर्मों के बावजूद केवल अपनी दया व कृपा से तुम्हारी सज़ा में देर कर रहा है, ताकि तुम किसी तरह संभल जाओ, मगर तुम इस मुहलत के समय में यह सोच रहे हो कि हमारी ख़ुशहाली कैसी दृढ़ नींवों पर स्थापित है और हमारा यह चमन कैसा सदाबहार है कि इस पर पतझड़ आने का कोई ख़तरा ही नहीं ।

(शेष पृष्ठ 12 पर)

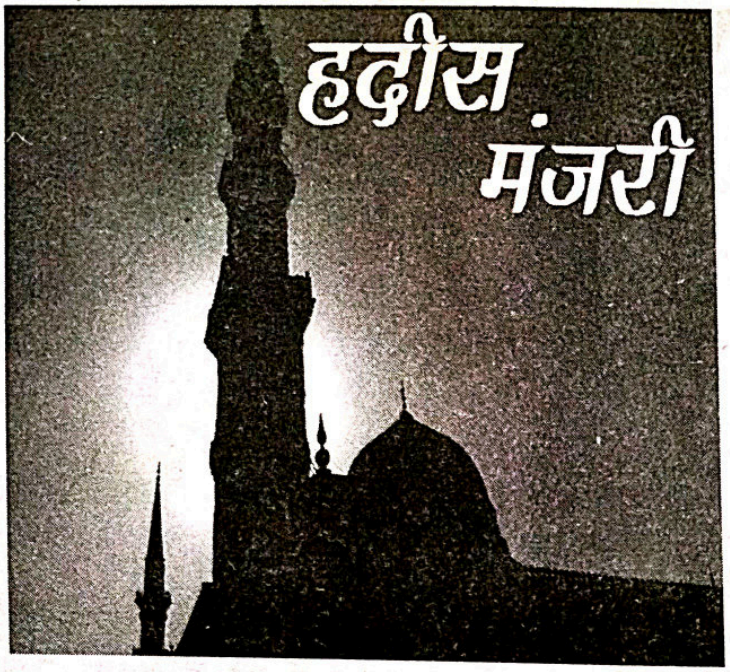

वे चीज़ें जिनसे रोका गया है

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "जो व्यक्ति अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिए कि भली बात कहे या चुप रहे ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू मूसा (रज़ि॰) से रिवायत है वे कहते हैं : मैंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), कौन-सा मुसलमान सर्वश्रेष्ठ है ? आपने कहा : "वह जिसकी ज़ुबान और जिसके हाथ से मुसलमान सुरक्षित रहें ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत सह्ल बिन सअ़द (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जो व्यक्ति मुझे अपने दोनों जबड़ों के बीच की चीज़ (ज़ुबान) और अपने दोनों पावों के बीच की चीज़ (गुप्तांग) के विषय में ज़मानत दे, तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि उन्होंने नबी (सल्ल॰) को यह कहते हुए सुना : "एक बन्दा बात करता है और विचार नहीं करता कि बात अच्छी है या नहीं वह उसके कारण दोज़ख़ में उससे कहीं अधिक दूर तक गिर जाता है जितना कि पूर्व और पश्चिम के बीच दूरी है ।"–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "कभी बन्दा अल्लाह तआला की ख़ुशी की बात करता है और उसे उसके महत्व का ज्ञान नहीं होता । अल्लाह उस बात के कारण उसके दर्जों को ऊंचा कर देता है । और कभी बन्दा अल्लाह तआला की अप्रसन्नता की कोई बात कहता है और उसे उसकी गंभीरता की ख़बर नहीं होती उसकी उस बात के कारण जहन्नम में गिर जाता है ।" –बुख़ारी

● हज़रत सुफ़ियान बिन अब्दुल्लाह (रज़ि॰) से रिवायत है कि उन्होंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), मुझे आप कोई ऐसी बात बताइए जिसे मैं मज़बूती से पकड़ लूं । आपने कहा : "कहो : मेरा रब अल्लाह है, फिर इस पर जम जाओ ।" मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), मेरे विषय में आप किस चीज़ का अधिक भय रखते हैं ? तो आपने अपनी ज़ुबान को पकड़ लिया, फिर कहा : "इससे ।" –तिरमिज़ी

● हज़रत इब्न उमर (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "बिना अल्लाह के स्मरण के ज़्यादा बातें न किया करो क्योंकि अल्लाह तआला के स्मरण के बिना ज़्यादा बातों से दिल कठोर हो जाता है और लोगों में सबसे अधिक दूर वह होता है जिसका दिल कठोर है ।" –तिरमिज़ी

● हज़रत उक़बह बिन आमिर (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), मुक्ति किस चीज़ के द्वारा प्राप्त होती है ? आपने कहा : "अपनी ज़ुबान को क़ाबू में रखो और अपने घर को काफ़ी समझो और अपने गुनाहों पर रोया करो ।" –तिरमिज़ी

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

संपादकीय

मानव का मौलिक जीवन-सिद्धांत और इस्लाम

इस्लाम इन्सान का मौलिक, वास्तविक एवं स्वाभाविक धर्म है । यह केवल एक आस्था नहीं, अपितु जीवन में अनुकरण करने और आत्मसात करने की तीव्र प्रेरणा देने वाला धर्म है । इस्लाम एक पूरी जीवन पद्धति है । यह इन्सान को जीवन के सभी क्षेत्रों व गतिविधियों में मार्गदर्शन करता है, और वह भी ईश्वरीय मार्गदर्शन ! यह एक सार्वभौमिक धर्म है, अतयव इसका नाम किसी क़ौम, जाति, क्षेत्र या अन्य किसी भौतिक पहचान पर नहीं है, अपितु पालनहार प्रभु और उसके बन्दों के मधुर संबंधों पर है । इस्लाम का अर्थ है–ईश्वर की बन्दगी और उसके आगे पूर्ण समर्पण । कुरआन कहता है कि अल्लाह की सच्चाई आरंभ से एक है । दुनिया का कोई देश और कोई कोना ऐसा नहीं जहां अल्लाह के पैग़म्बर न भेजे गये हों । उन्होंने इन्सानों को हक़ और सच्चाई की शिक्षा दी, परन्तु सदैव ऐसा हुआ कि लोगों ने कुछ समय के बाद अपनी स्वार्थपरता के कारण कल्पना और अंधविश्वास से विभिन्न मिथकों और झूठी बातों के सहारे वास्तविक धर्म-शिक्षाओं को विकृत कर डाला । महादयालु, कृपाशील अल्लाह ने फिर भी इन्सानों पर कृपा दृष्टि की और अपने अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को भेजा । आप (सल्ल०) के द्वारा इस्लाम की पूर्ण और प्रमाणिक शिक्षा पेश की । इस्लाम की शिक्षाओं में सर्वप्रथम शिक्षा यह है कि अल्लाह एक है और केवल उसी की बन्दगी की जानी चाहिए ।

इसकी शिक्षाएं इन्सानियत के लिए सर्वथा हितकारी-कल्याणकारी हैं । ये किसी एक समुदाय या क़ौम की सम्पत्ति न होकर सार्वभौमिक और सर्वजन की सम्पत्ति हैं । अत: यह सार्वजनिक, जगतव्यापी एवं सर्वकल्याणकारी धर्म है । सहज रूप से अल्लाह की प्रसन्नता, सामीप्य एवं लोक-परलोक की सफलता प्रत्येक आस्थावान मनुष्य को अभीष्ट है । यह उसी एक जीवन-प्रणाली द्वारा संभव है, जो मानव-जाति के संगठन को अस्त-व्यस्त नहीं करती एवं उसके विचार-व्यवहार को द्वंदात्मक संघर्ष में नहीं ग्रस्त करती तथा जो आख़िरकार मानव-प्रकृति और जगत-प्रकृति से नहीं टकराती । यही इस्लामी जीवन-प्रणाली है । इस्लाम इसलिए नहीं आया कि केवल नैतिक क्षेत्र में आत्मा को संवारे, वह लोगों में मात्र चेतना और अनुभूति बनकर रहे और मस्जिदों में केवल एक उपासना-पद्धति बनकर रह जाए । अपितु यह मानव-जीवन को पूरी तरह अल्लाह के आदेश के अनुरूप ढालने आया है । यह लोगों को उनके धर्म से हटाना नहीं चाहता बल्कि उनके वास्तविक धर्म का उनको अनुगामी बनाना चाहता है । दुनिया में विभिन्न धर्म हैं । हर धर्मावलंबी समझता है कि सत्य केवल उसी के पास है और बाक़ी सब असत्य पर हैं । यह वास्तविकता से परे बात है । सत्य तो केवल एक ही हो सकता है । इस्लाम सत्य में असत्य की मिलावट को दूर कर उसे विशुद्ध और पवित्र बनाता है ।

मेयारी तालीम ही बेहतर मुस्तक़बिल की ज़मानत है

बच्चों की बेहतर तालीम व तरबियत के पेशे-नज़र स्कूलों और मदरसों के लिए

इस्लामी तर्ज़ पर तैयार निसाबी किताबें

उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी, गणित, सामान्य ज्ञान, कंप्यूटर, इस्लामियात और अन्य विषयों की पाठ्य-पुस्तकें अंग्रेज़ी, उर्दू और हिन्दी तीनों भाषाओं में उम्दा काग़ज़, बेहतरीन प्रकाशन, मतन से हम आहंग दीदाज़ेब तस्वीरों के साथ पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित करने वाला

हिन्दुस्तान भर में मशहूर पहला इशाअती इदारा

भारत सरकार के क़ौमी दर्सियात (C.B.S.E & N.C.E.R.T) के ख़ाके के तहत बच्चों के स्वभाव और दिलचस्पी को ध्यान में रखते हुए मुसलसल जांच (C.C.E) के नये तक़ाज़ों के मुताबिक़ नामवर शिक्षण-संस्थाओं से जुड़े अनुभवी शिक्षकों के द्वारा तैयार की गयी पाठ्य-पुस्तकों के लिए संपर्क करें।

हम सारे तालीमी इदारों से भरपूर तआवुन की अपील करते हैं और अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि हम सबकी इस कोशिश को क़ुबूल फ़रमाए। आमीन!

इस्लामी पाठ्य-पुस्तकों का पहला इशाअती इदारा। उर्दू, हिन्दी मीडियम स्कूलों और मदरसों के लिए

Pioneer in Islamic Oriented Books for Urdu/Hindi Medium Schools & Madarsas

AL QALAM
Publications Pvt.Ltd.

Al Qalam

اَلْقَلَم پبلیکیشنز
پرائیویٹ لمیٹڈ

Regd. Office : 344, Gali Garhalyya, Bazar Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110 006.
Phone : (Off.) 011-2324 1481, 2326 1481 (Godown) 011- 23631481
website : alqalampublications.com e-mail : alqalambooks@gmail.com



To place orders please e-mail us on : alqalambooks@gmail.com or WhatsApp : 9136393030

एकेश्वरवाद मानव-प्रकृति के पूर्णतः अनुकूल

◆ मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ इस्लाही

एकेश्वरवाद दिल की दुनिया बदल देने वाली एक क्रांतिकारी, कल्याणकारी, सार्वभौमिक, सर्वाधिक महत्वपूर्ण और मानव-प्रकृति के बिलकुल अनुकूल अवधारणा है, जो आदमी को सिर्फ़ और सिर्फ़ एक अल्लाह या ईश्वर की बन्दगी और दासता की शिक्षा देती है। एक अल्लाह के आगे सजदा करने या झुकने वाला आदमी बाक़ी सारे बनावटी और नक़ली खुदाओं के सजदे और दासता से छुटकारा पा जाता है और अल्लाह की नज़र में सारे इन्सान एक समान हो जाते हैं। अल्लाह की नज़र में किसी के बड़ा या छोटा होने का मानदंड उसका कर्म है। जिसका कर्म जितना अच्छा होगा, वह उतना ही बड़ा और ऊंचा होगा और जिसका कर्म जितना बुरा होगा वह उतना ही छोटा या अधम और नीच होगा। आदमी का कर्म ही उसे लोक-परलोक में सफल या असफल बनाएगा और स्वर्ग या नरक में ले जाएगा।

इस विशाल और सुव्यवस्थित कायनात की रचना एक सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, तत्वदर्शी और दूरदर्शी ईश्वर ने अपनी अनुपम और असीम शक्ति से की है, वह इसको शून्य से अस्तित्व में लाया है। उसी अल्लाह के ज्ञान एवं तत्वदर्शिता के तहत यह सब कुछ एक अत्यंत सुव्यवस्थित एवं अनुशासित तरीक़े से संचालित हो रहा है। दुनिया में इससे ज़्यादा ग़लत बात कभी नहीं कही गयी है कि यह कायनात किसी रचयिता के बिना अपने आप बन गयी है; क्योंकि इस संसार का एक ही स्रष्टा और स्वामी है और वही संपूर्ण मानवजाति का वास्तविक पूज्य-प्रभु है, उसके सिवा कोई दूसरा ईष्ट-पूज्य नहीं है–

"अल्लाह ही उपास्य है, उसके सिवा कोई ईष्ट-पूज्य नहीं।" (क़ुरआन, सूरा-4 निसा, आयत-87)

इसलिए पवित्र क़ुरआन में सिर्फ़ और सिर्फ़ एक ही ईश्वर के आगे झुकने को कहा गया है–

"न सूरज को सजदा करो, न चांद को, अल्लाह को सजदा करो जिसने उन सबको पैदा किया है।"

(क़ुरआन, सूरा-41 सजदा, आयत-37)

किसी भी मामले में कोई भी ईश्वर का साझीदार या समकक्ष नहीं। वह सर्वशक्तिमान है और हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है। कोई चीज़ उसकी शक्ति और सत्ता से बाहर नहीं, लाभ-हानि, स्वास्थ्य, बीमारी, सम्मान, अपमान, धन-दौलत, सत्ता, आजीविका के साधन, संतान, जीवन, मृत्यु और भाग्य सब कुछ उसी के हाथ में हैं और सब कुछ उसी की ओर से है, हर चीज़ के ख़ज़ाने उसी के पास हैं।

बहुदेववाद वास्तव में सृष्टि-पूजा का नाम है अर्थात् सृष्टि की विभिन्न वस्तुओं और जीव-जंतुओं को ईश्वर अथवा उसका समकक्ष समझकर उनकी पूजा-अर्चना का नाम बहुदेववाद है। दूसरे शब्दों में, किसी सृष्ट जीव-जंतु या पदार्थ को ईश्वर का सहभागी और समकक्ष ठहराना, उसके गुणों में किसी को साझीदार मानना और उसके अधिकारों एवं प्रभुत्व में किसी को साझीदार और समकक्ष ठहराना ही बहुदेववाद है, जो अल्लाह की निगाह में सबसे बड़ा अन्याय, अत्याचार और महापाप है।

सोच-विचार का सामान्य तरीक़ा

यह छोटी-सी पुस्तक, जो इस समय आपके हाथों में है और जिसके अध्ययन की शुरुआत आप कर रहे हैं, बहुत संक्षिप्त ही सही, लेकिन इसके छोटे-से आकार को देखकर आप स्वाभाविक रूप से बहुत-सी वास्तविकताओं को मजबूरन स्वीकार करते हैं। पुस्तक को देखकर आप मानते हैं कि इसका एक लेखक है, जिसने किसी उद्देश्य के लिए इसको लिखा है, कोई कम्पोज़ करने वाला है, जिसने इसको

कम्पोज़ किया है, कोई छापाख़ाना है जहां से यह छपी है, कोई जिल्द बनाने वाला है, जिसने इसकी जिल्द बनायी है, और ज़रूर ही कोई प्रकाशक है जिसकी मेहनत और कोशिश से यह पुस्तक अपनी तैयारी के विभिन्न चरणों से गुज़रकर इस पूर्ण रूप में आपको सोच-विचार हेतु प्रेरित करने के लिए आपके हाथों तक पहुंची है ।

यह रेडियो, जो केवल आपके घर की शोभा ही नहीं, एक अहम ज़रूरत भी है; इससे लाभ उठाकर आप न केवल मार्कोनी (Marconi) के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं, बल्कि उसकी असाधारण बुद्धि उसकी शोध-भावना, आविष्कार, उसकी लगन, कठोर परिश्रम और प्रयास को भी दिल से स्वीकार करते हैं ।

यह तेज़ रफ़्तार रेल, जो प्रत्येक देश की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है और संसार का कोई भाग शायद ही ऐसा होगा, जहां जॉर्ज स्टीफेंसन के इस सर्वाधिक लाभदायक आविष्कार से लाभ न उठाया जा रहा हो । इससे लाभ उठाकर आप न केवल इसके आविष्कारक जॉर्ज स्टीफेंसन के अस्तित्व को मानने पर मजबूर होते हैं, बल्कि हृदय से उसके आभारी भी होते हैं कि उसने अपने आश्चर्यजनक प्रयास, अनुसंधान-कार्य, निरंतर परिश्रम और लगन से संसार वालों के लिए एक अत्यंत लाभकारी चीज़ का आविष्कार कर दिया है ।

हवा के कंधों पर भारी जहाज़ को उड़ते देखकर आप स्वाभाविक रूप से विज्ञान के इस आश्चर्यजनक आविष्कार से प्रभावित होते हैं और यह लौह-पक्षी आपको केवल इसी पर विवश नहीं करता कि आप विलबर राइट (Wilbar Wright) और ऑरविल राइट (Orville Wright), दो अमेरिकी बंधुओं के अस्तित्व को स्वीकार करें, बल्कि ठीक तौर पर आपसे यह ख़ामोश और स्वाभाविक अपेक्षाएं भी रखता है कि आप उनकी अनुपम प्रतिभा, स्थायी प्रवृत्ति, त्याग, बलिदान, सतत् कठोर परिश्रम, अपने लक्ष्य के प्रति असाधारण लगाव और समर्पण-भाव को भी स्वीकार करें ।

यह आपके सोचने-समझने और विचार-विमर्श करने का एक सामान्य तरीक़ा है । जीवन में प्रतिदिन आप इसी प्रकार विभिन्न चीज़ों पर चिंतन-मनन करते और अपनी स्वाभाविक जिज्ञासाओं और प्रश्नों का उत्तर मालूम करके किसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं । सोचने-विचारने का यह अंदाज़ इतना सरल, नैसर्गिक, तर्कपूर्ण और प्रामाणिक है कि इसके विरुद्ध मन के किसी हिस्से में भी कभी कोई शंका पैदा नहीं होती । कर्म को देखकर कर्ता की कल्पना, आविष्कार को देखकर आविष्कारक की कल्पना, उद्योग को देखकर उद्योगपति का ध्यान सामान्य बुद्धि (Common sense) की बात है और यह बात इतनी जानी-पहचानी और स्वाभाविक है कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति न केवल इससे परिचित है, बल्कि यही उसके चिंतन-मनन और सोच-विचार का सामान्य तरीक़ा भी है ।

हठधर्मी और असामान्य विचारशैली

आप ही सोचिए, अगर कोई मूर्ख आपको यह बताने लगे कि यह रेडियो, यह रेलगाड़ी, यह जहाज़ किसी आविष्कारक के असाधारण सतत् प्रयास और कठोर परिश्रम का परिणाम नहीं, बल्कि आकस्मिक घटना का परिणाम हैं, स्वयं कुछ धातुएं संयोग से मिल गयीं, स्वयं कुछ विशेष प्रकार के पुर्ज़े ढल गये, अपने आप इनमें एक व्यवस्था और क्रम पैदा हो गया और अपने आप रेडियो, रेलगाड़ी, जहाज़ अस्तित्व में आ गये और मनुष्य इनसे लाभ उठाने लगे और रही यह किताब तो इसका अस्तित्व भी एक संयोग ही का परिणाम है, न इसका कोई लेखक है जिसने प्रयास करके कुछ सामग्री एकत्र की है और इसे एक क्रम प्रदान किया है, न किसी छापेख़ाने में यह छपी है, न किसी जिल्दसाज़ ने इसकी जिल्द बनायी है और न किसी प्रकाशक ने इसके छापने का बोझ उठाया है; स्वयं इसकी रचना हो गयी, अपने आप कुछ काग़ज़ इकट्ठा हुए, अपने आप किताब लिख गयी और स्वत: किताब छप गयी, अपने आप इसकी जिल्द बन गयी और अपने आप छपकर आपके हाथ में आ गयी, तो आप हैरत से कहने वाले का मुंह तकते रहेंगे और क्षण भर के लिए भी यह न सोचेंगे कि यह व्यक्ति होश-हवास में यह सब कुछ कह रहा है, यह चिंतन-मनन नहीं सरासर हठधर्मी है । मनुष्य की सोच न इस हठधर्मी पर ध्यान दे सकती है और न इस मूर्खता और बुद्धिहीनता में उसे कभी कोई संदेह हो सकता है ।

बुद्धि-विवेक एवं शिष्टाचार की मांग

फिर यह भी एक जानी-मानी वास्तविकता है कि किसी काम, किसी आविष्कार और किसी उद्योग को देखकर आदमी केवल उसके कर्ता, आविष्कारक और उद्योगपति के अस्तित्व ही को स्वीकार नहीं करता, बल्कि उस काम, आविष्कार और उद्योग का महत्व, लाभ, आवश्यकता और उपयोगिता की दृष्टि से उसके कर्ता, आविष्कारक और उद्योगपति के बुद्धि-विवेक, ज्ञान एवं तत्वदर्शिता, महानता

और श्रेष्ठता की भी अनुभूति करता है और उसके लिए अपने बुद्धि-विवेक और सोच-समझ के अनुसार कृतज्ञता, आभार, प्रेम और आदर-सम्मान की भावनाएं भी उसके दिल में पैदा होती हैं ।

जो व्यक्ति खुली आंखों से इन रचनाकारों, आविष्कारकों और विचारकों के महान कार्यों को देख रहा हो, उनके द्वारा बनायी या आविष्कार की हुई वस्तुओं से लाभ उठा रहा हो, और उनके कारण अपने सुख-चैन और आराम के लिए तरह-तरह के सामान इकट्ठा कर रहा हो, उसकी सद्बुद्धि, सज्जनता और मानवता की मांग इसके सिवा कुछ न होगी कि वह उन रचनाकारों, आविष्कारकों और विचारकों का उपकार माने, उनकी समस्त असाधारण और अनुपम सेवाओं को स्वीकार करे, उनके ज्ञान, कृपा, कठोर परिश्रम, त्याग और बलिदान को स्वीकार करे, उनकी शोध-भावना और अपने अभियान से गहरे लगाव और लगन की प्रशंसा करे, उनके निरंतर किये गये प्रयासों का आदर-सम्मान करे और उनको धन्यवाद दे ।

रहा वह व्यक्ति जो इन कृपादानों और वरदानों से लाभ उठाने, सुख-चैन और आराम की सुख-सुविधाएं प्राप्त करने में तो बड़ा तत्पर और चालाक हो, लेकिन वह उन रचनाकारों और आविष्कारकों की सेवाओं को न माने, उनकी उपेक्षा करे और उसके दिल में उनके लिए आभार और उपकार की कण भर भी कोई भावना न हो, तो ऐसा व्यक्ति न केवल यह कि बुद्धि एवं विवेक से वंचित है, बल्कि सज्जनता और मानवता के बहुमूल्य गुणों से भी ख़ाली है ।

कायनात का संक्षिप्त अध्ययन

अब ज़रा नज़र उठाकर अपने चारों ओर फैली हुई विशाल, व्यापक और अथाह कायनात का अवलोकन कीजिए कायनात की अनुपम सुन्दरता, सुदृढ़ व्यवस्था, पूर्ण संतुलन और समरसता, आश्चर्यजनक संबंध और क्रमबद्धता, सूर्य, चन्द्रमा तथा दूसरे ग्रहों की सुव्यवस्थित परिक्रमा, रात-दिन का नियमानुसार आना-जाना, भू-मंडल पर बसने वाले अनगिनत प्राणियों के भरण-पोषण और आजीविका प्रदान करने के पूर्ण एवं अटल प्रबंध पर विचार कीजिए ।

मनुष्य के समुचित और सन्तुलित शरीर और इसमें मौजूद आश्चर्यजनक शक्तियों, दिल-दिमाग़ तथा सोचने-समझने की अथाह सामर्थ्य और कायनात को वशीभूत करने की उमंग और दृढ़ संकल्प-शक्ति पर विचार कीजिए ।

मानव-जीवन के अस्तित्व और पालन-पोषण के लिए सूर्य, चन्द्रमा, धरती, आकाश और हवा में पूर्ण सामंजस्य, और एकत्व सेवा-कार्य और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यापक एवं पूर्ण प्रबंध पर ध्यान दीजिए । वातावरण में सांस लेने के लिए हवा का असीमित भंडार, प्यास बुझाने के लिए पानी का आश्चर्यजनक प्रबंध, भूख मिटाने के लिए तरह-तरह के खाद्य पदार्थ, अनाज और फल, सौंदर्य रसिकता की पूर्ति के लिए सुबह और शाम की मनमोहकता, फूलों का निखार, आराम और शान्ति के लिए रात की आरामदेह और ख़ामोश गोद, दौड़-धूप के लिए प्रकाशमान दिन, दिल की राहत के लिए सुकून देने वाले जोड़े, आंखों की ठंडक और इत्मीनान के लिए प्यारी औलाद, ज़िन्दगी को ऐश और आराम का पालना बनाने के लिए ख़ानदान और भाई-बंधुओं की मुहब्बत और सहारे, प्राकृतिक शक्तियों से काम लेने के लिए उन्हें वशीभूत करने की असीम शक्ति और दिल व दिमाग़ में नयी-नयी चीज़ें आविष्कार करने की आश्चर्यजनक क्षमताओं पर सोच-विचार कीजिए ।

यह अवलोकन और अध्ययन आप रात-दिन कर रहे हैं और पल भर रुके बिना बराबर कायनात की नेमतों से फ़ायदा उठा रहे हैं । धरती से पैदा होने वाले स्वादिष्ट, मीठे, लाभदायक फलों, ग़ल्लों और तरकारियों से दिन-रात फ़ायदा उठा रहे हैं । साफ़ एवं स्वच्छ पानी से प्यास बुझा रहे हैं, सुबह के ठंडे और नर्म झोंकों से आनन्द ले रहे हैं । बादलों से बरसने वाले पानी से अपने बाग़ों और खेतों को सींच रहे हैं, वातावरण में मौजूद हवा के अथाह भंडार में सांस ले रहे हैं, सूरज की रौशनी, रात की ठंडक, सुबह का सुहावना वातावरण और शाम की रंगीनी से शान्ति पा रहे हैं । मां-बाप का अनुपम प्रेम और स्नेह, पत्नी का अतुलनीय साथ, संतान का सुखद और आनन्ददायक साथ आपकी ज़िन्दगी को ऐश और आराम का गहवारा बना रहे हैं । कायनात की प्राकृतिक शक्तियों को वशीभूत करके रात-दिन प्रगति के मार्ग पर लगातार आगे बढ़ रहे हैं और उन अनगिनत नेमतों से लाभांवित होने और एक-दूसरे से आगे निकल जाने के लिए लगातार कोशिश कर रहे हैं ।

कायनात के अध्ययन की स्वाभाविक मांग

विचार कीजिए; यह सब कुछ जो आप देख रहे हैं, महसूस कर रहे हैं और बरत रहे हैं, इनकी स्वाभाविक मांग क्या है ? आपका दिल गवाही देगा कि इस विशाल और सुव्यवस्थित कायनात के पीछे अवश्य ही एक सर्वशक्तिमान, एक तत्वदर्शी और दूरदर्शी मालिक और शासक की महान

हस्ती मौजूद है ।

यह सब कुछ न अपने आप हुआ है और न अपने आप हो रहा है । इस कायनात का एक रचयिता (Designer) है जिसने अपनी शक्ति और इरादे से इसकी योजना बनायी और इसको शून्य से अस्तित्व में लाया और इसका एक स्वामी और शासक है, जिसके ज्ञान एवं तत्वदर्शिता के तहत यह सब कुछ अत्यंत सुव्यवस्थित एवं अनुशासित ढंग से हो रहा है । यह सब कुछ यूं ही बिना किसी उद्देश्य और बिना किसी कारण के नहीं है, बल्कि एक महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक योजना और स्कीम के साथ हो रहा है ।

दुनिया में इससे ज़्यादा ग़लत बात कभी नहीं कही गयी है कि यह कायनात किसी रचयिता के बिना अपने आप पैदा हो गयी है और यह किसी सर्वशक्तिमान और तत्वदर्शी ईश्वर की सर्वोच्च और सर्वोत्तम रचना नहीं है, बल्कि भौतिक पदार्थों (Matters) के हज़ारों वर्ष की प्राकृतिक प्रक्रिया का आकस्मिक परिणाम है ।

एक मामूली-सी पुस्तक और मामूली-सी मशीन का हाल यह है कि वह अपने आप नहीं बन जाती, तो यह लम्बी-चौड़ी, विशाल और व्यापक कायनात, जिसका एक मामूली-सा हिस्सा हमारी यह ज़मीन है, किसी स्रष्टा के बिना कैसे पैदा हो सकती है ? बुद्धि-विवेक तथा सूझ-बूझ रखने वाला कोई व्यक्ति यह कैसे स्वीकार कर सकता है कि यह कायनात एक आकस्मिक घटना का परिणाम है जो अनायास ही घटित हो गयी है । इसका कोई बनाने वाला नहीं है या कुछ शक्तियां इसके विभिन्न हिस्सों को अस्तित्व में लायी हैं या फिर ज़िन्दगी का यह सारा हंगामा मात्र भ्रम और अनुमान का पैदा किया हुआ है इसकी वास्तविकता कुछ भी नहीं है, जबकि इन संकल्पनाओं के पीछे न कोई वैज्ञानिक आधार है, न कोई प्रमाण है और न सद्बुद्धि का ही इन संकल्पनाओं से कोई संबंध है ।

फिर जगत् के अध्ययन का तक़ाज़ा केवल इतना ही नहीं है कि आप स्रष्टा के अस्तित्व को स्वीकार करें, बल्कि विश्व की विशालता और व्यापकता, उसका आश्चर्यजनक अनुशासन, सामंजस्य, संतुलन और सुव्यवस्था, उसका बेमिसाल सौंदर्य और उसका उद्देश्य इस वास्तविकता की तरफ़ मार्गदर्शन करता है कि वह स्रष्टा ही नहीं, बल्कि सबसे बेहतरीन स्रष्टा है और अकेला वही स्रष्टा है और वही इस अथाह कायनात पर शासन कर रहा है । वह कायनात को पैदा करके इससे अलग नहीं हो गया, बल्कि वह हर पल इस पर शासन और इसका संचालन कर रहा है और कभी इससे बेसुध और लापरवाह नहीं हुआ है । थकान, सुस्ती, ऊंघ, नींद और लापरवाही जैसी कमज़ोरियों से वह बिल्कुल मुक्त और पाक है । वह बहुत ही तत्वदर्शी और ज्ञानवान है, उसका कोई कार्य तत्वदर्शिता और हिक्मत से ख़ाली नहीं है । कायनात की रचना, उसका संचालन, प्रबंध स्रष्ट जीवों के पालन-पोषण और शासन-व्यवस्था में कोई दूसरा उसका साझीदार नहीं, वह अपनी हस्ती और गुणों में अकेला और बेमिसाल है । वही सारे सर्वोच्च गुणों का मालिक है, ये गुण न किसी दूसरी हस्ती में हो सकते हैं और न कोई दूसरी हस्ती इन सर्वोच्च गुणों में ख़ुदा की साझीदार है और न ख़ुदा के अधिकार, सत्ता और इस विशाल कायनात के संचालन में किसी दूसरे का कण भर भी किसी तरह का दख़ल है। विशुद्ध एकेश्वरवाद की यह अवधारणा एक ऐसी स्पष्ट वास्तविकता है, जो कायनात के कण-कण से प्रकट हो रही है । इन्सान अगर साफ़ दिल के साथ खुली आंखों से कायनात का निरीक्षण, अध्ययन और अवलोकन करे तो वह अवश्य ही इस सच्चाई को पा लेगा ।

क़ुरआन ज्योति

(पृष्ठ 5 का शेष)

11. यहां 'सब्र' के एक और अर्थ पर प्रकाश पड़ता है । सब्र की विशेषता उस छिछोरेपन का विलोम है जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है । सब्र करने वाला वह व्यक्ति है जो समय के बदलते हुए हालात में अपनी सोच के संतुलन को बाक़ी रखे । समय की हर चाल से प्रभावित होकर अपने स्वभाव का रंग बदलता न चला जाए, बल्कि एक समुचित और सही रवैये पर हर हाल में क़ायम रहे । अगर कभी परिस्थितियां अनुकूल हों और वह धन, शक्ति और प्रसिद्धि की ऊंचाइयों पर चढ़ा चला जा रहा हो तो बड़ाई के नशे में मस्त होकर बहकने न लगे और अगर किसी दूसरे समय विपत्तियों और विपदाओं की चक्की उसे पीसे डाल रही हो तो अपने मानवीय तत्व को उसमें नष्ट न कर दे । अल्लाह की ओर से परीक्षा, चाहे सम्पन्नता के रूप में आये या विपत्ति के रूप में, दोनों दशाओं में उसकी नम्रता और सहनशीलता अपने हाल पर क़ायम रहे और उसका समाईपात्र किसी चीज़ की भी छोटी या बड़ी मात्रा से छलक न पड़े ।

12. अर्थात अल्लाह ऐसे लोगों के क़ुसूर माफ़ भी करता है और उनकी भलाइयों पर बदला भी देता है ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की विशिष्टताएं

❖ मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) दूसरे नबियों की तरह ही ख़ुदा के भेजे हुए नबी थे, किन्तु कुछ विशिष्टताएं आपको ईश्वर ने ऐसी प्रदान की थीं जो किसी और नबी को प्रदान नहीं कीं। उनमें से कुछ विशिष्टताओं का उल्लेख हम यहां करना चाहेंगे।

सम्पूर्ण संसार के लिए

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) सम्पूर्ण संसार के लिए नबी बनाकर भेजे गये थे। आपकी पैग़म्बरी केवल अरब जाति तक सीमित नहीं है, बल्कि सारे संसार की क़ौमों के आप पैग़म्बर हैं। क़ुरआन में स्पष्ट शब्दों में कहा गया है–

"बड़ी बरकत वाला है वह (ईश्वर), जिसने यह फ़ुरक़ान (सत्य-असत्य में अंतर स्पष्ट करने वाला क़ुरआन) अपने बंदे पर अवतरित किया ताकि वह संपूर्ण संसार के लिए सावधान करने वाला हो।" (क़ुरआन, 25:1)

और कहा–"वह (क़ुरआन) तो सारे संसार के लिए बस एक याददिहानी है।" (क़ुरआन, 81:27)

दूसरी जगह कहा गया है–"कह दो, ऐ लोगो ! मैं तुम सबकी ओर उस अल्लाह का रसूल हूं जो आकाशों और धरती के राज्यों का स्वामी है।" (क़ुरआन, 7:158)

एक और स्थान पर कहा गया है–

"(ऐ नबी !) हमने तुम्हें मानवों के लिए रसूल बनाकर भेजा है और (इस पर) अल्लाह का गवाह होना काफ़ी है।" (क़ुरआन, 4:79)

एक जगह और कहा गया है–

"(ऐ नबी !) हमने तो तुम्हें सारे ही मनुष्यों के लिए शुभ-सूचना देने वाला और सावधान करने वाला बनाकर भेजा, किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं।" (क़ुरआन, 34:28)

एक अन्य स्थान पर कहा गया–

"(ऐ मुहम्मद !) हमने तुम्हें सम्पूर्ण संसार के लिए रहमत बनाकर भेजा है।" (क़ुरआन, 21:107)

क़ुरआन के अतिरिक्त स्वयं हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने भी कहा है कि उन्हें समस्त मानवों के लिए नबी बनाकर भेजा गया है। आपका कथन है–

"मैं काले और गोरे सबकी ओर नबी बनाकर भेजा गया हूं।" (मुसनद अहमद)

आप (सल्ल॰) ने कहा–"पहले एक नबी विशेष रूप से अपनी ही क़ौम की तरफ़ भेजा जाता था, किन्तु मैं समस्त मानव की तरफ़ भेजा गया हूं।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

जिस प्रकार सूरज की रोशनी सारी दुनिया के लिए काफ़ी होती है उसी तरह आपका मार्गदर्शन समस्त लोगों के लिए काफ़ी है। ईश्वर चाहता तो हर बस्ती के लिए अलग-अलग नबी भेज देता, लेकिन उसने चाहा कि जब सारा संसार एक हो गया है तो फिर सम्पूर्ण लोगों का नबी और मार्गदर्शक भी एक ही हो। यह चीज़ लोगों के मध्य एकता स्थापित करने के लिए भी सहायक सिद्ध होगी। क़ुरआन में भी कहा गया है–

"यदि हम चाहते तो हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते। (किन्तु हमने इसकी आवश्यकता नहीं समझी)।" (क़ुरआन, 25:51)

मानवता के लिए एक पूर्ण आदर्श

क़ुरआन में आया है, "निस्संदेह तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल (के चरित्र) में एक उत्तम आदर्श है, उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अन्तिम दिन की आशा रखता हो।" (क़ुरआन, 33:21)

इस आयत में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का जीवन मानव के लिए एक उत्तम आदर्श है। किन्तु यह आदर्श उन्हीं लोगों के लिए है जो अपने जीवन में सत्य मार्ग पर चलना चाहते हों और जो यह विश्वास रखते हों कि उन्हें एक दिन ईश्वर से मिलना है और वह सुखद घड़ी अवश्य आएगी जब ईश-मिलन की कामना पूरी होगी। फिर इसके साथ वे यह भी जानते हैं कि यह मिलन सुखकर उसी स्थिति में हो सकता है, जबकि ईश्वर उनसे प्रसन्न हो और जीवन में उन्होंने हर संभव उन बातों से बचने की कोशिश की हो जो ईश्वर को

पसन्द नहीं है और अपने जीवन में जिन्होंने ईश्वर के आदेशों का पालन किया हो तथा ईश्वर के निर्देशों और शिक्षाओं के अनुसार अपने व्यक्तित्व को बनाने और निखारने में प्रयत्नशील रहे हों ।

उत्तम आदर्श उसी को कहेंगे जो सुन्दर और दोषरहित हो, जो परिपूर्ण हो और उसमें किसी प्रकार की अपूर्णता का आभास न होता हो । नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का जीवन इस दृष्टि से उत्तम ही नहीं पूर्ण आदर्श है । जीवन का कोई भी पहलू हो उसके विषय में आपकी शिक्षाओं और आपके चरित्र में पूर्ण रूप से मार्गदर्शन मिलता है । इसके लिए एक शर्त अवश्य है कि आदमी समझदार और विवेकशील हो और वह जानता हो कि किसी के जीवन चरित्र से कैसे मार्गदर्शन प्राप्त किया जा सकता है ।

यह बात बड़ी नासमझी और विवेकहीनता की होगी कि कोई यह कहने लगे कि नबी (सल्ल०) मानवों के लिए उत्तम आदर्श तो अवश्य हैं किन्तु यह आदर्श पूर्ण आदर्श नहीं कहा जा सकता । क्योंकि आप (सल्ल०) एक विशेष काल और विशेष स्थिति में पैदा हुए थे । आप (सल्ल०) एक विशेष भाषा में बोलते थे और वह भाषा समस्त मनुष्यों की भाषा नहीं है । आप (सल्ल०) ने अपने पिता को नहीं देखा । केवल अपनी माता, अपने दादा और चचा को ही देखा था । लड़कियों के पिता तो आप अवश्य थे किन्तु आप (सल्ल०) का कोई बेटा जीवित नहीं रहा । आप (सल्ल०) पुरुष तो अवश्य थे किन्तु स्त्रियों के लिए आप (सल्ल०) एक आदर्श कैसे हो सकते हैं ? ये और इस तरह की बातें अत्यंत बचकाना और सतही हैं ।

नबी (सल्ल०) के पूर्ण और उत्तम आदर्श होने का अर्थ यह है कि हम जीवन के प्रत्येक मामले में आप (सल्ल०) से रहनुमाई हासिल कर सकते हैं, उसका संबंध व्यक्तिगत जीवन से हो या सामाजिक जीवन से; उसका संबंध आर्थिक व्यवस्था से हो या राजनीति से; विषय धारणाओं एवं विचारों का हो या भावनाओं और मानसिकता का या उस विषय का संबंध आध्यात्म या नैतिकता से हो । हर विषय और प्रत्येक मामले में हम आप (सल्ल०) से रहनुमाई हासिल कर सकते हैं । किसी भी विषय में हमें निराशा का सामना नहीं करना पड़ेगा । यह सही है कि आपकी भाषा अरबी थी और जो किताब आप (सल्ल०) पर अवतरित हुई उसकी भाषा भी अरबी थी । किन्तु अरबी भाषा कोई मृत भाषा नहीं है जिसे समझने वाले दुनिया में न पाये जाते हों, जिसके कारण लोगों के लिए यह जानना असंभव हो कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का संदेश क्या था और आप (सल्ल०) की शिक्षाएं क्या थीं ?

इसमें सन्देह नहीं कि आप (सल्ल०) का आगमन एक विशेष काल में हुआ था । किन्तु आप (सल्ल०) की शिक्षाएं वैश्विक और सार्वकालिक हैं । आप (सल्ल०) के वचनों और आप (सल्ल०) की लायी हुई किताब क़ुरआन में ऐसे नियमों और सिद्धांतों का उल्लेख हुआ है जिनके आधार पर प्रत्येक युग और प्रत्येक परिस्थिति में मनुष्य नवीन से नवीन और जटिल से जटिल समस्याओं को हल कर सकता है । इस्लामी इतिहास बताता है कि इस सिलसिले में आश्चर्यजनक रूप से इस्लाम ने उनका साथ दिया है जो उसके मार्गदर्शन में अपनी समस्याओं को हल करना चाहते थे ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि नबी (सल्ल०) मानो आज भी हमारे साथ हैं और हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं । यद्यपि आप (सल्ल०) के जीवनकाल और आज के युग में बड़ा अन्तर पाया जाता है । विभिन्न प्रकार की समस्याएं उभर कर सामने आयी हैं । सारी दुनिया आज एक गांव के सदृश हो गयी है और मनुष्य ब्रह्माण्ड में दूसरे ग्रहों पर अधिकार प्राप्त करने की ओर बढ़ रहा है । वास्तविकता यह है कि मौलिक समस्याएं हमेशा एक जैसी रही हैं और भविष्य में भी एक जैसी ही रहेंगी । केवल उनका बाह्य रूप बदल जाता है ।

नबी (सल्ल०) ने अपने पिता को नहीं देखा । किन्तु आप (सल्ल०) का जो व्यवहार अपने चचा और अन्य बड़े लोगों के साथ रहा है और आप (सल्ल०) ने अपनी दूध पिलाने वाली मां का जिस प्रकार आदर किया है क्या इससे हमें इसका ज्ञान प्राप्त नहीं होता कि हमारा अपने माता-पिता और बड़ों के साथ क्या व्यवहार होना चाहिए । फिर इस सिलसिले में मौखिक रूप से आप (सल्ल०) ने जो शिक्षाएं दी हैं और क़ुरआन में इस संबंध में जो आदेश पाये जाते हैं क्या वे हमारे लिए पर्याप्त नहीं हैं ? रही यह बात कि आप (सल्ल०) का कोई पुत्र जीवित नहीं रहा इसलिए इस विषय में पुत्र के साथ हमारा व्यवहार क्या हो और उसकी शिक्षा-दीक्षा का हमें कितना ध्यान रखना चाहिए ? इस सिलसिले में हम आप (सल्ल०) से कुछ नहीं सीख सकते । वास्तव में यह नासमझी और अत्यंत बचकाना बात है । आप (सल्ल०) का अपने मुंह बोले बेटे हज़रत ज़ैद के साथ जो

व्यवहार रहा है क्या उससे एक समझदार व्यक्ति यह नहीं सीख सकता कि बाप का अपने बेटे के साथ कैसा व्यवहार और संबंध होना चाहिए ।

यह बात कि आप (सल्ल॰) पुरुष होने के कारण स्त्रियों के लिए आदर्श नहीं हो सकते, अत्यंत हास्यस्पद है । आप एक आदर्श पिता के रूप में हमारे सामने आते हैं । आप (सल्ल॰) का जो व्यवहार अपनी धर्म-पत्नियों के साथ रहा है और जो शिक्षाएं आपने उन्हें दी हैं और फिर उससे हटकर स्त्री जाति के लिए जो कुछ आप (सल्ल॰) ने कहा है वह सब कुछ प्रामाणिक रूप में आज दुनिया के सामने है । जिसके अध्ययन से जहां यह मालूम होता है कि एक आदर्श पिता कैसा होता है वहीं पूर्णत: हमें इसका भी ज्ञान होता है कि आदर्श महिलाएं और पत्नियां कैसी होती हैं । आप (सल्ल॰) की शिक्षा और प्रशिक्षण से आप (सल्ल॰) की धर्म-पत्नियों ने आदर्श का रूप धारण कर लिया है । जिसकी पुष्टि कुरआन से भी होती है । कुरआन ने कहा है कि "ऐ नबी की स्त्रियो (अर्थात पत्नियो) ! तुम सामान्य औरतों की तरह नहीं हो । (अर्थात तुम्हारी हैसियत आदर्श स्त्रियों की है ।)" (कुरआन, 33:32)

सच्चाई यह है कि नबी (सल्ल॰) का जीवन उत्तम ही नहीं बल्कि पूर्ण आदर्श जीवन था । और हमें इसी दृष्टिकोण से आपका अध्ययन करना चाहिए । आप (सल्ल॰) का जीवन एक ऐसे सागर के सदृश है जिसका किनारा दिखायी नहीं देता । आप (सल्ल॰) के जीवन के गुणों और विशेषताओं का वर्णन करने के पश्चात भी ऐसा लगता है कि इस संबंध में अभी बहुत कुछ वर्णन करना शेष रह गया है ।

यह बात भी सामने रहनी चाहिए कि धर्म की मौलिक शिक्षाओं का स्त्री और पुरुष से समान रूप से संबंध है उदाहरणार्थ ईमान, ईशपरायणता, सुशीलता और सद्व्यवहार आदि से संबंधित शिक्षाएं स्त्री और पुरुष दोनों के लिए एक जैसी हैं और जीवन में आस्था और चरित्र को ही मौलिक महत्व प्राप्त है । नबी (सल्ल॰) ने कहा भी है कि मुझे केवल इसलिए पैग़म्बर बनाकर भेजा गया है कि मैं नैतिक सद्गुणों को उनकी पराकाष्ठा तक पहुंचा दूं । कुरआन से भी यह सिद्ध होता है कि वास्तव में स्त्री और पुरुष में देखने की चीज़ ईमान और अच्छे कर्म हैं । लिंग और सेक्स तो बहुत ऊपर की चीज़ है । वास्तविक मूल्य तो मनुष्य की आत्मा को प्राप्त है । ईमान और नैतिक स्वभाव का आत्मा से सीधा संबंध पाया जाता है । मानव जीवन में चारित्रिक गुणों को ही महत्व प्राप्त है । शर्त यह है कि उसकी कोई विश्वस्त भाव-भूमि भी हो । अतएव कुरआन में आया है–

"जिस किसी ने अच्छा कर्म किया, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, परन्तु हो वह मोमिन, तो ऐसे लोग जन्नत में प्रवेश करेंगे ।" (कुरआन, 40:40)

उपर्युक्त विवेचन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि स्त्रियों के मार्गदर्शन के लिए अलग से किसी स्त्री पैग़म्बर की आवश्यकता शेष नहीं रहती । जो पैग़म्बर पुरुषों के लिए मार्गदर्शक बनाकर भेजा गया है उसने स्त्रियों का भी मार्गदर्शन किया है ।

क़ियामत तक के लिए

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को क़ियामत तक के लिए नबी बनाकर भेजा गया है । आपकी नुबूवत किसी विशेष युग के लिए नहीं, बल्कि रहती दुनिया के लिए है । आपसे केवल आपके समकालीन ही नहीं, बल्कि क़ियामत तक के लोग लाभांवित होते रहेंगे । उन बदनसीबों की बात और है जो दिल की टेढ़ और पक्षपात, पूर्वाग्रह या किसी और नैतिक रोग के कारण आप (सल्ल॰) के मार्गदर्शन को स्वीकार न करें और सदैव के लिए ईश्वर की रहमत से वंचित होकर रह जाएं । कुरआन में है–

"(ईश्वर ने उम्मियों में से रसूल भेजा) जो उन दूसरे लोगों को भी ज्ञान और तत्वदर्शिता की शिक्षा दे जो अभी (नबी मुहम्मद सल्ल॰ के) अनुयायियों से मिले नहीं हैं । (बल्कि वे भविष्य में पैदा होंगे और आपके अनुयायियों में शामिल होंगे ।)" (कुरआन, 62:3)

इससे ज्ञात हुआ कि क़ियामत तक के सौभाग्यशाली लोग आप (सल्ल॰) की नुबूवत पर ईमान लाकर आपके मार्गदर्शन से लाभांवित होते रहेंगे । अगर आप (सल्ल॰) का मार्गदर्शन क़ियामत तक के लिए पर्याप्त न होता तो फिर नुबूवत का सिलसिला आप पर समाप्त न किया जाता ।

अंतिम नबी

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ईश्वर के अंतिम नबी हैं । आप (सल्ल॰) के बाद अब कोई नबी आने वाला नहीं है । आप (सल्ल॰) नुबूवत की शृंखला की अंतिम कड़ी हैं । कुरआन में है–

"मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं हैं, बल्कि वे अल्लाह के रसूल और नबियों के समापक हैं ।

अल्लाह को हर चीज़ का पूरा ज्ञान है ।''

(कुरआन, 33:40)

आप (सल्ल०) के बाद निरंतर ऐसी परिस्थितियां पैदा होती गयीं कि आपका संदेश संपूर्ण संसार में पहुंच रहा है । आप (सल्ल०) की नुबूवत के बाद अलग-अलग क़ौमों में नबियों को भेजने की ज़रूरत बाक़ी नहीं रही । फिर आप (सल्ल०) ने इस बात की भविष्यवाणी भी की है कि आप (सल्ल०) की शिक्षाएं और आपकी लायी हुई किताब (कुरआन) न केवल यह कि मौजूद रहेगी, बल्कि वह फेर-बदल से भी सुरक्षित रहेगी । ऐसे शासक और सुधारक निरंतर उठते रहेंगे जो जमाअत की व्यवस्था को संभालेंगे और जो ख़राबियां पैदा होंगी उन्हें दूर करते रहेंगे । आप (सल्ल०) ने कहा है–

''मेरे कई नाम हैं । मैं मुहम्मद हूं, और मैं अहमद हूं, और मैं माही (मिटाने वाला) हूं कि मेरे द्वारा ईश्वर कुफ़्र को मिटाएगा । और मैं हाशिर हूं, वह हाशिर जिसके बाद ही लोग हश्र (प्रलय-क्षेत्र) में एकत्र किये जाएंगे । और मैं आक़िब (पीछे आने वाला) हूं कि जिसके पश्चात् कोई नबी नहीं ।'' (बुख़ारी, मुस्लिम)

आपने कहा है–''मैं नबियों का समापक हूं । मेरे बाद कोई नबी नहीं ।'' (मुस्लिम)

''मैं ऐसे समय में भेजा गया हूं कि मैं और क़ियामत का दिन इन उंगलियों की तरह हैं (अर्थात बहुत ही क़रीब)।'' (बुख़ारी, मुस्लिम)

मतलब यह है कि अब क़ियामत तक किसी और नबी के आने की आवश्यकता या संभावना शेष नहीं ।

क़ुरआन में भी है–''निकट आ गया लोगों का हिसाब और वे हैं कि ग़फ़लत में पड़े कतराते जा रहे हैं । (अर्थात उन्हें हिसाब देने की कोई चिंता नहीं ।)''

(कुरआन, 21:1)

सुरक्षित जीवन-चरित्र

ईश्वर के अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन की विशिष्टता है कि आपके जीवन का प्रत्येक पहलू अत्यंत विस्तार के साथ सुरक्षित और ज्ञात है । आप (सल्ल०) का जीवन नुबूवत से पहले कैसा था ? आप (सल्ल०) पर ईश-प्रकाशना का अवतरण कब और कैसे हुआ ? आप (सल्ल०) ने लोगों को सत्य की ओर कैसे आमंत्रित किया ? विरोधियों और शत्रुओं का किस प्रकार आप (सल्ल०) को मुक़ाबला करना पड़ा ? आप (सल्ल०) ने अपने अनुयायियों को किस प्रकार शिक्षा दी और उनको प्रशिक्षित किया ? किन बातों का उन्हें आदेश दिया और किन बातों से उन्हें रोकते रहे ? आप (सल्ल०) किस तरह इबादत और ईश-वंदना करते थे ? ईश्वर का स्मरण किस प्रकार निरंतर बना रहता था ? ईश्वर से आप (सल्ल०) कितना डरते थे और परलोक की आपको कितनी चिंता रहती थी ? लोग सीधे मार्ग पर आ जाएं और वे ईश्वर के यहां दंडित होने से बच सकें, इसके लिए आप (सल्ल०) कितना चिंतित रहते थे ?

ईश्वर का जो आप (सल्ल०) पर विशेष अनुग्रह था, उसका आप (सल्ल०) कितना एहसास रखते थे ? ईश्वर के आगे आप (सल्ल०) किस प्रकार आभार प्रकट करते थे ? दिन के अतिरिक्त आपकी रातें कैसी होती थीं ? ऐसे वाक्य जो ईश-प्रशंसा और उसकी महानता को व्यक्त करने के लिए आप (सल्ल०) के मुख से निकले हैं, क्या वे ऐसे वाक्य हैं जो सदैव के लिए महावाक्य सिद्ध हो सकें ? आप (सल्ल०) का स्वभाव कैसा था ?

आप (सल्ल०) को यदि युद्ध करना पड़ा तो लड़ाइयों में किन नियमों को आपने अपने समक्ष रखा ? आपने यदि संधि की तो किस प्रकार उसका निर्वाह किया ? आपने यदि हुकूमत की तो आपकी शासन- प्रणाली कैसी रही है ? मुक़दमों का फ़ैसला आप (सल्ल०) किस प्रकार करते थे ? लेन-देन और क्रय-विक्रय के मामलों में किन बातों का आप (सल्ल०) ध्यान रखते थे ?

सारांश यह कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के विषय में आप (सल्ल०) के आदेश और मार्गदर्शन विस्तृत रूप से सुरक्षित हैं । ईश्वर की ओर से जो वाणी (कुरआन) आपने प्रस्तुत की, वह अपने उन्हीं मूल शब्दों में मौजूद है जिन शब्दों में वह अवतरित हुई थी और उसी क्रम के साथ मौजूद है जिस क्रम के साथ आप (सल्ल०) ने ईश्वरीय संकेत से प्रस्तुत की थी । उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है । मुस्लिम विद्वानों ने कुरआन और आप (सल्ल०) के कथनों और आचरण पर जो शोधात्मक और व्याख्यात्मक कार्य किया है वह असाधारण है, इसकी मिसाल दुनिया की कोई क़ौम पेश न कर सकी।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाओं की प्रामाणिकता

एक विशिष्टता अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

को यह प्राप्त है कि न केवल आपका जीवन-चरित्र, आपके आदेश और शिक्षाएं अत्यंत विस्तार के साथ मौजूद हैं, बल्कि आपका संदेश और आपकी शिक्षाएं आदि हम तक प्रामाणिक माध्यम से पहुंची हैं । जिन व्यक्तियों ने आपकी जीवनचर्या और आपकी शिक्षाओं को एक-दूसरे तक पहुंचाने का जो महान कार्य किया है उनकी संख्या एक लाख से कम नहीं है ।

कुछ आदेश तो नबी (सल्ल०) ने स्वयं लिखाकर लोगों को दिये थे या लोगों के पास भेजे थे । आपके सहाबा (सहकारों) में कम से कम छह व्यक्ति ऐसे हैं जिन्होंने आपके कथनों को लिपिबद्ध करके आपको सुना भी दिया था, ताकि उनके प्रामाणिक होने में कोई संदेह न रहे । यह सारा ज्ञान-भंडार बाद की उन योग्य विभूतियों तक पहुंचा जिन्होंने हदीसों (आपके कथनों आदि) को एकत्र करके उनको ग्रंथ-रूप देने का महत्वपूर्ण और असाधारण कार्य संपन्न किया ।

फिर एक विशेष बात यह है कि इस सिलसिले में आरंभकाल से ही जो प्रक्रिया अपनायी गयी वह वैज्ञानिकी प्रक्रिया (Scientific Procedure) थी । वह यह कि कोई आदमी जिस व्यक्ति के माध्यम से नबी (सल्ल०) के बारे में कोई बात कहता तो उसे यह भी स्पष्ट करना पड़ता कि नबी (सल्ल०) की वह बात किस व्यक्ति के माध्यम से उस तक पहुंची और उसके और नबी (सल्ल०) के मध्य इसके उल्लेखकर्ता कौन-कौन हैं और उन उल्लेखकर्ताओं पर किस हद तक विश्वास किया जा सकता है ? इस तरह उल्लेखों (रिवायतों) की शृंखलाओं को नबी (सल्ल०) तक देखा जाता रहा है । इसका उद्देश्य यह था कि इस ओर से संतुष्टि प्राप्त हो सके कि नबी (सल्ल०) से संबंधित, उल्लेखकर्ता जो बात बयान कर रहा है सत्य और ऑथैंटिक है या नहीं । यदि बीच में कहीं कोई एक कड़ी भी विलुप्त होती, तो फिर रिवायत संदिग्ध हो जाती । हदीस के उल्लेखकर्ताओं में से यदि कोई उल्लेखकर्ता किसी कारण से भरोसे के योग्य न होता तो फिर ऐसी हदीस को अस्वीकृत कर घोषित कर दिया जाता । हदीस के रावियों अर्थात उल्लेखकर्ताओं के जीवन चरित्र पर बहुत-से विस्तृत ग्रंथ लिखे गये, जिनमें दिखाया गया कि कोई रावी जिससे रिवायत कर रहा है, उससे कभी मिला भी है या नहीं ? उसका चरित्र कैसा है ? उसकी स्मरण-शक्ति का क्या हाल है ? इस प्रकार यह भी एक चमत्कार है कि एक नबी के वृत्तांत और उसके कथनों को प्रामाणिकता की दृष्टि से देखने के लिए हज़ारों व्यक्तियों के जीवन-चरित्र को लिपिबद्ध करके 'अस्माउर-रिजाल"[1] के ग्रंथों में सदैव के लिए सुरक्षित कर दिया गया ।

संसार के अन्य धर्म-गुरुओं के विषय में जब हम अध्ययन करते हैं तो मामला नितांत इसके विपरीत दिखायी देता है । हज़रत मूसा (अलैहि०) की न अस्ली तौरात आज पायी जाती है और न अन्य नबियों की किताबें आज प्रामाणिक अर्थात अपने मूल रूप में पायी जाती हैं । बाइबल में जो पुस्तकें शामिल हैं उनमें से किसी एक पुस्तक की भी सनद उन नबियों तक नहीं पहुंचती, जिन नबियों के नाम से वे किताबें प्रसिद्ध हैं । जो इंजीलें आज मिलती हैं उनमें हज़रत ईसा मसीह के जीवन-वृत्तांत और इंजील की आयतों को ऐसा गड्ड-मड्ड कर दिया गया है कि उनमें अंतर कर पाना आसान नहीं रहा । फिर इंजीलें लिखी नहीं गयी थीं, बल्कि उनका प्रचार मौखिक रूप से हुआ था । लिपिबद्ध करने का कार्य उन ईसाइयों के द्वारा संपन्न हुआ जिनकी

---

1. अस्माउर-रिजाल वह शास्त्र है जिसमें उन सभी व्यक्तियों का सविस्तार वर्णन किया गया है जिनके माध्यम से हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के कथन (हदीस) आदि हम तक पहुंचते हैं । हदीस के उल्लेखकर्ताओं की कई शृंखलाएं हैं, जिनका सिरा हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से ज़रूर मिलता है । बीच में यदि कोई कड़ी छूट गयी है तो फिर इस सिलसिले से पहुंची हुई हदीस संदिग्ध हो जाती है । इसी प्रकार उल्लेखकर्ताओं में से यदि कोई व्यक्ति किसी पहलू से विश्वास करने योग्य नहीं रहता तो इस दशा में भी हदीस संदिग्ध समझी जाएगी । पक्की और विश्वसनीय हदीस वही मानी जाती है जो उल्लेखकर्ताओं की ऐसी शृंखला (Chain) के द्वारा हम तक पहुंची हो जिसमें न तो शृंखला की कोई कड़ी छूटी हो और न इस सिलसिले के उल्लेखकर्ताओं में से किसी के चरित्र में कोई दोष पाया जाता हो ।

असमाउर-रिजाल में हदीस के उल्लेखकर्ताओं में से प्रत्येक व्यक्ति के बारे में विस्तृत जानकारी जुटाई गयी है । इसमें जन्म और देहांत तिथि, स्मरण शक्ति, सच्चाई और धार्मिकता आदि के विषय में सविस्तार वर्णन मिलता है ।

भाषा यूनानी थी । जबकि हज़रत मसीह और उनके अनुयायियों की भाषा सुर्यानी (Syriac) या आरामी थी । बाइबल के नये नियम (New Testaments) की किताबों की हज़ारों प्रतियां जो यूनानी भाषा में लिखी गयी थीं उनमें से कोई भी चौथी शताब्दी ईसवी से पहले की नहीं पायी जाती। लगभग 70 इंजीलें लिखी गयी थीं जिनमें से केवल चार को स्वीकृति प्रदान की गयी, और स्वीकार करने और अस्वीकार करने का कोई उचित कारण नहीं बताया गया ।

लगभग यही दशा अन्य धर्मगुरुओं के वृत्तांत और शिक्षाओं की भी है । यदि कोई व्यक्ति उनकी प्रामाणिकता की ओर से संतुष्ट होना चाहे तो असफलता के सिवा उसके हिस्से में और कुछ नहीं आ सकता ।

अन्तिम नबी (सल्ल०) के समुदाय की विशिष्टता

नबी (सल्ल०) को एक विशेषता यह भी प्राप्त है कि ऐसा कभी नहीं होगा कि कुछ अन्य क़ौमों की तरह आपका समुदाय विनष्ट हो जाए और उसका नामोनिशान बाक़ी न रहे । और यह भी न होगा कि आप (सल्ल०) का पूरे का पूरा समुदाय पथ-भ्रष्ट हो जाए अर्थात कतिपय अन्य क़ौमों की तरह यह समुदाय ज़िंदा तो रहे किन्तु सन्मार्ग से हट जाए और सत्य के स्थान पर उसका नाता असत्य से हो जाए । आप (सल्ल०) ने क़हा–

"मेरे समुदाय में से एक गरोह सदैव क़ायम और प्रभावी रहेगा ।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

आपने यह भी कहा है कि–

"ईश्वर ने तुम्हें तीन चीज़ों से अमान (सुरक्षा) प्रदान की है । यह कि तुम्हारा नबी तुम पर बद्दुआ करे कि तुम सब विनष्ट हो जाओ, और यह कि मिथ्यावादी सत्यवादियों पर प्रभावी हों, और यह कि तुम सबके सब पथ-भ्रष्ट हो जाओ ।" (अबू-दाऊद)

इससे ज्ञात हुआ कि धर्म-विरोधी ज्ञान और तर्क की दृष्टि से कभी भी सत्य के अनुयायियों को परास्त नहीं कर सकते और यदि धर्म विरोधी सत्य के विरुद्ध युद्ध करें तो परिणामतः विजय सत्य की होगी, किन्तु शर्त यह है कि सत्य के अनुयायियों में ईमान की पूरी शक्ति हो और वे सत्य ही के लिए ईश-मार्ग में लड़ रहे हों, और उनमें एकता हो और ईश्वर ने जो साधन प्रदान किये हों उनका पूरा-पूरा इस्तेमाल कर रहे हों ।

आप (सल्ल०) के इस कथन से यह भी मालूम हुआ कि आपका समस्त समुदाय कभी भी पथ-भ्रष्ट नहीं होगा। कठिन-से-कठिन समय में भी आप (सल्ल०) के समुदाय का कोई-न-कोई गरोह सत्य पर सुदृढ़ रहेगा ।

एक भविष्यवाणी

आपको एक विशेषता यह प्रदान हुई है कि प्रायद्वीप अरब को आपकी बरकत से बहुदेववाद और मूर्तिपूजा से सदैव के लिए पाक कर दिया गया । पारस्परिक असहयोग, गुटबंदी आदि की ख़राबियां तो पैदा हो सकती हैं, किन्तु शैतान इससे सदैव के लिए निराश हो गया कि यहां फिर कभी बहुदेववाद और मूर्तिपूजा अपनी जड़ें जमा सकेगी ।

स्पष्ट धर्म और स्पष्ट मार्ग

आपके द्वारा सत्य-धर्म को अंतिम और पूर्ण रूप देकर संसार के समक्ष पेश कर दिया गया । इस धर्म में कोई भी चीज़ ऐसी नहीं पायी जाती जिसके पीछे कोई गहरा रहस्य न पाया जाता हो । इसमें उन तमाम चीज़ों को, जो ईश्वर और उसके बंदों के बीच आड़ बनी हुई थीं, हटा दिया गया । इसमें न कोई पुरोहित रहा और न ऐसा कोई तथाकथित पावन वर्ग रहा कि जिसकी सहायता के बिना ईश्वर का सामीप्य प्राप्त न हो सकता हो ।

आप (सल्ल०) का लाया हुआ धर्म- विधान उन ज्ञान-युक्त और साहसी व्यक्तियों के लिए है जो कुरआन और नबी (सल्ल०) के तरीक़े को मज़बूती से थामे रहें और जो बुद्धि, विवेक और समझ को तिलांजलि नहीं देते, बल्कि उनसे काम लेते हों और मामलों और महत्वपूर्ण विषयों में पारस्परिक चिंतन और परामर्श से काम लेते हों, संगठन के महत्व को समझते और उसकी सुरक्षा के प्रति सतर्क रहते हों ।

सत्य का स्पष्ट मार्ग दर्शाने और सत्य-धर्म को स्पष्ट रूप देने और उसकी सुरक्षा के लिए आप पर जो ग्रंथ ईश्वर की ओर से अवतरित हुआ वह कुरआन है, जो आज भी अक्षरशः सुरक्षित है और भविष्य में भी सुरक्षित रहेगा । इसकी ईश्वर ने अपने इस ग्रंथ में सूचना भी दी है (कुरआन, सूरा-15, आयत-9) कुरआन की अपनी महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं जिनमें से कुछ विशेषताओं का उल्लेख अगले अध्याय में किया जा रहा है ।

हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र अल-दौसी (रज़ि॰)

❖ अब्दुर्रहमान राफ़त पाशा

हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र अल-दौसी (रज़ि॰) ज़माना-ए-जाहिलियत में दौस नामी क़बीले के सरदार और अरब के इज़्ज़तदार एवं प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक थे । वे ग़रीबों को खाना खिलाते एवं पीड़ितों को आश्रय देते थे । उनका दरवाज़ा दुखियों के लिए हमेशा खुला रहता था । इनके अलावा वे जाने-माने कवि भी थे । वे अपनी बातों से लोगों का मन मोह लेने में माहिर थे ।

हज़रत तुफ़ैल (रज़ि॰) उस समय तिहामा से मक्का आये जब नबी करीम (सल्ल॰) और मक्का के काफ़िरों के बीच आस्था की जंग शुरू हो चुकी थी । एक ओर रसूलुल्लाह (सल्ल॰) लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुला रहे थे और आप (सल्ल॰) का हाल यह था कि ईमान और हक़ के सिवा कोई दूसरा हथियार आप (सल्ल॰) के पास नहीं था । दूसरी ओर कुरैश के लोग हर प्रकार से आप (सल्ल॰) की दावत को क़बूल करने से लोगों को रोक रहे थे । हज़रत तुफ़ैल (रज़ि॰) आस्था की इस जंग में अनजाने तौर पर दाख़िल हो गये । उन्होंने मक्का की यात्रा इस उद्देश्य से नहीं की थी और न ही उससे पहले मुहम्मद (सल्ल॰) और कुरैश के बीच चल रहे घमासान की जानकारी उनको थी । वे कैसे इस जंग में न चाहते हुए भी शामिल हो गये इसकी कहानी बड़ी दिलचस्प है । आइए उस मज़ेदार कहानी को हम भी सुनें ।

हज़रत तुफ़ैल (रज़ि॰) स्वयं कहते हैं : मेरे मक्का पहुंचने पर कुरैश के बड़े-बड़े सरदारों ने मेरा भव्य स्वागत किया और मेरे ठहरने की शानदार व्यवस्था की । फिर कुरैश के सरदार मेरे पास जमा हुए और कहा : तुफ़ैल ! तुम ऐसी अवस्था में मक्का आये हो जब उस आदमी ने जो स्वयं को नबी कहता है, हमारे सारे मामले को बिगाड़ कर रख दिया है । उसने हमारी क़ौम को दो फाड़ कर दिया है । हमें भय इस बात का है कि तुम्हारे और तुम्हारी क़ौम के साथ वही आफ़त न पेश आ जाए जिससे हम लोग जूझ रहे हैं । इसलिए तुम उस व्यक्ति से न बात करो और न ही उसकी किसी बात पर कान धरो । क्योंकि उसकी बातों में ऐसा जादू है जो बाप-बेटे, भाई-भाई और पति-पत्नी के बीच जुदाई डाल देता है ।

हज़रत तुफ़ैल (रज़ि॰) कहते हैं कि वे मेरे सामने इसी प्रकार की बातें करते रहे और मुझे मुहम्मद (सल्ल॰) के अजीब कामों की दास्तान सुनाते रहे । यहां तक कि मैंने फ़ैसला कर लिया कि मैं उसके क़रीब भी नहीं जाऊंगा, न उससे बात करूंगा और मुहम्मद (सल्ल॰) की कोई बात मेरे कानों तक न पहुंच जाए, अपने कानों में रूई ठूंस ली । लेकिन स्वभाग्य से मैंने काबा में प्रवेश करते ही देखा कि आप (सल्ल॰) काबे के पास ऐसी नमाज़ पढ़ रहे हैं जो हमारी नमाज़ से बिल्कुल भिन्न थी । उस दृश्य ने मानो मुझे जकड़ लिया हो । मैं अनायास ही आप (सल्ल॰) के क़रीब आ गया । अल्लाह ने मुझे आप (सल्ल॰) की कुछ बातें सुना ही दीं । मुझे वे बातें बड़ी मधुर लगीं और मैंने अपने दिल में कहा : तुफ़ैल तेरा बुरा हो, तू भी तो आख़िर मेधावी शायर है, तुम पर अच्छा-बुरा छिपा हुआ नहीं है । आख़िर उस आदमी की बात सुन लेने में क्या बुराई है ? अगर उसकी बात अच्छी होगी तो क़बूल कर लेना, नहीं तो छोड़ देना ।

हज़रत तुफ़ैल (रज़ि॰) कहते हैं कि यह सोचकर मैं वहीं ठहरा रहा, यहां तक कि जब आप (सल्ल॰) अपने घर को चले तो मैं आप (सल्ल॰) के पीछे हो लिया । आप (सल्ल॰) जब अपने घर पहुंच गये तो मैंने उन्हें संबोधित करते हुए कहा : ऐ मुहम्मद (सल्ल॰), आपके समुदाय के लोगों ने मेरे सामने बहुत कुछ कहा है, वे तो मुझे इतना डराते रहे कि मैंने आपकी बात न सुनने के उद्देश्य से अपने कानों में रूई ठूंस ली । परन्तु अल्लाह ने चाहा कि मैं आपकी बात सुन लूं । मुझे आपकी बात अच्छी लगी । आप अपनी बात मेरे सामने खुलकर रखिये ।

आप (सल्ल॰) ने अपनी दावत मेरे सामने पेश करते हुए सूरा अख़लास और सूरा फ़लक़ की तिलावत फ़रमाई । क़सम अल्लाह की, उससे बेहतर बात मैंने कभी नहीं सुनी

थी और न कभी आप (सल्ल॰) के मामले से ज़्यादा अच्छा मामला देखा था । मैंने तनिक भी देर नहीं लगायी । आपकी ओर हाथ बढ़ाया और ला-इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह पढ़कर मुसलमान हो गया ।

हज़रत तुफ़ैल (रज़ि॰) कहते हैं कि फिर मैं मक्का में कुछ दिन ठहर कर इस्लाम की शिक्षाएं हासिल करता रहा और जितनी बन पड़ी क़ुरआन की सूरतें याद करता रहा । उसके बाद जब मैंने अपने वतन लौटने का इरादा किया तो आप (सल्ल॰) से कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), मैं अपनी क़ौम का प्रभावी व्यक्ति हूं । अब मैं अपनी क़ौम में जाकर लोगों को इस्लाम की दावत देना चाहता हूं । आप (सल्ल॰) अल्लाह से दुआ कर दीजिये कि वह मुझे कोई ऐसी निशानी प्रदान कर दे जो मेरी दावत की मददगार बन जाए । आप (सल्ल॰) ने मेरे लिए दुआ फ़रमा दी कि, ''ऐ अल्लाह तू उसे कोई निशानी प्रदान कर दे ।''

यह दुआ लेकर मैं अपने वतन की तरफ़ चल पड़ा । जब मैं अपनी क़ौम की बस्ती के क़रीब पहुंचा तो मेरी दोनों आंखों के बीच चिराग़ की तरह एक नूर जगमगाने लगा । यह देखकर मैंने कहा, ऐ अल्लाह ! तू इस नूर को मेरे चेहरे से हटाकर कहीं और कर दे, मुझे डर है कि मेरी क़ौम के लोग यह कहेंगे कि मुझे उनका धर्म त्याग देने की सज़ा मिली है । अल्लाह की कृपा से वह नूर मेरे कोड़े के सिरे में चला गया । लोग उस नूर को मेरे कोड़े के सिरे में लटके हुए चिराग़ की तरह देखने लगे । जब मैं घर पहुंचा तो मेरे बूढ़े पिता दौड़ते हुए मुझ से मिलने आये, मैंने कहा पिताजी मुझ से दूर रहिये ।

उन्होंने कहा : बेटे, ऐसा क्यों ? मैंने कहा : मैं इस्लाम क़बूल कर चुका हूं । उन्होंने उत्तर दिया : जो तेरा धर्म वही मेरा भी धर्म । मैंने कहा : तो फिर जाइये और नहा-धोकर पाक कपड़े पहन कर मेरे पास आइये । मैंने उनके सामने इस्लाम को पेश किया और उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया ।

उसके बाद मेरी पत्नी आयी, मैंने उससे कहा : मुझसे दूर रहो क्योंकि अब न मैं तुम्हारा हूं और न तुम मेरी हो । उसने कहा : तुम्हें क्या हो गया है ? तुम ऐसा क्यों कह रहे हो ? मैंने कहा : इस्लाम ने मेरे और तुम्हारे बीच जुदाई की दीवार खड़ी कर दी है, मैंने मुहम्मद (सल्ल॰) की पैरवी क़बूल कर ली है । उसने कहा, ''जो तुम्हारा धर्म वही मेरा भी धर्म ।'' मैंने कहा : तो फिर जाओ और झटसे जिश्शरा (एक मूर्ति का नाम जिसकी दौस क़बीला के लोग पूजा करते थे, वह उसी जगह पर रखी हुई थी जहां से पहाड़ का पानी बहकर नीचे आता था।) के पानी से स्नान करके पाक होकर मेरे पास आओ । उसने कहा : मेरे माता-पिता तुम पर क़ुरबान, कहीं जिश्शरा के पास नहाना हम दोनों के लिए बुरा हो'' ''जाओ और लोगों की निगाहों से दूर होकर नहाओ, मैं इसकी ज़मानत लेता हूं कि वह गूंगा बुत तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर पाएगा । यह सुनकर वह गयी और स्नान करके आयी । मैंने उसके सामने इस्लाम पेश किया और वह इस्लाम ले आयी । फिर मैंने दौस क़बीला के तमाम लोगों को इस्लाम की दावत दी, लेकिन अबू हुरैरा (रज़ि॰) के अलावा सभी ने नकार दिया ।

हज़रत तुफ़ैल (रज़ि॰) कहते हैं कि मैं हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) को साथ लेकर नबी करीम (सल्ल॰) की सेवा में उपस्थित हुआ । आप (सल्ल॰) ने पूछा, तुफ़ैल क्या ख़बर लाए हो ?

मैंने कहा : अपने पीछे ऐसा दिल जिन पर ढक्कन पड़े हुए हैं और कुफ़्र को छोड़ आया हूं । दौस के लोगों पर कुफ़्र और पापों का अंधकार छाया हुआ है । यह सुनकर रसूलुल्लाह (सल्ल॰) खड़े हुए, वुज़ू किया, नमाज़ पढ़ी और अपने हाथ दुआ के लिए आसमान की ओर उठा दिये ।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) कहते हैं कि यह देखकर मैं डर गया कि कहीं आप (सल्ल॰) मेरी क़ौम के लिए बद्दुआ न कर दें और सारे लोग हलाक न हो जाएं, लेकिन रसूलुल्लाह (सल्ल॰) ने उनके लिए दुआ करते हुए तीन बार फ़रमाया : ऐ अल्लाह ! तू दौस क़बीले के लोगों को हिदायत दे । उसके बाद आप (सल्ल॰) तुफ़ैल से मुख़ातिब होकर कहने लगे । अपनी क़ौम के पास जाओ । उनके साथ नर्मी से पेश आओ । उन्हें इस्लाम की दावत दो ।

हज़रत तुफ़ैल (रज़ि॰) कहते हैं कि उसके बाद मैं लगातार दौस के लोगों को इस्लाम की दावत देता रहा । इस बीच रसूलुल्लाह (सल्ल॰) हिजरत करके मदीना चले गये, बद्र, उहुद और ख़ंदक़ की जंग हुई । उसके बाद मैं दौस क़बीला के अस्सी परिवार के साथ आप (सल्ल॰) की सेवा में हाज़िर हुआ । वे इस्लाम क़बूल कर चुके थे । यह देखकर रसूलुल्लाह (सल्ल॰) बहुत खुश हुए और दूसरे मुसलमानों के साथ ख़ैबर के ग़नीमत के माल में हमारा

हिस्सा भी लगाया । हमने अनुरोध किया : ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! हमें अपने हर युद्ध में मैमना (फ़ौज की दाहनी पलटन) में रहने की अनुमति प्रदान कीजिए तथा हमारा फ़ौजी बोल 'मब्रूर' मुक़र्रर कर दीजिए ।

हज़रत तुफ़ैल (रज़ि॰) कहते हैं कि उसके बाद मैं अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के साथ हमेशा रहा । यहां तक कि अल्लाह की कृपा से मक्का विजय हुआ । जिस दिन मक्का विजय हुआ उस दिन मैंने अम्र बिन हम्हमा के बुत ज़ुल कफ़ैन को जला देने की अनुमति अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से चाही । आपने अनुमति दे दी तो मैं अपनी क़ौम के कुछ लोगों के साथ उस बुत की तरफ़ चला । जब हमने वहां पहुंच कर बुत को जलाने की तैयारी कर ली तो चारों तरफ़ औरतों, मर्दों और बच्चों की भीड़ जमा हो गयी । वे सब यह सोच रहे थे कि अगर हमने ज़ुल कफ़ैन को जलाया तो हम किसी न किसी मुसीबत में ज़रूर फंस जाएंगे । लेकिन भरे मजमे के सामने हज़रत तुफ़ैल (रज़ि॰) बुत की तरफ़ बढ़े और यह कहते हुए उसके सीने में आग लगा दी कि ऐ ज़ुल कफ़ैन ! हम तुम्हारे बन्दे कदापि नहीं ।

बुत के जलकर राख होते ही दौस क़बीला के लोगों के दिलों का बचा-खुचा शिर्क भी जलकर राख हो गया और शेष सारे लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया ।

उसके बाद हज़रत तुफ़ैल (रज़ि॰) रसूलुल्लाह (सल्ल॰) के साथ ही रहे । जब आप (सल्ल॰) अल्लाह को प्यारे हो गये और हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) ने ख़िलाफ़त की बागडोर संभाली तो हज़रत तुफ़ैल (रज़ि॰) ने अपने आपको, अपनी तलवार को और अपने पुत्र को रसूलुल्लाह (सल्ल॰) के ख़लीफ़ा के आज्ञापालन में न्योछावर कर दिया । जब इर्तिदाद की वबा फूट पड़ी तो हज़रत तुफ़ैल (रज़ि॰) अपने पुत्र अम्र (रज़ि॰) के साथ उसमें शामिल हुए जो मुसैलिमा कज़्ज़ाब से जंग करने के लिए भेजी गयी थी ।

हज़रत तुफ़ैल (रज़ि॰) ने यमामा जाते हुए एक सपना देखा । सपना यह था कि उनका सिर मूंड दिया गया है । उनके मुंह से एक पंछि निकला और उड़ गया । एक औरत ने उन्हें अपने पेट में डाल लिया और उनके बेटे अम्र (रज़ि॰) ने उनसे कुछ मांगा, लेकिन बाप-बेटे के बीच एक दीवार हायल हो गयी । हज़रत तुफ़ैल (रज़ि॰) ने अपने साथियों से उस सपने की ताबीर पूछी तो कहा गया कि ख़ैर की उम्मीद है । यह सुनकर हज़रत तुफ़ैल (रज़ि॰) ने कहा कि जहां तक मैं समझता हूं, मेरे इस सपने की ताबीर यह है : मेरे सिर के मूंड दिये जाने का मतलब है कि उसे काट दिया जाएगा । मुंह से जो पंछि निकला उससे मुराद मेरी आत्मा है । उस औरत से मुराद जिसने मुझे अपने पेट में डाल लिया वह ज़मीन है, जिसमें मुझे दफ़नाया जाएगा । मुझे उम्मीद है कि मैं वीरगति (शहादत) प्राप्त करूंगा । जहां तक मेरे बेटे का मुझ से कुछ मांगने का सवाल है, तो उससे मुराद शहादत है, लेकिन वह अभी शहादत प्राप्त नहीं कर सकेगा, लेकिन बाद में वह भी शहीद हो जाएगा ।

यमामा के युद्ध में महान सहाबी हज़रत तुफ़ैल (रज़ि॰) वीरता के जौहर दिखाते रहे, यहां तक कि शहीद हो गये । उनका पुत्र अम्र (रज़ि॰) भी वीरतापूर्वक लड़ते रहे यहां तक कि उनका पूरा शरीर ज़ख़्मों से छलनी हो गया तथा उनकी दाईं हथेली काट कर अलग कर दी गयी और वे यमामा की धरती पर अपने पिता और हथेली को छोड़कर मदीना चले आये ।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि॰) के ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में अम्र बिन तुफ़ैल (रज़ि॰) उनके पास आये । जब हज़रत उमर (रज़ि॰) के सामने खाना पेश किया गया तो और भी कुछ लोग उस समय वहां पर मौजूद थे । हज़रत उमर (रज़ि॰) ने तमाम लोगों को खाने पर बुलाया । सारे लोग आये लेकिन हज़रत अम्र बिन तुफ़ैल (रज़ि॰) नहीं आये । हज़रत उमर (रज़ि॰) ने उनसे कहा : शायद आप अपने हाथ के कारण शर्म से खाने पर नहीं आये ? उन्होंने जवाब दिया : हां ऐ अमीरुल मोमिनीन । यह सुनकर हज़रत उमर (रज़ि॰) ने कहा : अल्लाह की क़सम ! जब तक आप अपने कटे हुए हाथ से खाने को छू नहीं देते उस समय तक मैं खाने में हाथ तक नहीं लगाऊंगा । आपके अलावा मुसलमानों में कोई दूसरा व्यक्ति ऐसा नहीं जिसके शरीर का कोई अंग स्वर्ग में हो ।

बाप के शहीद होने के बाद हज़रत अम्र (रज़ि॰) शहादत की कामना दिल में संजोए जीते रहे यहां तक कि यर्मूक की जंग पेश आयी । उसमें हज़रत अम्र (रज़ि॰) भी शरीक हुए और वहीं उनको शहादत नसीब हुई, जिसकी तमन्ना उनके लिए उनके पिता ने की थी । अल्लाह तआला हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र (रज़ि॰) पर रहमत की वर्षा करे कि वे एक शहीद और एक शहीद के बाप थे ।

''आख़िर उस व्यक्ति से ज़्यादा बहका हुआ इन्सान कौन होगा जो अल्लाह को छोड़कर उनको पुकारे जो 'क़ियामत' तक उसे उत्तर नहीं दे सकते, बल्कि इससे भी बेख़बर है कि पुकारने वाले उनको पुकार रहे हैं, और जब सभी इन्सान इकट्ठा किये जाएंगे उस समय वे अपने पुकारने वालों के दुश्मन और उनकी उपासनाओं के इन्कार करने वाले होंगे ।''

(क़ुरआन, 46:5-6)

★★★★★★★

A Well Wisher

CONTINENTEL LEATHER

KOLKATA

भोजन के विषय में ईश्वरीय मार्गदर्शन

❖ वारिस हुसैन

हमारा शरीर एक केमिकल मशीन है जिसको ईंधन भोजन के माध्यम से प्राप्त होता है । ख़राब या प्रदूषित ईंधन के उपयोग से जिस प्रकार एक गाड़ी का इंजन ठीक से काम नहीं कर पाता, उसी प्रकार अनुपयुक्त अथवा प्रदूषित भोजन से हमारे शरीर की कार्य क्षमता भी प्रभावित हो जाती है और हम बीमार पड़ जाते हैं । इसलिए हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि वह भोजन के रूप में किसी भी वस्तु का उपयोग करने से पूर्व यह सुनिश्चित कर ले कि कहीं उसके शरीर पर इसका प्रतिकूल प्रभाव तो नहीं पड़ेगा और जिसके बारे में तनिक भी शंका हो उसको अपने मुंह में ले जाने से बचना चाहिए । हमारा शरीर हमारे लिए सबसे बहुमूल्य है और इसको बीमारी से बचाने का हमें हर संभव प्रयत्न करना चाहिए । किसी ने सही कहा है कि "स्वास्थ्य ही धन है ।"



इस्लाम, जो जीवन के हर क्षेत्र में इन्सानों का मार्गदर्शन करता है, उसने स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी इन्सानों को अंधेरों में भटकने के लिए नहीं छोड़ा है और स्पष्ट रूप से बता दिया है कि कौन-सी वस्तुएं उसके लिए लाभदायक हैं और कौन-सी हानिकारक । कुरआन में अल्लाह अपने मानने वालों को आदेश देता है कि–"जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें हलाल और पाक रोज़ी दी है उसे खाओ और अल्लाह की नेमत के प्रति कृतज्ञता दिखाओ, यदि तुम उसी को स्वामी मानते हो ।" (कुरआन 16:114)

इन्सानों को उन्हीं वस्तुओं का उपयोग भोजन के रूप में करना चाहिए जो हलाल हो और साथ ही तय्यब (पाक) भी हो । भोजन का प्रभाव इन्सान के स्वास्थ्य के साथ उसके दिल, दिमाग़, आचरण और स्वभाव पर भी पड़ता है । हलाल और पाक भोजन इन सब पर अनुकूल प्रभाव डालता है और हराम और नापाक भोजन प्रतिकूल । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने इसी लिए कहा है कि, "हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है कि वह हलाल रोज़ी हासिल करने की कोशिश करे ।"

हलाल उसे कहते हैं जो अनुमेय और वैध हो । भोजन के हलाल होने से तात्पर्य वह भोजन है जो इस्लाम की शिक्षाओं के अन्दर रहते हुए एक मुसलमान सुगमता से खा-पी सकता है और जो प्रतिबंधित नहीं है । वैसे आम जीवन में हर वह कार्य हलाल है जिसे करने की अनुमति इस्लाम देता है । इसके विपरीत हर वह कार्य तथा भोजन हराम है जिसको इस्लाम में प्रतिबंधित कर दिया गया है ।

इस्लाम का मानना है कि सभी बुराई और अधर्म का स्रोत हराम भोजन है । जिसके पेट में हराम और संदिग्ध भोजन होगा, उसके सभी कार्य और कर्म हराम होंगे और यदि भोजन शुद्ध और विधिपूर्ण होगा तो अच्छे कार्य और अच्छे आचरण का निर्माण होगा ।

तय्यब (पाक) भोजन वह है जो उत्तम, अच्छा, सुखद, उत्कृष्ट, उचित, शुद्ध और स्वच्छ हो । जो तीन दोषों से मुक्त हो और तीन गुणों से संपन्न हो । अर्थात् अपने आप में बुरा

न हो, बुरे साधनों द्वारा प्राप्त न हो और बुरे उद्देश्य के लिए हासिल न किया गया हो । दूसरी ओर वह खुद अच्छा हो, उसे अच्छे स्रोत से प्राप्त किया गया हो और अच्छे उद्देश्य के लिए इसका उपयोग हो । तय्यब का मुख्य उद्देश्य स्वच्छ और शुद्ध भोजन का उत्पादन करना है जिससे आराम और संतुष्टि की भावना पैदा हो सके ।

हलाल यह सुनिश्चित करता है की हर भोजन का निर्माण उचित और जायज़ तरीक़े से हो, और तय्यब यह सुनिश्चित करता है कि उसका स्रोत और उत्पत्ति का मार्ग भी नैतिक हो । इस संदर्भ में क़ुरआन की निम्नलिखित आयतें हमारा मार्गदर्शन करती हैं–

"ऐ लोगो ! धरती में जो हलाल और अच्छी-सुथरी चीज़ें हैं उन्हें खाओ और शैतान के पदचिह्नों पर न चलो । निस्संदेह वह तुम्हारा खुला शत्रु है ।" (क़ुरआन 2:168)

अल्लाह ने जिन चीज़ों को प्रतिबंधित घोषित कर दिया है, उनका सेवन करना वास्तव में उसके विरुद्ध विद्रोह का ऐलान है और इससे इन्सान शैतान का साथी बन जाता है ।

"तुम्हारे लिए हराम हुआ मुर्दार रक्त, सूअर का मांस और वह जानवर जिस पर अल्लाह के अतिरिक्त किसी और का नाम लिया गया हो और वह जो घुटकर या चोट खाकर या ऊंचाई से गिरकर या सींग लगने से मरा हो या जिसे किसी हिंसक पशु ने फाड़ खाया हो–सिवाय उसके जिसे तुमने ज़ब्ह कर लिया हो–और वह किसी थान पर ज़ब्ह किया गया हो ।" (क़ुरआन 5:3)

इस्लाम ने मांस के सेवन की अनुमति दी है पर इस शर्त के साथ कि जानवर को निर्धारित विधि के अनुसार ही ज़ब्ह किया जाए अन्यथा वह हराम माना जाएगा ।

"उसने तो तुम पर केवल मुर्दार, रक्त, सूअर का मांस और जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो, हराम ठहराया है ।" (क़ुरआन 16:115)

"और उसे न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो । निश्चय ही वह तो आज्ञा का उल्लंघन है ।" (क़ुरआन 6:121)

किसी भी भोजन के हलाल और तय्यब होने के लिए आवश्यक है कि उस पर अल्लाह का ही नाम लिया जाए । ज़ब्ह करते समय यदि उस पर किसी दूसरे का नाम लिया जाता है या उद्देश्य उसे किसी अन्य को अर्पित करना है तो वह न हलाल होगा न तय्यब ।

इस्लाम एकेश्वरवाद की शिक्षा देता है और यह बताता है कि इस समस्त ब्रह्माण्ड की प्रभुसत्ता अकेले अल्लाह ही के हाथ में है और यह उसकी बड़ी अनुकम्पा है कि उसने उन चीज़ों से अवगत करा दिया जिनसे बचने का निर्णय इन्सान स्वयं से कभी नहीं कर पाता । अल्लाह ने इन्सानों को दी गयी शरीयत में जिन चीज़ों को खाद्य पदार्थ के रूप में उपयोग करने से रोका है वह सारी चीज़ें इन्सान की नैतिकता के लिए हानिकारक हैं । उनसे इन्सान का स्वभाव और आचरण प्रभावित होता है । इस प्रतिकूल प्रभाव का अनुमान लगाना इन्सान के लिए असंभव है । इसलिए इन्सान की भलाई इसी में है कि वह इन आदेशों को स्वीकार करने में ज़रा भी संकोच का प्रदर्शन न करे । उसके लिए तो इसको अपने जीवन का हिस्सा बनाने के लिए बस इतनी बात काफ़ी होनी चाहिए की यह अल्लाह का आदेश है और यह ज़रूरी नहीं कि उसकी हर बात की बुद्धिमत्ता उसे समझ में आ ज़ाए ।

मानवता

दिल कहता है सबको चाहूं, सबको प्यार करूं,
फूल बिछाऊं मैं राहों में कभी न कांटेदार करूं ।

मानव बन्दे एक ख़ुदा के, सब हैं भाई-भाई,
कैसे उनको लूटूं-मारूं, कैसे उन पर वार करूं ।

धोखा देना महापाप है, वंह भी अपने भाई को,
नरक मिले आगे जीवन में, न ऐसा व्यवहार करूं ।

किस मुंह से मैं मानववादी और सबका हितकारी,
भाई को ही लूटूं खाऊं और उस पर प्रहार करूं ।

छोड़ अकेला मुझको दुनिया औरों को भरमाएगी,
सत्य-कर्म ही साथी अपना, क्यों न उससे प्यार करूं ।

पूरब-पश्चिम मुंह करने से, मैं नेक नहीं बन जाऊंगा,
रब को मानूं, रब की मानूं और अच्छा व्यवहार करूं ।

रातों-दिन हो सबकी चिंता, बाक़र मेरे जीवन में,
कभी लुटे न कोई पड़ोसी, ऐसा पहरेदार बनूं ।

बाक़र अली
मीरा रोड (मुंबई)

अध्ययन ने इस्लाम तक पहुंचाया

जेनिफर आर॰ विलिअम्स अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन डी॰सी॰ में रहती हैं और अमेरिका की प्रसिद्ध ऑनलाइन समाचार पत्रिका वॉक्स.कॉम में विदेश संपादक के रूप में कार्यरत हैं । इस संस्था से जुड़ने से पहले वह विश्व प्रसिद्ध ब्रूकिंग इंस्टिट्यूट के मध्य एशिया केन्द्र में वरिष्ठ शोधकर्ता के रूप में कार्यरत रहीं थीं और आतंकवाद, जिहाद और जिहादी ग्रुप्स व मध्य एशिया से संबंधित आपकी रचनाएं कई विश्व प्रसिद्ध प्रकाशन जैसे फॉरेन अफेयर्स, फॉरेन पॉलिसी और द नेशनल इंटरेस्ट में अपना स्थान बना चुकी थीं ।

अपने बारे में वह कहती हैं कि उन्हें देखकर कोई भी नहीं कहेगा की वह मुसलमान हैं । उनके बाल अत्यंत गोरे चमकदार हैं और आंखें नीली और साथ ही शरीर पर बहुत सारे टैटूज भी हैं । वह यह भी बताती हैं कि उनका पालन-पोषण टेक्सास में एक दक्षिणी बैप्टिस्ट के रूप में हुआ था ।

वह गर्व से कहती हैं कि मैं एक मुसलमान हूं और मैं प्रवाह के साथ अरबी बोल लेती हूं । सन 2010 में उन्होंने अमेरिका के विख्यात डेन्वर विश्वविद्यालय से इंटरनेशनल स्टडीज़ में एम॰ए॰ किया था और आतंकवाद का अध्ययन ही उनकी विशेषता रही है ।

उनका कहना है कि कई वर्ष पहले उनके अन्दर यह भावना जागृत हुई की उन्होंने एक लंबे समय से इस्लाम की राजनैतिक व्यवस्था, ओसामा बिन लादेन जैसे जिहादी विचारक और क़ुरआन में आतंकवाद का औचित्य साबित करने के उनके प्रयत्न आदि का अध्ययन तो अत्यंत गहराई से किया पर स्वयं उनकी धार्मिक पुस्तक क़ुरआन को कभी पढ़ने का प्रयत्न नहीं किया । और फिर उन्होंने उसे पढ़ा और उसके पृष्ठों में जो कुछ उन्हें मिला उसने उनके जीवन को बदल कर रख दिया ।

उनका कहना है कि आस्था, धारणा और नैतिकता से संबंधित उन समस्त प्रश्नों के उत्तर मिल गये जो उन्हें

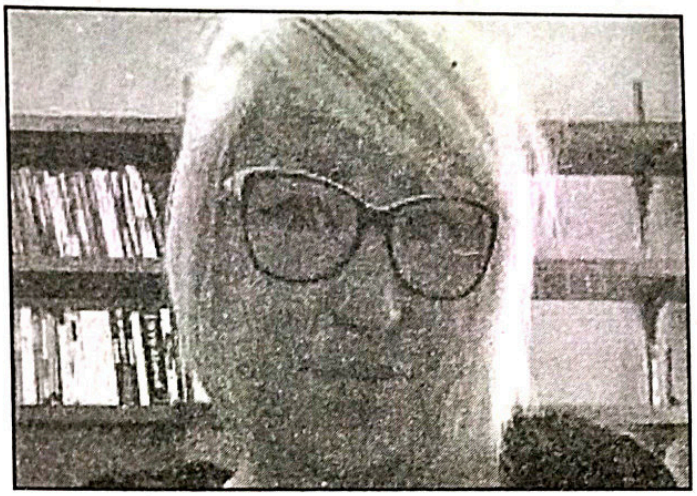

युवावस्था से ही परेशान करते रहते थे । वह कहती हैं कि, ''ईश्वर से मेरा जो संबंध टूट चुका था उसे जोड़ने का सूत्र मुझे मिल गया था और फिर मैंने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया ।''

अपनी स्थिति को साफ़ करते हुए वह आगे कहती हैं कि, ''अल-क़ायदा और आईसिस इस्लाम की जो व्याख्या प्रस्तुत करते हैं उससे मुझे आज भी उतनी ही घृणा है जितनी पहले थी, बल्कि शायद पहले से अधिक क्योंकि अब उसे मैं अपने सुन्दर और आकर्षित धर्म की एक बीमार व्याख्या के रूप में देखती हूं । मैंने जब क़ुरआन पढ़ा तो उसमें मेरा परिचय एक ऐसे ईश्वर से हुआ जो अत्यंत दयालु, उपकारी और इन्सानों से असीमित प्रेम करने वाला है । मुझे एक ऐसे धर्म की प्राप्ति हुई जो विचारों की स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है, सम्पूर्ण मानवता में करुणा और दया की भावना जागृत करता है और सामाजिक इन्साफ़ और बराबरी की शिक्षा देता है ।''

वह कहती हैं कि, ''वैसे तो जिहादी भी इस्लाम के संबंध में इन्हीं आदर्शों का दावा करते हैं पर किसी अज्ञात कारणवश उन लोगों ने ईश्वर के इस दयालुता और प्रेम के संदेश को लोगों तक पहुंचाने के लिए मस्जिदों को उड़ाने और मानवता की सेवा कर रहे लोगों की गर्दनें काटने का मार्ग चुना । कितना निंदनीय है उनका मार्ग !'' (वा॰हु॰)

सर्वधर्म समभाव और इस्लाम

❖ मुहम्मद इक़बाल मुल्ला

सत्य धर्म की कसौटी

धर्मों के बारे में जब बातचीत की जाती है तो सामान्यत: यह बात अवश्य कही जाती है कि सभी धर्म सत्य हैं । उनमें से कोई एक धर्म ही सत्य हो और दूसरे धर्म सत्य पर न हों, तो ऐसा संभव नहीं है । इसलिए इस संबंध में यह बात कही जाती है कि धर्मों के नाम अलग-अलग अवश्य हैं, लेकिन सबके रास्ते और लक्ष्य एक ही है । इनमें से किसी भी रास्ते (धर्म) को मनुष्य अपना ले तो वह अवश्य अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेगा। जब समस्त धर्म सत्य हैं, तो किसी एक धर्म को सच्चा ठहराकर दूसरे धर्मों को ग़लत कहना सही नहीं है । जो व्यक्ति जिस धर्म पर चल रहा है, चलता रहे । वह दूसरे व्यक्ति को अपनी पसन्द के धर्म पर चलने का अधिकार दे और उसके धर्म को सच्चा स्वीकार करे और विश्वास रखे कि उसके धर्म के अतिरिक्त दूसरे धर्मों पर चलने वाले भी मुक्ति के पात्र हैं । इसलिए किसी धर्म के सत्य होने का आग्रह करना, लोगों को उस धर्म को अपनाने का निमंत्रण देना समाज में मतभेद और तनाव पैदा करेगा । इससे राष्ट्रीय एकता छिन्न-भिन्न होगी और लोगों के बीच परस्पर घृणा और दूरी बढ़ेगी ।

जो लोग यह दृष्टिकोण रखते हैं उन्होंने धर्म के बारे में गंभीरता और गहराई से सोच-विचार नहीं किया । यह एक सरसरी राय और सतही सोच का फल है । यद्यपि इस बात से सभी को पूरी तरह सहमत होना चाहिए कि धर्म के नाम पर लड़ना-झगड़ना ग़लत है । धर्मों के मानने वालों के बीच एक दूसरे के लिए आदर-सम्मान, प्रेम, सहानुभूति और भाईचारा होना चाहिए । बहुसांस्कृतिक समाज (Plural Society) में, जहां एक से अधिक धर्मों के मानने वाले रहते हों, धर्म के आधार पर घृणा और तनाव विनाशकारी सिद्ध



होता है । यह सत्य है । ऐसा करने का किसी को भी अधिकार प्राप्त नहीं होना चाहिए । मानव-समाज, राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए भी यह स्थिति ठीक नहीं है ।

किन्तु प्रश्न यह उठता है कि उल्लिखित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए क्या इस बात को स्वीकार करना आवश्यक है ? चाहे बुद्धि और तर्क, ज्ञान और विवेक के आधार पर कोई व्यक्ति समस्त धर्मों को सही न समझता हो; हर तरह के पूर्वाग्रहों और पक्षपातों से ऊपर उठकर धर्मों के निष्पक्ष तुलनात्मक अध्ययन से कौन-सी सच्चाई हमारे सामने आती है ? सच्चाई को स्वीकार करना मामूली बात नहीं है । विभिन्न धर्मों के अनुयायियों के बीच मधुर संबंध और भाईचारा, राष्ट्रीय एकता और धार्मिक उदारता के लिए निम्नलिखित बातें आवश्यक हैं–

- हर व्यक्ति को आस्था और धर्म के चुनाव में स्वतंत्रता प्राप्त हो ।
- धर्म के आधार पर किसी के साथ भेदभावपूर्ण रवैया न अपनाया जाए ।

अपने धर्म के अतिरिक्त दूसरे धर्मों के प्रति आदर-सम्मान और उदारता का व्यवहार किया जाए ।

एक मूल प्रश्न

क्या समस्त धर्म सत्य हैं ? या स्रष्टा की ओर से मानवजाति के दिशा-निर्देश और मार्गदर्शन के लिए एक ही धर्म मानवजाति की उत्पत्तिकाल से ही ईश्वर की ओर से दिया गया था । यह मूल प्रश्न है, जिसका संबंध केवल ज्ञान और दर्शन से नहीं, बल्कि इसका संबंध हर मनुष्य की सांसारिक सफलता और मृत्यु के बाद के जीवन में मुक्ति प्राप्त करने के विषय से भी है । मान लीजिए, ईश्वर के प्रदान किये हुए धर्म को छोड़कर किसी ने अपने मनपसन्द या बाप-दादा के धर्म में पूरा जीवन व्यतीत कर डाला, लेकिन मृत्यु के बाद के जीवन में उसे पता चला कि ईश्वर के आदेश, उसकी मूल शिक्षा और मार्गदर्शन से सांसारिक जीवन में वंचित रहा । अब उसे असफलता और नरक की भयंकर यातना के ख़तरे का सामना है, तो उस समय क्या हो सकता है ? यह धर्मों की एकता-भावना से जुड़ी समस्या भी नहीं है । हर मनुष्य को पूर्ण गंभीरता और चिंतन-मनन के द्वारा अपनी पसन्द और नापसन्द से ऊपर उठकर ईश्वर की इच्छा और उसके पसन्दीदा रास्ते को खोजने की आवश्यकता है । मनुष्य सोच-विचार कर सकता है और कोई निर्णय अपने हित में ले सकता है । मार्गदर्शन और सत्यनिष्ठा के लिए चाहे कोई भी बलिदान करना पड़े; सांसारिक भोग-विलास और सुख-चैन से कितना ही वंचित होना पड़े, तो इसका भी निर्णय लिया जा सकता है । लेकिन जब मृत्यु आएगी और उसके बाद दूसरी दुनिया में आंख खुलेगी, तो वहां सोच-विचार करने या अपने हित में कोई निर्णय लेने

विशेष आयोजन

का कोई अवसर ही शेष नहीं रहेगा । यह जीवन एक ही बार मिला है । इसलिए आज सोच-विचार और सही निर्णय लेने का सबसे अच्छा अवसर उसे प्राप्त है । इसे नष्ट करना वास्तव में अपने आपको तबाही में डालना है ।

आगे कुछ भी कहने से पहले यह स्पष्ट कर देना उचित होगा कि इस लेख के माध्यम से पाठकों को सोच-विचार की तरफ़ आमंत्रण देते हुए यह बताना है कि वास्तव में यह धर्मों का जीवन ही मौलिक समस्याओं का मूल आधार है । इसी संबंध में इस लेख में तुलनात्मक और वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । इस लेख का उद्देश्य किसी भी धर्म का अपमान और निन्दा करना नहीं है, बल्कि विभिन्न धर्मों की मौलिक अवधारणाओं का निरपेक्ष और तुलनात्मक अध्ययन करके समाज के समक्ष यथार्थ को प्रस्तुत करना है । जो भी धर्म यह दावा करता है कि एकमात्र वही सत्य-धर्म है, तो उसके इस दावे को, उसके दृष्टिकोण को ज्ञान, तर्क और बुद्धि-विवेक के आधार पर निष्पक्ष भाव से दो टूक अंदाज़ में जांचना-परखना चाहिए । ईश्वर-प्रदत्त सत्य, यथार्थ, सत्यनिष्ठा और हर व्यक्ति की सफलता और मुक्ति के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि पूर्वाग्रहों, पक्षपातों और पूर्वजों के अंधानुकरण से मुक्त होकर सत्य को स्वीकार कर लिया जाए । यही ठीक और उचित रवैया हो सकता है । इस लेख का उद्देश्य यह भी नहीं है कि किसी धर्म को उच्चतर या किसी को निम्नतर और तुच्छ सिद्ध किया जाए, बल्कि समस्त धर्मों के प्रति आदर-सम्मान की भावना रखते हुए यह लेख लिखा गया है ।

एक विडम्बना

धर्म की परिभाषा देने के लिए कुछ बुद्धिजीवियों और विद्वानों ने निम्नलिखित विचार प्रकट किये हैं, इनमें से कुछ लोग 'सर्वधर्म समभाव' के पक्षधर हैं–

- धर्म व्यक्ति का आध्यात्मिक अनुभव और विषय है ।
- धर्म सत्य की खोज है ।
- धर्म 'परम सत्य' या 'शाश्वत सत्य' (Ultimate Reality, Eternal Truth and Supreme Reality) को पाने के लिए व्यक्ति के प्रयास का नाम है ।

मानो धर्म और ईश्वर की इच्छा का ज्ञान ईश्वर के संदेश और उसके प्रतिनिधि नबी, रसूल और पैग़म्बर के बिना हो सकता है । क्या इस सोच से मानव को अपने जीवन के लिए पूर्ण ईश्वरीय मार्गदर्शन और दिशा-निर्देश प्राप्त हो सकता है ? क्या इनके द्वारा आस्थाओं, इबादतों, नैतिकता और जीवन-व्यवस्था के नियम बनाए जा सकते हैं ? स्पष्ट है कि ख़ुदा को छोड़कर यह सब कोई नहीं कर सकता । यदि मनुष्य प्रयास करेगा भी तो ? विभिन्न लोगों के आध्यात्मिक अनुभव और सत्य की खोज के प्रयास निश्चय ही विभिन्न परिणामों और निष्कर्षों पर ख़त्म होंगे । फिर प्रश्न उठेगा कि उनमें सत्य या असत्य कौन-सा है ? फिर उनको जांचने-परखने का आधार क्या होगा ? वह कसौटी क्या हो सकती है कि जिसके आधार पर कोई कह सके कि 'हां, यह सत्य है और यह असत्य ।'

लोगों ने जो यह समझ लिया है कि धर्म केवल व्यक्तिगत जीवन में ख़ुदा की याद, इबादत, पूजा-पाठ और भक्ति के कुछ नियमों और नैतिक शिक्षाओं पर अमल करने का नाम है, यह दुरुस्त नहीं है । इसी सोच के परिणाम आज शेष व्यक्तिगत जीवन के व्यापक दायरे में और पूरे सामाजिक जीवन में, जहां ईश्वर और उसकी शिक्षा तथा मार्गदर्शन की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है, वहां ईश्वर को दूर रखा गया है । जीवन के महत्वपूर्ण मामलों में ईश्वरीय अवधारणा, उसके मार्गदर्शन और उसकी शिक्षाओं से विद्रोह करके लोग अपने दृष्टिकोणों और दर्शनों के अंतर्गत अपना व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन व्यतीत कर रहे हैं । स्पष्ट है, ऐसे संकीर्ण और सीमित धर्म की आवश्यकता ही क्या है ?

कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न

(1) क्या ईश्वर ने ख़ुद कहा है कि मनुष्य धर्म को पाने के लिए आध्यात्मिक साधना करे ? अथवा वह सत्य की खोज या धर्म, 'परम सत्य' या 'शाश्वत सत्य' (Ultimate Reality, Eternal Truth ;k Supreme Reality) को पाने के लिए अनवरत प्रयासरत रहे ? क्या इसे ही धर्म और ईश्वर की स्वीकृति और अनुमोदन (Sanction) प्राप्त होगा और ईश्वर इससे ख़ुश और राज़ी भी होगा ? क्या ईश्वर ने मनुष्य को धर्म प्रदान करने से विवशता और सामर्थ्यहीनता प्रकट की है ?

(2) धरती पर पहले मनुष्य हज़रत आदम (अलैहि॰) थे । उनकी पत्नी हव्वा (अलैहि॰) भी उनके साथ थीं ।

क्या हज़रत आदम (अलैहि॰) ने स्वयं धर्म बना लिया था?

(3) धर्म या जीवन-विधान बनाने का उत्तरदायित्व किस पर है ? मनुष्य अगर स्वयं धर्म बना लेता है तो फिर ईश्वर की आवश्यकता ही क्या है ? क्या मानव-निर्मित धर्म ईश्वर की अवधारणा से रिक्त नहीं हैं ? मनुष्य को धर्म बनाने की ज़िम्मेदारी किसने दी है ?

(4) क्या ईश्वर ने यह बात बतायी है कि उसने बहुत-से धर्म मनुष्य को दिये हैं और ये सब धर्म परस्पर विभिन्नताओं, विरोधाभासों और गंभीर मतभेदों के बावजूद सभी एक साथ सही हैं ? क्या उसने बताया है कि किसी भी धर्म विशेष को यह स्थान ईश्वर के निकट प्राप्त नहीं है कि सिर्फ़ वही सत्य है, शाश्वत सत्य है ?

(5) मानव-इतिहास में यह बात अंकित (Recorded) है कि विभिन्न कालों और विभिन्न क़ौमों में ऐसे भले लोग अच्छे और पवित्र चरित्र रखने वाले गुज़रे हैं, जिन्होंने अपने आपको ईशदूत, नबी या पैग़म्बर बताया; ईश्वर का प्रतिनिधि होने का दावा किया; ईश्वर के विषय में (व्यक्तित्व और गुणों की दृष्टि से) और मरने के बाद के जीवन–स्वर्ग और नरक और मनुष्य की सांसारिक सफलता और कल्याण और पारलौकिक सफलता और मुक्ति के बारे में साफ़-साफ़ और स्पष्ट शिक्षाएं प्रस्तुत कीं । उन सच्चरित्र लोगों ने यह भी बताया कि वे अपनी ओर से कोई संदेश और शिक्षाएं प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि जो कुछ प्रस्तुत करते हैं वह सब ईश्वर की ओर से होता है ।

इन नबियों और पैग़म्बरों ने ईश्वर की शिक्षा और उसके मार्गदर्शन पर सबसे पहले अमल करके अपनी क़ौमों के सामने व्यावहारिक आदर्श प्रस्तुत किया । ये नबी और पैग़म्बर दुनिया की विभिन्न क़ौमों और विभिन्न कालों में निरंतर आते रहे । आज से एक हज़ार चार सौ पचास साल पहले अरब में हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर पैग़म्बरों के आने का क्रम ख़त्म हुआ । इसी लिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ईश्वर के अन्तिम दूत हैं ।

इन समस्त नबियों और पैग़म्बरों की शिक्षा और मार्गदर्शन में कोई मतभेद और विरोध नहीं पाया जाता । ये सब पूरी सत्यनिष्ठा और निस्स्वार्थ चरित्र के साथ मानवजाति के कल्याण और उसकी मुक्ति के लिए सतत् प्रयासरत रहे । इन पवित्र और नेक हस्तियों को ईश्वर का संदेश और मार्गदर्शन जिबरील (अलैहि॰) नामक फ़रिश्ते के द्वारा वह्य (प्रकाशना) के रूप में मिलता रहा ।

(6) ईश्वर असीम कृपालु और दयालु है और वह अपनी सर्वोत्तम कृति–मनुष्य–से अनंत प्रेम करता है । उसने जगत् की अनगिनत चीज़ों को मनुष्य की सेवा में लगा रखा है । वह मनुष्य की छोटी-बड़ी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति अत्यंत विवेकपूर्ण और तत्वदर्शितापूर्ण ढंग से निरंतर कर रहा है ।

हम सब जानते हैं और ख़ूब अच्छी तरह जानते हैं कि जीवन के संबंध में दिशा-निर्देश और मार्गदर्शन मानव की सबसे बड़ी और मूल आवश्यकता है । यहां यह प्रश्न उठता है कि ईश्वर, जो जगत्-स्रष्टा और जगत्-सखा है, अपनी सृष्टि और सर्वोत्तम कृति अर्थात मनुष्य के प्रति क्या इतना दयाहीन और निर्दयी हो सकता है कि उसकी मौलिक और अनिवार्य आवश्यकता ही की आपूर्ति नहीं करता ? ऐसा नहीं है, बल्कि उसने मानव के मार्गदर्शन और हिदायत का पूर्ण-प्रबंध किया है ।

विभिन्न धर्मों की परस्पर सामान्य बातें

धर्मों के बीच परस्पर बड़े गंभीर मतभेद, विरोधाभास और अन्तर पाये जाते हैं, जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती । इसके बावजूद विभिन्न धर्मों में ईश्वर की अवधारणा, नैतिक मूल्य और कुछ अन्य दृष्टिकोणों से समानता भी पायी जाती है । इसी समानता को सामने रखकर सामान्यत: यह धारणा बना ली जाती है कि सभी धर्म सत्य हैं । इस महत्वपूर्ण पहलू पर चिंतन-मनन करने की आवश्यकता है । यह सही है कि सैद्धांतिक रूप से विभिन्न धर्मों में ईश्वर की अवधारणा एक समान नज़र आती है, परन्तु व्यावहारिक रूप से उनमें बहुत अधिक मतभेद, विरोधाभास और अन्तर पाया जाता है । फलस्वरूप इन धर्मों के बीच की सैद्धांतिक समानता का पुल धराशायी होकर रह जाता है और व्यवहारत: वे धर्म एक-दूसरे के पूर्णत: प्रतिकूल और बहुधा विरोधी बन जाते हैं ।

इसी प्रकार नैतिक शिक्षाएं और कुछ दूसरे मूल्य भी विभिन्न धर्मों में उभयनिष्ठ हैं । यद्यपि नैतिकता जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है, फिर भी यह अंश है, जो सम्पूर्ण

का स्थान नहीं ले सकती । साझा नैतिक शिक्षाओं और कुछ मूल्यों के बारे में भी स्थिति यह है कि गहराई और विस्तार में जाने के बाद बड़े विभेद और टकराव दृष्टिगोचर होते हैं ।

धर्मों में शिक्षाओं की उभयनिष्ठता या परस्पर समान बातें वास्तव में इस महत्वपूर्ण सच्चाई का पता देती हैं कि मानवजाति के उत्पत्तिकाल में धर्म एक ही था । कालांतर में कुछ स्वार्थी तत्वों ने अपना स्वार्थ साधने के लिए उसी एक धर्म से अनेकानेक नवीन धर्मों का निर्माण कर लिया ।

मानवजाति का पहला धर्म

हम कैसे सोच सकते हैं कि मानवजाति के आरंभ में कोई धर्म नहीं था या बहुत-से धर्म थे । जिस ईश्वर ने मनुष्य और समस्त सृष्टि को पैदा किया, जिसने पक्षी को उड़ना और मछली को तैरना सिखाया, क्या उसने मनुष्य के लिए जीवन का कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं किया और उसे अपनी मर्ज़ी के अनुसार अपने मनपसन्दीदा रास्ते पर चलने का मार्ग नहीं दिखाया ।

दुनिया की हर चीज़ मनुष्य के लिए है और मनुष्य ईश्वर की सर्वाधिक महत्वपूर्ण और मूल्यवान रचना है । क्या मनुष्य पक्षी और मछली से भी गया-गुज़रा है कि ईश्वर ने उसे जीवन के लिए मार्गदर्शन प्रदान नहीं किया, बल्कि उसे भटकने के लिए छोड़ दिया ?

मनुष्य इतनी बुद्धि तो रखता ही है कि अगर वह कोई मशीन बनाता है, तो उसकी प्रयोग-विधि और निर्देशों पर आधारित पुस्तिका (Manual) अवश्य ही जारी करता है । क्या ईश्वर ने मनुष्य को बना तो ज़रूर दिया, लेकिन उसे जीवन के संबंध में निर्देश-पुस्तिका (Manual) नहीं दी ?

यही निर्देशिका मानवजाति का पहला धर्म था, जिसका निर्माण किसी मनुष्य ने नहीं, बल्कि स्वयं जगत्-स्रष्टा ईश्वर ने किया, जिसमें उस सर्वशक्तिमान शाश्वत ईश्वर ने समस्त मनुष्यों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक–जीवन के हर क्षेत्र के संतुलित विकास के लिए अपनी निर्देश-पुस्तिका में सर्वोत्तम व्यवस्था की, जिसके आधार पर मनुष्य स्वयं अपना, अपने परिवार, समाज, देश और दुनिया का सुधार कर सकता था । इसके अनुसार जीवन व्यतीत करके मनुष्य अपने स्रष्टा को प्रसन्न कर सकता था अपने दोनों लोकों (लोक-परलोक) को सजा-संवार सकता था । वह सांसारिक कल्याण और सफलता के साथ-साथ पारलौकिक सफलता और मुक्ति प्राप्त करने का रास्ता पा सकता था । इस प्रकार ईश्वर ने सृष्टि के आरंभ से ही मानवजाति को संपूर्ण जीवन के लिए सर्वोत्तम दिशा-निर्देश और मार्गदर्शन की सर्वांगपूर्ण व्यवस्था प्रदान की ।

इस धर्म में एक ओर जहां व्यक्ति और समाज के लिए न्याय और इनसाफ़, शान्ति और सुरक्षा की गारंटी दी गयी, वहीं दूसरी ओर अत्याचार, अन्याय और हर प्रकार के शोषण, बिगाड़ और विकृति रहित विशुद्ध जीवन की शिक्षाएं प्रदान की गयी थीं । यह धर्म स्रष्टा के प्रति बन्दे के पूर्ण समर्पण की व्यवस्था थी ।

कुछ मौलिक धारणाएं और विभिन्न धर्म

अब हम कुछ मौलिक धारणाओं के बारे में विभिन्न धर्मों की शिक्षाओं पर विचार करेंगे; ताकि सर्वधर्म समभाव की वास्तविकता का पता चल सके । अगर इन मौलिक धारणाओं के बारे में विभिन्न धर्मों की शिक्षाओं में सहमति या असहमति के तत्व पाये जाते हैं तो उनका प्रकार क्या है क्या वे संपूर्णता की हैसियत रखते हैं या मात्र आंशिक ही हैं? क्या सारे धर्म निश्चित रूप से सही और सच्चे हैं ? अगर इसका उत्तर सकारात्मक है, तो विभिन्न धर्मों की मौलिक धारणाओं में गंभीर मतभेद और विरोध क्यों पाये जाते हैं ? इस पर गंभीर चिन्तन-मनन की आवश्यकता है कि क्या इसके बाद भी धर्मों के एकत्व को स्वीकार किया जा सकता है ? सभी धर्मों की सारी शिक्षाओं का निरीक्षण बहुत विस्तृत हो जाएगा, इसलिए केवल कुछ ही धर्मों के दृष्टिकोण पर सोच-विचार किया जाए । जिन विषयों के संबंध में हम विभिन्न धर्मों की मौलिक धारणाओं को जानना चाहते हैं वे निम्नलिखित हैं–

- ईश्वर का अस्तित्व और ईश्वर की कल्पना ।
- सृष्टि का निर्माण ।
- मनुष्य के लिए निर्देश और मार्गदर्शन की व्यवस्था।
- मरने के बाद का जीवन (स्वर्ग और नरक)।

ये विषय केवल ज्ञानपरक दार्शनिक बहस और वार्तालाप के विषय नहीं हैं । इनका गहरा संबंध व्यक्ति और समाज के व्यावहारिक जीवन, उसकी सफलता और असफलता और इसकी अन्तिम परिणति से है । ईश्वर की धारणा के

बारे में विभिन्न धर्मों की शिक्षाओं का सारांश निम्नलिखित है–

हिन्दू धर्म

हिन्दू धर्म में ईश्वर की कल्पना एक हस्ती से शुरू होती है और इसके बाद दो और ख़ुदा भी उसके साथ शामिल होते हैं । इस तरह तीन ख़ुदा बनते हैं । आगे चलकर ख़ुदाओं की कुल संख्या 33 करोड़ बनती है । जहां तक वेदों का संबंध है, तो इनमें एक ख़ुदा के अस्तित्व और उसके गुणों के बारे में उल्लेख मिलता है ।

व्यावहारिक दशा हिन्दू भाइयों की ऐसी है कि वे बहुत सारे ख़ुदाओं की पूजा और उपासना करते हैं और उनका यह भी विचार है कि हर चीज़ ख़ुदा है । इसलिए हिन्दू धर्म के हवाले से कहा जाता है कि कण-कण में भगवान है । अर्थात् धरती का हर कण देवता है ।

ईसाई धर्म

ईसाई मत में ख़ुदा एक है; फिर ख़ुदा का एक बेटा अर्थात् जीसस (Jessus) है । यह भी ख़ुदा है और फिर एक पवित्र-आत्मा यानी होली घोस्ट (Holy Ghost) भी है । इसको त्रिवाद अथवा त्रीश्वरवाद (Faith of Trinity) कहा गया है । ख़ुदा की इस तीन ख़ुदाओं वाली धारणा में मौलिक आस्था के रूप में यह कल्पना शामिल है कि मुक्ति के लिए जीसस (ईसा मसीह अलैहि॰) पर ईमान लाना, उनको ख़ुदा का बेटा और ख़ुदा मानना और मनुष्य के पापों के प्रायश्चित के रूप में उनका सलीब पर जान देना परम सत्य माना जाता है ।

बौद्ध धर्म

बौद्ध मत में ख़ुदा को न तो स्वीकार किया गया है और न ही उसका इन्कार किया गया है । बौद्ध मत संपूर्ण जगत् के निर्माण और मनुष्य के जन्म में किसी पराभौतिक हस्ती (ख़ुदा) की भूमिका को स्वीकार नहीं करता ।

जैन धर्म

जैन मत की दृष्टि से सृष्टि और मनुष्य के सृजन के लिए ईश्वर की आवश्यकता नहीं है । जैन मत ईश्वर का इन्कार करता है और तत्व तथा जीव को शाश्वत और चिरस्थायी मानता है । इस प्रकार बौद्ध मत और जैन मत दोनों ईश्वर के अस्तित्व और उसकी अवधारणा से रिक्त हैं ।

इस्लाम धर्म

इस्लाम की दृष्टि से संपूर्ण सृष्टि और मनुष्य का स्रष्टा सिर्फ़ और सिर्फ़ एक ईश्वर (अल्लाह) है । सृष्टि और मनुष्य का सृजन आप से आप नहीं हुआ और न ही बहुत-से ख़ुदाओं का कोई अस्तित्व है । एकमात्र ख़ुदा हमेशा से है और हमेशा शेष रहने वाली हस्ती अकेले उसी की है । उसका कोई बेटा, बेटी या पत्नी नहीं है । सारे अच्छे गुणों का मालिक वही है । वह किसी की मदद का मुहताज नहीं; सब उसके मुहताज हैं । इस्लाम में ख़ुदा सिर्फ़ स्रष्टा, स्वामी और पालनहार ही नहीं, बल्कि वही एकमात्र शासक और मार्गदर्शक भी है और क़ानूनों का निर्माता भी । क़ुरआन बताता है कि ईश्वर ने मानवजाति को उसके संपूर्ण जीवन के लिए जीवन-विधान, क़ानून और मार्गदर्शन अपने पैग़म्बरों के द्वारा प्रदान किये । क़ुरआन मनुष्य को सचेत करता है कि अल्लाह की निर्धारित की हुई सीमाओं का उल्लंघन कभी न करना और याद रखना कि मरने के बाद तुम्हें उसी के पास जाना है और वह तुमसे तुम्हारे उन कर्मों का हिसाब लेगा, जो तुमने दुनिया में रहते हुए किये थे; इसके बाद तुम्हारे कर्मों के अनुसार वह तुम्हारे लिए स्वर्ग या नरक का फ़ैसला करेगा । उसकी हस्ती, उसके गुणों और अधिकारों में कोई उसका साझीदार नहीं । इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार इन सब हैसियतों में किसी को भी ख़ुदा का साझीदार बनाना–चाहे वे फ़रिश्ते हों, बुज़ुर्ग हस्तियां हों या कोई दूसरी चीज़–शिर्क (बहुदेववाद) है और इस्लाम की नज़र में शिर्क सबसे बड़ा पाप और अपराध है, जिसे ईश्वर किसी भी दशा में माफ़ नहीं करता ।

पवित्र क़ुरआन में है–

"अल्लाह के यहां बस 'शिर्क' (बहुदेववाद) ही की माफ़ी नहीं है । इसके सिवा और सब कुछ माफ़ हो सकता है, जिसे वह माफ़ करना चाहे । जिसने अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराया, वह तो गुमराही में बहुत दूर निकल गया ।" (क़ुरआन, 4:116)

गुरु नानक जी सिख मत के संस्थापक हैं । उन्होंने ईश्वर को ब्रह्म, कर्तार (स्रष्टा), अकाल (शाश्वत) और सतनाम (पवित्र नाम) जैसे विभिन्न नामों से पूजनीय ठहराया

(शेष पृष्ठ 42 पर)

''शैतान तो यह चाहता है कि शराब और जुए के द्वारा तुम्हारे बीच दुश्मनी और नफ़रत व द्वेष डाल दे और तुम्हें अल्लाह की याद से और नमाज़ से रोक दे ।''

(क़ुरआन, 5:91)

A Well Wisher

MUMBAI

धार्मिक राष्ट्रवाद : बनाम भारतीय राष्ट्रवाद

■ राम पुनियानी

समावेशी बहुवाद पर आधारित वह राष्ट्रवाद, जो भारत के स्वाधीनता संग्राम की आत्मा था, आज ख़तरे में है । इसका कारण है संघ परिवार की राजनीति का बढ़ता प्रभामंडल । संघ से जुड़े अनेकानेक संगठन, हमारे सामाजिक और राजनैतिक जीवन के सभी क्षेत्रों में घुसपैठ कर अपना वर्चस्व स्थापित कर रहे हैं । इसके साथ ही, यह आख्यान निर्मित करने का प्रयास हो रहा है कि हिंदू राष्ट्रवाद, अनादिकाल से भारतीय परंपरा का हिस्सा था ।

हिंदू राष्ट्रवाद के महिमामंडन की राह में सबसे बड़ी बाधा है इस राष्ट्रवाद की स्वाधीनता आंदोलन में शून्य भूमिका और इसका अंग्रेज़ों का पिछलग्गू होना । इस तथ्य को छुपाना, हिंदू राष्ट्रवाद के पैरोकारों के लिए अपरिहार्य है । यही कारण है कि वे दिन-रात मेहनत कर यह दिखाने का प्रयास कर रहे हैं कि उनके वैचारिक पूर्वजों ने स्वाधीनता संग्राम में हिस्सा लिया था । स्वाधीनता संग्राम से अपने विश्वासघात को छुपाने के लिए वे कहानियां गढ़ रहे हैं । वे उन नायकों को अपना बताने का प्रयास कर रहे हैं जिनके गांधी या नेहरू से रणनीतिक मतभेद थे या जिन्होंने स्वाधीनता पाने के लिए अपनी अलग राह चुनी थी ।

इस दिशा में पहला प्रयास था मोहनदास करमचंद गांधी के अनन्य शिष्य, जवाहरलाल नेहरू के निकट सहयोगी और जीवनपर्यंत कांग्रेस के निष्ठावान सिपाही, सरदार वल्लभभाई पटेल को हिंदू राष्ट्रवादी ढांचें में ढालने की कोशिश । इधर-उधर से कुछ असंबद्ध घटनाओं और तथ्यों को उद्धत कर यह कहा जा रहा है कि अगर सरदार पटेल देश के प्रथम प्रधानमंत्री होते तो आज कश्मीर समस्या न होती ।

अब, यह भी कहा जा रहा है कि गांधी जी ने भगत सिंह की जान बचाने का कोई प्रयास नहीं किया था । इस ऐतिहासिक तथ्य को नज़रअंदाज़ किया जा रहा है कि गांधी जी ने भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु की फांसी रुकवाने की हर संभव कोशिश की थी परंतु अंग्रेज़ शासक, भगत सिंह और उनके साथियों को माफ़ी देने के लिए तैयार नहीं थे । यह दुष्प्रचार करने वाले इस तथ्य की भी अनदेखी कर रहे हैं कि भगत सिंह ने अंग्रेज़ों से माफ़ी मांगने या अपनी सज़ा कम करने का अनुरोध करने से साफ़ इन्कार कर दिया था । भगत सिंह एक सिद्धांतवादी व्यक्ति थे और अपने आचरण से पूरे देश को प्रेरित करना चाहते थे ।

इस मुद्दे पर चर्चा का संदर्भ यह है कि अभी हाल (अगस्त 2019) में दिल्ली विश्वविद्यालय के परिसर में भगत सिंह, नेताजी सुभाषचंद्र बोस और सावरकर की एक-दूसरे से जुड़ी हुई मूर्तियां लगायी गयीं और उन्हें भारतीय स्वाधीनता संग्राम की त्रिमूर्ति बताया गया । दरअस्ल, यह सावरकर को नेताजी और भगत सिंह के समकक्ष बताने के एजेंडे का हिस्सा है–यह बताने का प्रयास कि इन दोनों की तरह, सावरकर भी ब्रिटिश-विरोधी क्रांति- कारी थे । हम सब जानते हैं कि सावरकर केवल अपने जीवन के पहले चरण में ब्रिटिश-विरोधी थे । अंडमान में स्थित सेल्लुयर जेल में क़ैद कर दिये जाने के बाद उनका हृदय परिवर्तन हो गया और उन्होंने अपनी रिहाई के लिए अंग्रेज़ सरकार को पांच दया याचिकाएं भेजीं ।

सावरकर, आर॰एस॰एस॰ और हिंदू राष्ट्रवादियों के सबसे बड़े वैचारिक गुरु हैं । उन्होंने ही हिंदुत्व, जो कि हिंदू राष्ट्रवाद की विचारधारा है, को परिभाषित किया था । मज़े की बात यह है कि वे स्वयं नास्तिक थे । उनके विचार, हिंदू राष्ट्रवादी राजनीति का आधार हैं । सन 1857 के विद्रोह पर अपनी पुस्तक में सावरकर ने लिखा कि हिंदुओं और मुसलमानों ने किस तरह कंधे से कंधा मिलाकर अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ी थी । परंतु हिंदू राष्ट्रवादी के रूप में अवतार लेते ही उन्होंने मुसलमानों के ख़िलाफ़ ज़हर उगलना

शुरू कर दिया क्योंकि उन्हें लगा कि मुसलमानों से नफ़रत ही हिंदू राष्ट्रवाद का आधार हो सकती है ।

इसके विपरीत, भगत सिंह और नेताजी-संघ परिवार जिनसे सावरकर को जोड़ना चाहता है-जीवनपर्यंत ब्रिटिश विरोधी रहे । भगत सिंह कम्युनिस्ट थे और सुभाष बोस, समाजवादी । भगत सिंह मानते थे कि गांधी जी के नेतृत्व में समावेशी आंदोलन ही भारतीय स्वाधीनता संग्राम की धुरी हो सकता है । गांधी जी के साथ अपने मतभेदों के बावजूद, नेताजी उन्हें राष्ट्रपिता कहते थे । नेताजी, गांधी जी और भगत सिंह के बीच मतभेद, राष्ट्रवाद की अवधारणा को लेकर नहीं थे । उनमें अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ाई लड़ने के तरीक़े के बारे में मतभेद थे । गांधी जी अहिंसा के पक्के समर्थक थे । उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अंग्रेज़ों की भारत पर पकड़ कमज़ोर करने के लिए भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया । बोस चाहते थे कि भारत के स्वाधीनता सेनानी, ब्रिटेन के विरुद्ध युद्धरत धुरी राष्ट्रों- जर्मनी, इटली और जापान-से हाथ मिलाएं ।

कुल मिलाकर, जहां तक राष्ट्रवाद का संबंध है, भगत सिंह, नेताजी और गांधी जी व इन नेताओं के समर्थक एक शिविर में हैं । दूसरे शिविर में हैं जिनाह (मुस्लिम लीग का सदस्य बनने के बाद) और हिंदू राष्ट्रवाद के पथप्रदर्शक सावरकर । ये दोनों धर्म को राष्ट्रवाद का आधार मानते और बताते थे । धार्मिक राष्ट्रवाद की यह विचारधारा, राजाओं-नवाबों और ज़मींदारों से उपजी थी । इसके विपरीत, भारतीय राष्ट्रवाद के समर्थक, समाज के विभिन्न तबक़ों से थे । इनमें शामिल थे उद्योगपति और व्यावसायी, श्रमिक और शिक्षित मध्यम वर्ग । ये वर्ग स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के हामी थे और धर्म से ऊपर उठकर सोचते थे । हिंदू और मुस्लिम राष्ट्रवादी, जन्म-आधारित सामाजिक पदक्रम के सामंती मूल्य में आस्था रखते थे ।

दिल्ली विश्वविद्यालय में जो कुछ हुआ वह इस बात का नमूना है कि तेज़ी से उभरता धार्मिक राष्ट्रवाद, इतिहास को किस रूप में प्रस्तुत करना चाहता है और हमारे अतीत के नायकों के साथ किस तरह की छेंड़छाड़ करने पर आमादा है । अब तक हमने इतिहास को तोड़ने-मरोड़ने के संघ परिवार के अभियान का एक पक्ष देखा है जिसमें हिंदू शासकों और मनुस्मृति जैसे हिंदू ग्रंथों का महिमागान किया जाता है । दिल्ली विश्वविद्यालय की घटना, हिंदू राष्ट्रवाद की वैचारिक मजबूरी के एक दूसरे पक्ष को उद्घाटित करती है । संघ परिवार केवल उन नेताओं को महिमामंडन के लिए चुन रहा है जिनके गांधी या नेहरू से मतभेद थे । बोस और भगत सिंह को इसलिए चुना गया क्योंकि वे कई मामलों में गांधी जी से असहमत थे और पटेल को इसलिए क्योंकि उनमें और नेहरू में कुछ मुद्दों पर मतभिन्नता थी । परंतु महत्वपूर्ण यह है कि ये सभी नेता भारतीय राष्ट्रवादी थे और इनकी तुलना सावरकर से क़तई नहीं की जा सकती । सावरकर ने तो स्वाधीनता संग्राम से विश्वासघात किया था ।

दिल्ली विश्वविद्यालय की घटना मामूली भले ही हो परंतु इससे यह पता चलता है कि संघ परिवार, भारतीय राष्ट्रवादियों और हिंदू राष्ट्रवादियों को एक पलड़े पर तौलने का प्रयास कर रहा है ।

हिंदू राष्ट्रवादी, विचारधारात्मक विभाजक रेखाओं को मिटाने का उपक्रम कर रहे हैं । हमें भारतीय स्वाधीनता संग्राम के प्रमुख नायकों की मूल विचारधारा को समझना होगा । तभी हम समझ पाएंगे कि कौन से मतभेद वास्तविक और महत्वपूर्ण थे और कौन से मामूली और नज़रअंदाज़ करने लायक़ । यह केवल मूर्तियों का प्रश्न नहीं है । प्रश्न यह है कि आख़िर हम किस तरह के भारत का निर्माण करना चाहते हैं । भगत सिंह, बोस, गांधी और अंबेडकर के भारत का या सावरकर के हिंदू राष्ट्र का । (विविधा फ़ीचर्स)

ANSARI STONE KOTA
Deals in :
ALL TYPES OF SAND STONE
(RED, BLUE, BROWN ETC.)
MACHINE CUT & HAND CUT
SAND STONE

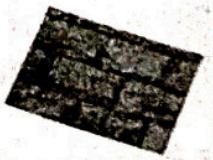
KOTA STONE
Address :
RAM NAGAR NEW STONE MANDI
KOTA RAJASTHAN
Mobile : 9829039190, WhatsApp : 9660853702

एक विश्व एक परिवार

◆ स्वामी अग्निवेश

आज विश्व हिंसा की चपेट में है । धर्म, संप्रदाय, नस्ल और जाति के झगड़े में दिन-प्रतिदिन मरने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है । विश्व के अधिकांश देशों में राजनीति को धार्मिक कट्टरता और कॉरपोरेट की काली छाया ने ढंक लिया है । धार्मिक कट्टरपंथियों का मक़सद लोगों को अंधविश्वास और पाखंड के मकड़जाल में फंसा कर अपना उल्लू सीधा करना है, तो विकास के नाम पर कॉरपोरेट का मक़सद ज़्यादा से ज़्यादा लाभ कमाना है ।

आज समूचे विश्व में सत्ता और कॉर्पोरेट की मिलीभगत से प्राकृतिक संसाधनों की लूट मची है । जंगलों में रहने वाले आदिवासी समूहों को बेदख़ल किया जा रहा है । अफ़्रीक़ी देशों और दक्षिण एशिया के अधिकांश देशों के साथ ही विकसित अमेरिकी और यूरोपीय देशों के मूल निवासियों के साथ बर्बरता का व्यवहार किया जा रहा है । उन्हें विकास की सबसे अधिक क़ीमत चुकानी पड़ रही है । प्रकृति के अंधाधुंध दोहन से पर्यावरण को भारी नुक़सान हो रहा है । इस समय विश्व पर्यावरण भारी संकट में है, तो सदियों से प्रकृति के सहारे अपना जीवन-यापन कर रहा आदिवासी समाज दर-दर की ठोकरें खा रहा है ।

एक और बात पूरे विश्व में आम है । यह है अपने पड़ोसियों के साथ वैर भाव । देशों में पड़ोसी मुल्कों के साथ परस्पर सहयोग और शांति की भावना न होकर शत्रुता-पूर्ण व्यवहार देखने को मिल रहा है । इसके कारण आज विश्व के अधिकांश देशों में छद्म राष्ट्रवाद का ज़ोर है, जो शासकों को बुनियादी मुद्दों को छोड़कर हथियारों की ख़रीद की तरफ़ ले जा रहा है । जबकि यह सच्चाई है कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद 'नेशन स्टेट' यानी 'राष्ट्र-राज्य' का कोई मतलब नहीं रह गया है । सब बाज़ार की शक्तियां तय कर रही हैं । आज बहुराष्ट्रीय कंपनियां इतनी शक्तिशाली हो गयी हैं कि वे यह तय करती हैं कि अमुक देश का राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री कौन होगा । इसके बाद भी उस देश को गुमान रहता है कि हम राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री चुन रहे हैं ।

ऐसी सामाजिक-राजनीतिक-आर्थिक परिस्थिति में विश्व भर में निराशा के गहरे बादल मंडरा रहे हैं । आम जनता बेबस है, तो युवा निराश हैं । बेरोज़गारी से जूझ रहे युवा हिंसक और अतिवादी संगठनों के लिए आसान चारा बन गये हैं । ये संगठन उन्हें उकसा या उनका भावनात्मक दोहन कर उनके ज़रिये अपना मक़सद साध रहे हैं । इसके अलावा विश्व भर में स्थापित सत्ता प्रतिष्ठानों के ख़िलाफ़ आक्रोश बढ़ रहा है । उसमें भी युवाओं की सहभागिता सबसे ज़्यादा है । इस परिस्थिति से दुनिया भर के लोग बाहर निकलना चाह रहे हैं, लेकिन किसी साफ़ और स्पष्ट नीति के अभाव में पूरा विश्व समुदाय ख़ुद को असहाय पा रहा है ।

संयुक्त राष्ट्र प्रति वर्ष इक्कीस सितम्बर को विश्व शांति दिवस मनाता है । इस वर्ष संयुक्त राष्ट्र ने जलवायु संकट से जूझ रहे विश्व के लिए दुनिया के राष्ट्राध्यक्षों को चुनौती स्वीकार करने का आह्वान किया । लेकिन यह सिर्फ़ आह्वान से संभव नहीं है । जब तक संयुक्त राष्ट्र एक सौ तिरानबे देशों का, राष्ट्र-राज्यों का क्लब बना रहेगा, तब तक इन समस्याओं का कोई समुचित समाधान नहीं हो सकेगा और न ही युद्ध की विभीषिका से और युद्ध सामग्री पर होने वाले प्रतिवर्ष दो हज़ार अरब डॉलर के अत्यंत नुक़सानदायक ख़र्चे से निजात मिलेगी । इसके लिए सारे राष्ट्र-राज्यों को मिलकर पृथ्वी पर मानवता के एक आदर्श सपने को साकार करने की ज़रूरत है । क्योंकि इस तरह विकास की अंधी दौड़ में प्रकृति के अतर्कित दोहन और शक्तिशाली बनने की होड़ में हथियारों का ज़ख़ीरा जमा करते जाने से पूरी मानवता ही ख़तरे में है ।

मैंने कोलकाता के सेंट जेवियर कॉलेज में प्रोफ़ेसर की प्रतिष्ठित नौकरी छोड़कर संन्यास लिया । स्वामी दयानंद सरस्वती के आदर्शों और विचारों ने मुझे एक जीवन-दृष्टि दी । जिसके कारण संन्यासी जीवन स्वीकार करने के बाद मैं किसी मठ और मंदिर में रहकर विलासिता का जीवन जीने के बजाय ग़रीबों की सेवा में अपना जीवन लगा दिया । आजीवन धार्मिक कट्टरता, पाखंड, अंधविश्वास, सामाजिक ऊंच-नीच और ग़ैर-बराबरी के लिए संघर्ष करता रहा । अपने लंबे सामाजिक-आध्यात्मिक जीवन में मैंने देश-विदेश

भर में भ्रमण किया । यात्रा के दौरान विभिन्न धर्मों, संप्रदायों और नस्लों के लोगों के जीवन और अनुभव से सीखने के बाद यह कह सकता हूं कि लंबे समय से संसार में सांप्रदायिकता और नस्लवाद साम्राज्यवादी शक्तियों के हाथ का सबसे मज़बूत हथियार रहा है । साम्राज्यवादी ताक़तों ने सांप्रदायिकता को बढ़ावा दिया । भारत की आज़ादी की लड़ाई में गांधीजी ने सर्वधर्म समभाव की वकालत की थी ।

आज संपूर्ण धरती पर धर्म, संप्रदाय, जातिवाद को लेकर बढ़ती राजनीति और अमीर-ग़रीब के बीच चौड़ी होती खाई को देखा और महसूस किया जा सकता है । राजनीतिक और धार्मिक लोगों के पास इस समस्या का कोई समाधान नहीं है । ऐसे में वेद के आदर्श वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से घृणा और हिंसा की अमानवीय राजनीति को समाप्त किया जा सकता है । अंधविश्वास और पाखंड की इस परिस्थिति में वैदिक आदर्शों को लेकर एक नया समाज बनाने के लिए और शिक्षा में जागतिक मूल्यों को प्रतिष्ठित करने के लिए एक आध्यात्मिक क्रांति का प्रयास किया जा सकता है । वसुधैव कुटुम्बकम् का सनातन वाक्य एक न्यायसंगत और शांतिपूर्ण विश्व व्यवस्था के निर्माण और सार्वभौमिक मानव एकता का आध्यात्मिक आंदोलन बन सकता है ।

एक ईश्वर, एक ब्रह्माण्ड और एक विश्व परिवार- वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना और न्याय के साथ शांति हर मनुष्य की ज़िम्मेदारी है । यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय और ईशोपनिषद में कहा गया है कि 'ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् / तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ।' जिसका अर्थ है कि 'ईश्वर प्रदत्त इन संसाधनों का अपनी आवश्यकतानुसार और त्यागपूर्वक उपभोग करो, न कि अपने लालच और उपभोक्तावाद के वशीभूत होकर ।'

सही सोच-विचार रखने वालों का स्पष्ट मत है कि पृथ्वी पर तब तक शांति और न्यायपूर्ण व्यवस्था स्थापित नहीं हो सकती जब तक कि लोगों के बीच धर्म आधारित असमानता और लोगों के बीच आपसी अविश्वास को दूर नहीं किया जाता है । आध्यात्मिक आंदोलन के रूप में वसुधैव कुटुम्बकम्, इस तरह के परिवर्तन का उद्घोष करता है । यह अवधारणा भले ही वेदों से ली गयी है, लेकिन यह हर तरह उप-पहचानों और बाधाओं के बिना एक दुनिया की कल्पना करता है; जिसमें सभी धर्म, संप्रदाय, जाति और क्षेत्र के लोग एक परिवार की तरह रह सकें ।

हर इन्सान इस विचार-दृष्टि को आसानी से ग्रहण कर सकता है, क्योंकि यह सभी धर्मों के आध्यात्मिक मूल में मौजूद है । यह वह प्रकाश है जो सांप्रदायिकता, धार्मिक कट्टरवाद और राजनीतिक उद्देश्यों के लिए धर्म के दुरुपयोग से बाहर है । सभी धर्म अलग-अलग तरीक़ों से एक सृष्टिकर्ता ईश्वर में विश्वास करते हैं । लेकिन वे ज़ोर देकर कहते हैं कि उनका भगवान ही एकमात्र सच्चा भगवान है । ऐसा करने के लिए वे परमेश्वर के विचार को विकृत करते हैं । विडंबना यह है कि ऐसा भगवान मनुष्यों के बीच भेदभाव, घृणा, अन्याय और हिंसा का स्रोत बनता है । इस तरह की धार्मिक-कट्टरता ईश्वर के विचार का मज़ाक़ उड़ाती है ।

इस प्रकार एक ईश्वर का विचार मानवीय एकता की बुनियाद है । वसुधैव कुटुम्बकम् का विचार हमें धार्मिक कट्टरता से दूर तटस्थ दृष्टि और आध्यात्मिक विचार प्रदान करता है, जिसमें स्वामी दयानंद सरस्वती की सांप्रदायिक सद्भाव की विरासत, कार्ल मार्क्स का चिंतन, महात्मा गांधी का सत्याग्रह और अम्बेडकर का संघर्ष समाहित है । इस विचार को लोगों में रोप कर ही विश्व शांति की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है ।



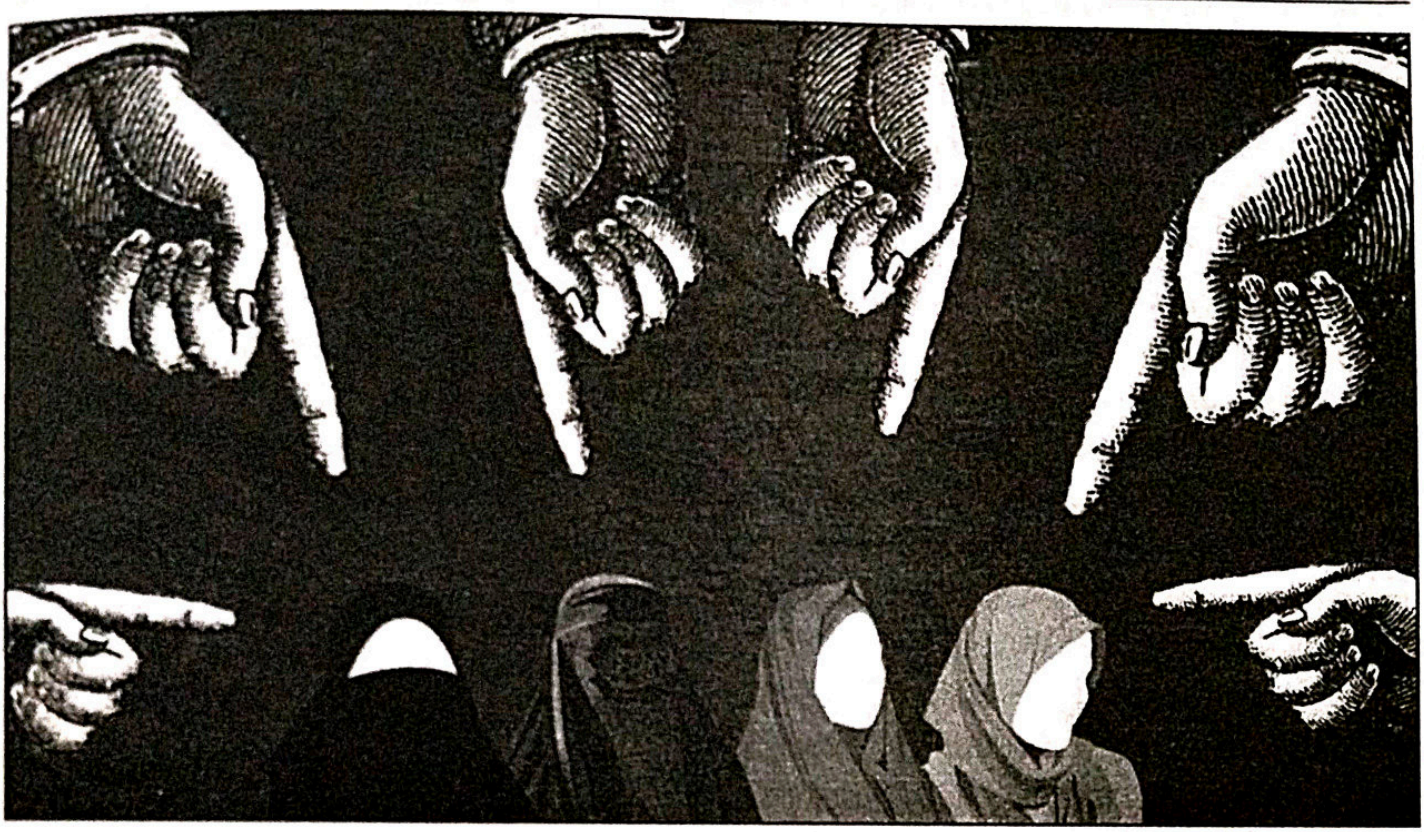

इस्लामोफ़ोबिया अभियान के निहितार्थ

❖ डॉ॰ फ़रहत हुसैन

इस्लामोफ़ोबिया-अर्थात इस्लाम तथा मुसलमानों के प्रति नकारात्मक मानसिकता का पोषण-आज विश्व स्तर पर एक अभियान का रूप धारण कर चुका है। इस्लामोफ़ोबिया वास्तव में इस्लाम तथा मुसलमानों के प्रति काल्पनिक भय उत्पन्न करना है। इस भय के द्वारा नफ़रत, दुश्मनी, दुर्भावना तथा नस्लवादी भेदभाव को बढ़ावा देकर मुसलमानों की छवि बिगाड़ने का उद्देश्य है और यह सिद्ध करने का प्रयास है कि ये लोग समाज के लिए हानिकारक और घातक हैं। जब यह नकारात्मक सोच समाज में फैलने लगती है तो मुसलमान तथा उनका सम्पूर्ण कल्चर हमले की चपेट में आ जाता है, तर्क, विवेक एवं वास्तविकता कहीं गुम हो जाती है तथा अविवेकपूर्ण भावनाओं के सहारे समाज में भय का वातावरण व्याप्त हो जाता है। गत कुछ वर्षों में इसमें वृद्धि देखने को मिली है। इसके पीछे सदियों पुराने पूर्वाग्रह भी हैं और कुछ नयी 'ज़रूरतें' एवं निहितार्थ भी हैं ताकि इस्लाम की अच्छी छवि लोगों की दृष्टि से ओझल रहे तथा मुसलमानों को भय के इस वातावरण में दबाव में रखकर अपने आर्थिक एवं राजनैतिक वर्चस्व के एजेंडे को लागू किया जाए।

यद्यपि अभियान को अभी उतनी सफलता नहीं मिली जितना उसके प्रायोजक चाहते हैं। बल्कि इसके विपरीत इस्लाम को जानने की जिज्ञासा बढ़ी है, पश्चिम में इस नकारात्मक प्रचार से इस्लाम चर्चा का विषय बना और ग़ैर-मुस्लिम बुद्धिजीवियों ने इस्लामोफ़ोबिया एवं नस्लवाद के विरुद्ध आवाज़ उठायी तथा मुसलमानों के साथ एकजुटता का प्रदर्शन किया।

केनेडा एवं न्यूज़ीलैंड इसके उदाहरण हैं। चर्च तथा दलाईलामा के वक्तव्य भी सराहनीय हैं। फिर भी क्योंकि एक निराधार एवं नकारात्मक सोच बड़े पैमाने पर फैलायी जा रही है और यह सिलसिला जारी है, इसलिए इसके उद्देश्यों एवं निहितार्थ को समझना प्रत्येक न्यायप्रिय व्यक्ति के लिए आवश्यक है, जिससे मानवजाति विशेष कर हमारे देशवासी समय रहते सचेत हो जाएं।

पृष्ठभूमि

डेढ़ हज़ार वर्ष पूर्व हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के द्वारा जिस सामाजिक क्रांति की शुरुआत हुई उससे जहां एक ओर जनमानस ने सुख शांति, बराबरी, न्याय तथा हमदर्दी की ठंडी छांव का आभास किया वहीं सत्तासीन तथा पूर्वाग्रहों से ग्रस्त और संकीर्ण मानसिकता रखने वाले लोगों ने इस्लाम के प्रति नकारात्मक सोच भी रखी और दुश्मनी पर उतर आये, यहां तक कि युद्धरत भी रहे । इधर गत शताब्दी में दो 'इज़्म' कम्युनिज़्म तथा कैपिटलिज़्म (पूंजीवाद) का विश्व स्तर पर वर्चस्व हुआ । सोवियत यूनियन के बिखराव के कारण कम्यूनिज़्म का जादू समाप्त हो गया तथा पूंजीवादी प्रणाली में निहित स्वाभाविक दोषों के चलते सामाजिक विघटन, आर्थिक संकट तथा राजनैतिक अस्थिरता आदि के कारण यह प्रणाली भी अपना प्रभाव खोने लगी और एक वैचारिक शून्यता-सी प्रतीत होने लगी ।

यही वह समय था जब इस्लाम एक प्रणाली या व्यवस्था की हैसियत से सामने आया तथा उच्च स्तरीय अकादमिक शोध के द्वारा विश्व की आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं के समाधान में प्रभावी वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा, जिसकी अनेक ग़ैर-मुस्लिम प्रतिष्ठित विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों ने सराहना की और प्रस्तुत तथ्यों का समर्थन एवं अनुमोदन किया । परन्तु यही चीज़ कुछ लोगों को अच्छी नहीं लगी, उन्होंने इस्लाम के योगदान को स्वीकारने के बजाय उसे अपने कल्चर के लिए ख़तरा समझा । यहीं से इस्लामोफ़ोबिया या इस्लाम के प्रति डर पैदा करने की शुरुआत हुई ।

इस विषय पर किताबें भी सामने आयीं उनमें Samuel Huntington की पुस्तक Clash of Civilizations (सभ्यताओं का टकराव) प्रमुख हैं, जिसमें लेखक ने निष्कर्ष निकाला कि भविष्य में विश्व की नौ सभ्यताओं में से आठ सभ्यताएं एक ख़ेमे में होंगी, जिनका मुक़ाबला इस्लामी सभ्यता से होगा । अर्थात पश्चिम ने यह डर उत्पन्न किया कि अब टकराव इस्लाम और मुसलमानों से है और उनकी सभ्यता को अब अगर कोई चुनौती दे सकता है तो वह इस्लाम है। यह है इस्लामोफ़ोबिया की पृष्ठभूमि । स्पष्ट है कि इस्लामोफ़ोबिया, इस्लाम तथा मुसलमानों के विरुद्ध भय, घृणा एवं पूर्वाग्रह से परिपूर्ण मानसिकता का द्योतक है । प्रचार-प्रसार एवं प्रोपगैंडे के द्वारा कुछ तथ्यहीन एवं निराधार आरोप इस्लाम तथा मुसलमानों से जोड़ दिये गये हैं, जैसे कि हिंसा, कट्टरता, मुख्यधारा से अलगाव, अपने धर्म के प्रति अति संवेदनशीलता तथा आतंकवाद का पोषण ।

मीडिया द्वारा इस्लामोफ़ोबिया को ख़ूब उछाला गया । 9/11 की घटना के बाद इसमें और वृद्धि हुई । विश्व स्तर पर इस्लाम विरोधी लॉबी सक्रिय है, जिसने इस्लाम के प्रति 'भय' पैदा करने में कोई क़सर नहीं उठा रखी । कुछ अन्य लोग इस्लाम और मुसलमानों के बारे में जानकारी के अभाव में प्रोपगैंडे तथा भ्रांति का शिकार होकर भयभीत हो जाते हैं तथा वस्तुस्थिति तक पहुंचने का प्रयास नहीं करते । इस प्रकार इस्लाम तथा मुसलमानों की अत्यंत भयानक तस्वीर प्रस्तुत की गयी और मुसलमान नफ़रत, तिरस्कार और भेदभाव का शिकार हुए । इस्लामोफ़ोबिया मुसलमानों की नयी पीढ़ी के समक्ष एक बड़ी रुकावट है तथा उनके मानवाधिकारों का हनन है ।

भारत

भारत भी इस्लामोफ़ोबिया के वैश्विक अभियान से अछूता नहीं रह सका । यहां भी इस्लाम और मुसलमानों के प्रति नकारात्मक सोच को पोषित किया गया । घृणा, भय, वैमनस्य तथा पूर्वाग्रह को बढ़ावा दिया गया । यहां डर का यह वातावरण मुसलमानों के प्रति ही अधिक है, जबकि अधिकांश ग़ैर-मुस्लिम भाई इस्लाम, क़ुरआन और हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के प्रति श्रद्धा भाव रखते हैं ।

मुसलमानों से नाराज़गी के पीछे कुछ ऐतिहासिक तथा राजनैतिक कारण हैं । आठ सौ साल के मुस्लिम शासनकाल की कुछ कमियां भी थीं । अंग्रेज़ों ने अपने शासनकाल में उन्हें उजागर करने के साथ असंख्य झूठी मनगढ़ंत घटनाएं भी इतिहास का हिस्सा बनाकर प्रस्तुत कर दीं ताकि दो बड़े समुदाय आपस में लड़ते रहें तथा वे हुकूमत करते रहें । स्वतंत्रता आन्दोलन में यद्यपि दोनों समुदाय बराबर से शरीक रहे परन्तु देश के विभाजन का आपसी संबंधों पर बुरा प्रभाव पड़ा ।

स्वतंत्र भारत में हालात सुधरने के बजाय और विकट हुए परिणामस्वरूप सांप्रदायिक दंगे हुए और बाबरी मस्जिद विध्वंस जैसी दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी । इधर कुछ वर्षों से सत्ता के ध्रुवीकरण के लिए मुस्लिम दुश्मनी का प्रयोग किया गया और उससे सत्ता प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त भी हुआ, परन्तु समाज को घोर आघात पहुंचा । न्याय, हमदर्दी, मानवता

भी इस नकारात्मक मानसिकता की भेंट चढ़ गयी और भीड़ द्वारा हिंसा (Mob Lynching) के रूप में सभ्य समाज के दामन पर दाग़ लग गया । इस कुकृत्य में लिप्त लोगों को सम्मानित करने और इस पर सभ्य समाज के मूकदर्शक बने रहने ने भी अनेक प्रश्न खड़े कर दिये । इस सब में भारतीय मीडिया की भूमिका अत्यंत नकारात्मक रही । पाठ्य-पुस्तकों एवं शैक्षिक संस्थाओं में भी नयी पीढ़ी के मन में 'नफ़रत' के बीज बोये गये ।

बिन्दु क्या हैं ?

वह बिन्दु क्या हैं, जिन्हें आधार बनाकर नफ़रत और दुश्मनी का माहौल बनाया जा रहा है, उसमें मुख्यत: जिहाद, हिंसा, गो-हत्या, लव-जिहाद, जनसंख्या वृद्धि तथा इस्लामी रीति-रिवाज निशाने पर है । कुरआन के जिहाद संबंधी आदेशों को संदर्भ तथा प्रसंग से अलग करके मुसलमानों को हिंसा के पोषक के रूप में प्रस्तुत किया गया । इस संबंध में सभी आपत्तियों के तर्कपूर्ण उत्तर दिये जा चुके हैं । आतंक या किसी भी प्रकार की हिंसा या देश के विरुद्ध कार्य का मुस्लिम समाज ने कभी साथ नहीं दिया । गो-हत्या का मामला उठाया गया, जिसे आज तक गरमाया जा रहा है ।



इसमें भी तथ्य कम तथा राजनीति अधिक है । धर्मान्तरण एक स्वाभाविक क्रिया है, इसमें ज़ोर-ज़बरदस्ती इस्लामी क़ानून के विरुद्ध है । इसको मुद्दा बनाकर लव-जिहाद की नयी शब्दावली गढ़ी गयी । अब जनसंख्या नियंत्रण के नाम पर मुस्लिम समाज को निशाना बनाया जा रहा है, जबकि आंकड़े गवाह हैं कि मुसलमानों की वृद्धि दर में निरंतर कमी आयी है ।

मुसलमानों की धार्मिक मान्यताओं–अज़ान, नमाज़, क़ब्रिस्तान, पर्सनल लॉ, पर्दा, मदरसे आदि पर आक्षेप किये गयें । इसी के साथ अनेक काल्पनिक आरोप मुसलमानों से जोड़ दिये गये । जैसे–भारत की ग़रीबी के लिए मुस्लिम शासक ज़िम्मेदार हैं, मुस्लिम शासकों ने बहुत अत्याचार किये, मंदिरों को ध्वस्त किया, मुसलमान विभाजन के ज़िम्मेदार हैं, आदि आदि । यह और इस प्रकार के सभी ख़यालों आरोपों का निराधार होना सिद्ध किया जा चुका है । परन्तु इन बातों की पुनरावृत्ति समाप्त नहीं होती । इन धारणाओं एवं इस मानसिकता को तैयार करने में ज़हरीले भाषणों (Hate Speeches) की बड़ी भूमिका है । मीडिया जिस पर देश तथा समाज को संतुलित रखने का दायित्व था, उसके रोल पर प्रश्नचिन्ह लग रहा है । सोशल मीडिया का रोल ख़तरनाक होता जा रहा है । फेक समाचारों और वीडियोज़ के द्वारा समाज को ख़तरा पैदा हो गया है ।

देश हित में नहीं

इस्लाम और मुसलमानों के प्रति भय, घृणा, दुश्मनी का माहौल पैदा करना, कुछ लोगों के राजनैतिक हित में हो सकता है तथा कुछ लोगों के पूर्वाग्रहों की पूर्ति कर सकता है, उन्हें क्षणिक सुख दे सकता है, परन्तु नयी पीढ़ी में भारत के एक बड़े समुदाय के प्रति दुर्भावना भर देना किसी भी स्थिति में देश हित में नहीं होगा ।

भारत विश्व मानचित्र पर एक समृद्ध शक्तिशाली एवं नेतृत्व क्षमता रखने वाले राष्ट्र के रूप में उभर रहा है । यहां मानव संसाधन विशेषकर युवा वर्ग हैं, शिक्षण संस्थाएं हैं, अपार प्राकृतिक संसाधन हैं । इन सबके बल बूते हमारा देश, विश्व मानचित्र पर अपना दबदबा बना सकता है । बशर्ते कि देश का राजनैतिक एवं सामाजिक वातावरण शांतिमय हो, यहां क़ानून का शासन हो, इन्साफ़ को सर्वोपरि रखा जाए । सभी धर्मों और उनके अनुयायियों को समान दृष्टि से देखा जाए ।

यही भारत की आत्मा है और यही भारत का संविधान कहता है । भेदभाव किसी के साथ न हो, नफ़रत को बढ़ावा न दिया जाए, किसी के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रस्त होकर फ़ैसले न लिए जाएं । धर्म, जाति, भाषा क्षेत्र या लिंग के आधार पर

कोई अन्तर न हो । परस्पर भाईचारे सौहार्द एवं सहयोग के आधार पर भारत निश्चित रूप से विश्व मानचित्र पर अगुवाई करेगा ऐसा हमारा विश्वास है ।

इस्लाम से मत डरिए

इस्लाम धर्म से डरने की आवश्यकता नहीं । यह सब धर्मों के आदर की शिक्षा देता है एवं सभी धर्म ग्रंथों को मान्यता देता है (कुरआन 2:4)। सभी सच्चे धर्म गुरुओं (ईशदूतों) में आस्था का आदेश देता है । (2:285)। यह भी आदेश देता है कि धर्म के मामले में ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं (2:256)। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए रहमत और दयालुता बताया गया है (21:107)। उनकी शिक्षाएं संपूर्ण मानवजाति के लिए है ।

संस्कृत के विद्वानों के शोधानुसार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आगमन की भविष्यवाणी भारतीय धर्म ग्रंथों में उल्लिखित है (देखिए पंडित वेद प्रकाश उपाध्याय के शोध)। कुरआन की शिक्षाएं समस्त इन्सानों के लिए हैं । ईश-भक्ति, ईशपरायणता, परलोक में मोक्ष की प्राप्ति, संसार में इन्साफ़, बराबरी, शोषण मुक्त, प्रेमभाव से परिपूर्ण सामाजिक जीवन एवं समृद्ध आर्थिक वातावरण पर बल दिया गया है ।

हां, प्रत्येक समाज की भांति मुस्लिम समाज में भी कुछ लोग सही सिद्धांतों से हटकर असत्य, अन्याय तथा शोषण के मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं, हिंसा और आतंक जैसे कुकृत्य तक जा सकते हैं । ऐसे लोगों का समर्थन तो दूर उन पर कठोर दंडात्मक कार्यवाही का इस्लाम आदेश देता है, जो एक निष्पक्ष न्यायिक प्रणाली के माध्यम से हो न कि भीड़ तंत्र या पूर्वाग्रहग्रस्त लोगों के द्वारा । मुस्लिम समाज की इस ज़िम्मेदारी से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि वे समाज सुधार के कार्य को दृढ़ता से करता रहे । हर प्रकार की नकारात्मक सोच से लोगों को बचाया जाए । उनका आचरण कुरआन तथा हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाओं के अनुरूप हो, वे सबके लिए रहमत साबित हों, समाज तथा अपने वतन के विकास एवं उत्थान में तथा यहां अमन शांति व सदाचार के माहौल को बनाने में अपनी पूरी शक्ति लगा दें, यही इस्लाम का आह्वान है और ईश्वर को भी यही पसन्द है ।

मुसलमानों के धर्मगुरुओं, बुद्धिजीवियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं को चाहिए कि देशवासी भाई बहनों की भ्रांतियों को उनके मन के काल्पनिक या मीडिया द्वारा बैठाए गये भय को निकालें । आम मुसलमान भी अपने आचरण से उनको इस्लाम की शिक्षाओं से परिचित कराएं । प्रतिकूल परिस्थितियों में भी न्याय के मार्ग से विचलित न हों । किसी प्रतिक्रिया या प्रतिशोध का शिकार न हों, अल्लाह पर भरोसा रखें ।

न्यायप्रिय लोग आगे आएं

समाज में नफ़रत तथा दुश्मनी के वातावरण से हो सकता है कुछ लोगों को सामयिक रूप से कुछ राजनैतिक लाभ प्राप्त हो जाए, परन्तु यह देश तथा समाज के लिए घातक है । सभ्य समाज में भीड़ द्वारा हत्याएं, नवजवानों को हथियार चलाने की ट्रेनिंग, एक समुदाय विशेष को प्रत्येक मुद्दे पर दोषी मानते हुए एक 'विलेन' बनाकर पेश करना, इतिहास की मनगढ़ंत व्याख्या करना, यह प्रचारित करना कि इस्लाम और मुसलमानों में कुछ भी भला नहीं है तथा मुसलमानों के योगदान को स्वीकार करने के स्थान पर उनमें केवल बुराई ही देखना और दिखाना, कुछ गिने-चुने लोगों के अपराधों के लिए पूरे समुदाय को 'गुनाहगार' घोषित कर देना किसी भी प्रकार उचित एवं न्यायसंगत नहीं है । इससे बड़ी त्रासदी और क्या होगी कि जुल्म व ज़्यादती करने वाले अत्याचारियों का महिमा-मंडन किया जाए उन्हें सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया जाए ।

इस वातावरण से समाज को निकालने के लिए सभी संप्रदायों के प्रभावशाली एवं प्रतिष्ठित न्यायप्रिय लोग आगे आएं । सभी पक्षों के बीच सौहार्द बनाने के लिए संपर्क एवं वार्ता की प्रक्रिया जारी रहनी चाहिए । जिस बड़े पैमाने पर माहौल बिगाड़ा जा रहा है उसका नोटिस लेना चाहिए । प्रिंट मीडिया, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया, सोशल मीडिया तथा शैक्षणिक संस्थाओं को भी सकारात्मक भूमिका के लिए तैयार करने की आवश्यकता है ।

इससे पहले कि नफ़रत का विष घातक हो जाए हम सचेत हो जाएं । देश में सभी धर्मों और संप्रदायों के बीच वही आपसी विश्वास, सौहार्द एवं भाईचारा स्थापित हो जाए, जिसके लिए भारत विख्यात है । यही वह फार्मूला है जिससे अमन शान्ति एवं आर्थिक खुशहाली स्थापित होगी तथा भारत विश्व पटल पर अगुवाई की भूमिका निभाने की स्थिति में होगा ।

विपरीत परिस्थितियों में भी गंभीर विचार-विमर्श का मंच बनी रहीं

क़दम जमाए हुए हैं पत्रिकाएं

❖ पल्लव

हिंदी में साहित्यिक पत्रिकाओं का इतिहास काफ़ी पुराना और समृद्ध है । आधुनिक हिंदी के जन्मदाता भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने 9 सितम्बर 1868 को 'कविवचन सुधा' नाम की एक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया था । इसको हिंदी की पहली लघु पत्रिका माना जाता है, जिसमें साहित्यिक और सामाजिक विषय एक साथ उठाए जाते थे । लघु पत्रिका से आशय ऐसी पत्रिका से है जिसका उद्देश्य सामाजिक हो, जो व्यावसायिकता के दबाव से मुक्त हो और जनपक्षधरता जिसका मूल गुण हो । बड़ी पूंजी के साथ जुड़े दबाव और व्यावसायिकता के झंझट साहित्य की स्वाधीनता को नुक़सान पहुंचाते हैं । लघु पत्रिकाओं के रास्ते यह स्वतंत्र चेतना कुंद होने से बच सकती है ।

सत्तर के दशक में अनेक व्यावसायिक लोकप्रिय पत्रिकाओं की मौजूदगी के बावजूद हिंदी में लघु पत्रिकाओं ने गति पकड़ी । उस दौर में कई साहित्यकारों ने बड़ी पत्रिकाओं का बहिष्कार किया क्योंकि उनकी समझ थी कि इन पत्रिकाओं का उद्देश्य जनपक्षधर साहित्य को बढ़ावा देने के बजाय ऐसी बहसों और विषयों में पाठकों को उलझाए रखना है जो यथास्थितिवादी होते थे । इन कारणों से उस दौर में स्वयं लेखकों ने ही अपने सीमित साधनों से छोटी-छोटी साहित्यिक पत्रिकाएं निकालना शुरू किया जो पाठक को अपने समय के सही सवालों को समझने के अवसर देती थीं ।

इनमें जो पत्रिका लघु पत्रिका आंदोलन की सिरमौर बनी, वह थी 'पहल', जिसे कहानीकार ज्ञानरंजन और आलोचक कमला प्रसाद ने मिलकर निकालना शुरू किया था और जिसे प्रगतिशील लेखक संघ का समर्थन मिला था । इनके साथ 'क्यों', 'कंक', 'अणिमा', 'ओर', 'बिंदु', 'लहर', 'अभिरुचि', 'कथा' और 'वातायन' जैसी अनेक पत्रिकाएं देश के कई छोटे-बड़े शहरों-क़स्बों से निकलकर आंदोलन का वातावरण बना रही थीं ।

जयपुर में 2001 में लघु पत्रिकाओं का चौथा राष्ट्रीय सम्मलेन आयोजित किया गया था । उस सम्मेलन में सर्वसम्मति से तय हुआ था कि हर साल 9 सितम्बर को लघु पत्रिका दिवस मनाया जाएगा । अस्ल में विभिन्न माध्यमों से अपसंस्कृति के लगातार प्रसार के चलते हाल के वर्षों में साहित्य के सामने कई चुनौतियां पैदा हुई हैं । ऐसे समय में लघु पत्रिकाओं की ज़रूरत फिर से महसूस की जा रही है । इन दिनों हिंदी में लगभग चार सौ लघु पत्रिकाएं नियमित-अनियमित रूप से निकल रही हैं जो प्रायः त्रैमासिक, चातुर्मासिक या अनियतकालीन हैं । मासिक और द्वैमासिक पत्रिकाएं भी हैं लेकिन बहुत कम, और इसके कारण स्पष्ट हैं । अच्छी रचना सामग्री जुटाना और छपाई के लिए धन का इन्तिज़ाम करना दोहरी चुनौती बनकर सामने आता है । मान लिया गया है कि इंटरनेट ने किताबों और साहित्य के पाठकों को घटाया है, लेकिन लघु पत्रिकाओं के साथ-साथ किताबों के प्रकाशन में हो रही ज़बरदस्त वृद्धि इस बात को ग़लत साबित करती है ।

दूसरी बात यह कि किताबें जिस तरह से महंगी और साधारण पाठकों से दूर हो रही हैं, इसे देखते हुए इन पत्रिकाओं की मौजूदगी साहित्य की गतिशीलता की पहचान है । यह भी तथ्य है कि विगत पचीस-तीस सालों की सबसे उम्दा रचनाशीलता इन लघु पत्रिकाओं के माध्यम से ही सामने आयी है । इस साल फ़रवरी में कोलकाता में लघु पत्रिकाओं के संपादकों का सम्मेलन हुआ था, जिसमें एक बार फिर इनके संपादकों ने अपने संकल्प दोहराए और नयी चुनौतियों के लिए खुद को तैयार करने की प्रतिबद्धता दर्शायी ।

लघु पत्रिका निकालने वाला व्यक्ति पीर बावर्ची भिश्ती

खर सब कुछ होता है । संपादन से लेकर विज्ञापन जुटाने और पत्रिका डिस्पैच करने तक का काम खुद ही करना होता है । सबसे ज़्यादा दिक़्क़त आती है विज्ञापन जुटाने में । पहले तो विज्ञापनदाता को यही समझाना मुश्किल होता है कि लघु पत्रिका है क्या चीज़ । किसी शुभचिंतक की सलाह पर मैं एक बड़े राजकीय उपक्रम में अपनी पत्रिका 'बनास जन' के लिए विज्ञापन लेने गया । अधिकारी ने पूछा–लघु पत्रिका क्या होती है/मैंने अपनी पत्रिका का अंक दिया और उन्हें कुछ लघु पत्रिकाओं के नाम बताए । वे बोले–यह तो इतनी मोटी और भारी है । लघु कैसे हुई/मैंने कहा–संसाधन की दृष्टि से ।

वे मुस्कुराए और मेरे साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान की परीक्षा लेने लगे । बात आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पर आ ठहरी । उन्होंने पूछा, इधर कोई किताब आयी है द्विवेदी जी पर/मैंने 'व्योमकेश दरवेश' का नाम लिया । उन्होंने प्रसन्नता दर्शायी । शायद वे भी इस किताब को पढ़ चुके थे। बहरहाल, विज्ञापन मिल गया । रात को जब मैंने घर लौटकर पुस्तक के लेखक विश्वनाथ त्रिपाठी को क़िस्सा सुनाया तो वे मुस्कुराकर बोले–दरवेश है न किताब के शीर्षक में !

हिंदी के एक वरिष्ठ आलोचक पत्रिका निकालने के लिए बार-बार क़र्ज़ लेते थे । क़र्ज़ देने वाले व्यक्ति ने एक बार उनके एक मित्र से पूछा, 'प्रोफ़ेसर साहब वेश्यागामी हैं क्या/' मित्र ने हैरत भरी नज़रों से पूछा, 'क्यों/' उसने कहा, 'इतना क़र्ज़ तो उसी टाइप का आदमी लेता है ।' एक सज्जन नें तो पत्रिका निकालने के लिए अपनी पत्नी के गहने तक गिरवी रख दिये थे ।

ज़ाहिर है, लघु पत्रिका निकालने के लिए एक तरह का जुनून ज़रूरी होता है । लघु पत्रिकाओं के लिए अभी सबसे बड़ी चुनौती अपनी विश्वसनीयता को बचाए रखते हुए अपना विस्तार करने की है । विशाल जनसंख्या वाले हिंदी समाज में दो-चार सौ की संख्या में एक पत्रिका का निकलना और ख़ास पाठकों तक सीमित रहना किसी भी तरह से संतोषप्रद नहीं कहा जा सकता । अकादमिक जगत में शोध की तरफ़ विद्यार्थियों का रुझान बढ़ा है, लेकिन यह चुनौती भी सामने है कि उन्हें कैरियर के लिए कुछ भी छपने-छपाने के दबाव से मुक्त होकर गंभीर, स्तरीय और गुणवत्तापूर्ण लेखन के लिए प्रोत्साहित किया जाए ।

(पृष्ठ 31 का शेष)

है । गुरु नानक जी के बाद सिख-साहित्य में 'वाहे गुरु' का शब्द प्रयुक्त किया गया है । नानक जी ने अल्लाह, ख़ुदा, परवरदिगार और साहब का शब्द भी इस्तेमाल किया है । उन्होंने पौराणिक भक्ति में प्रयुक्त विभिन्न नामों का भी इस्तेमाल किया है । उदाहरण के लिए राम, गोपाल, मुरारी और नारायण ।

यहूदी मत में एक ईश्वर की धारणा है । यहूदी क़ौम ख़ुदा के साथ विशेष संबंध का दावा करती है । उनके धर्मग्रंथों में यह बात भी लिखी हुई है कि ख़ुदा ने एक बार मशहूर पैग़म्बर हज़रत याक़ूब (अलैहि॰) से रात भर कुश्ती लड़ी और हार गया । यहूदी मत में ख़ुदा की धारणा से अधिक इस बात को अधिक महत्व दिया गया है कि यहूदी क़ौम ख़ुदा की चहेती और विशिष्ट क़ौम है । यह दुनिया में शासन-प्रशासन और परलोक में स्वर्ग के लिए पैदा की गयी है । (मुताला-ए-मज़ाहिब, पृ॰ 150, 151)

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि विभिन्न धर्मों एवं मतों में ख़ुदा की कल्पना अलग-अलग ही नहीं, बल्कि परस्पर एक-दूसरे से टकराने वाली और पूर्णतः एक-दूसरे के प्रतिकूल भी है । ऐसी स्थिति में क्या एक ही समय में इन सारे धर्मों की धारणाएं सही हो सकती हैं ? स्पष्ट है कि दो परस्पर विरोधी और विपरीत बातों में से कोई एक ही बात सही हो सकती है और होना भी यही चाहिए । अगर हम बुद्धि-विवेक, तर्क और सोच-विचार के आधार पर ख़ुदा की किसी एक धारणा को सही और सच्चा मानें और शेष धारणाओं को सही न मानें, तो इससे अन्य धर्मों का अपमान सिद्ध नहीं होता । यह बात तो सैद्धांतिक रूप से सही है कि धर्मों का अपमान और उनकी निन्दा न की जाए, लेकिन जो 'सच' है उसे 'सच' तो कहना ही होगा । इसके बजाय अगर हम हठ करते हैं कि सभी धर्मों को सत्य समझा जाए तो इसका स्पष्ट अर्थ यह होगा कि जो वास्तव में ईश्वर नहीं है उसको भी ईश्वर मानें या वास्तविक पूज्य-प्रभु के समान समझें । जो ईश्वर नहीं, उसको सृष्टि का रचयिता और ईश्वर मानना वास्तव में वास्तविक पूज्य-प्रभु का इन्कार करना और ईश्वर के साथ खुल्लम-खुल्ला उद्दंडता और अवज्ञा है । ऐसे आचरण और व्यवहार के कारण मृत्यु के बाद के जीवन में मनुष्य ईश्वर के पुरस्कार का पात्र होगा या दंड का भागी ? इस प्रश्न पर विचार करने की आवश्यकता है ।

मीठी नींद

◆ प्रवीण कुमार सहगल

"अभी तक यहीं अटका है तू...क्या वह मेज मैं साफ़ करूंगा ? चल जल्दी से जा वहां । ग्राहक खड़ा है । पहले मेज साफ़ कर, फिर यह बर्तन धोना ।"

दीपू जल्दी से वहां से उठा और भागा कपड़ा लेकर मेज साफ़ करने को । ठंड के मारे हाथ नहीं चल रहे थे, उस पर पतली-सी एक कमीज़, जिसकी आस्तीन बार-बार नीचे आकर काम करते वक़्त गीली हो गयी थी, पर काम तो करना था न, नहीं तो यह ज़ालिम मालिक फिर से पैसे काट लेगा...इसको तो बस पैसे काटने का बहाना चाहिए ।

दीपू यहीं गांव के क़रीब एक ढाबे में काम करता था । पढ़ने का उसे बेहद शौक़ था...पर जिस परिवार में जन्म लिया था वहां काम ही पढ़ाई थी । बीमार मां का इलाज ...शराबी पिता का क़हर...बचपन को कहीं वक़्त से पहले ही अलविदा कह गया था । यदि पढ़ने की वह सोचे भी तो परिवार का क्या होगा । घर में बीमार मां और छोटी-सी बहन है जो सिर्फ़ अभी 5 साल की है ।

कभी उसने भी अच्छे दिन देखे थे । तब उसके पिता शराब नहीं पीते थे...बस जम के मेहनत करते । मां भी तब दो चार घरों में काम करके कुछ पैसे ले आती थी । कभी-कभी वह भी अपनी मां के साथ उन बड़े घरों में चला जाता था ।

उसकी भोली-सी सूरत देखकर कभी-कभी कोई कोठी की मालकिन अपने बच्चों के टूटे-फूटे खिलौने या कुछ पुराने कपड़े दे देती थी । पर उसकी निगाह तब भी रंग-बिरंगी तस्वीरों वाली किताबों पर अटकी रहती थी ।

फिर न जाने धीरे-धीरे सब बदलने लगा । उसके पिता शराब पीकर मां पर हाथ उठाने लगे और मां लगातार बीमार होती चली गयी । अभी वह 9 साल का भी नहीं हुआ था कि पिता की शराब के नशे में एक एक्सीडेंट में मौत हो गयी और उसके सपनों ने दम तोड़ना शुरू कर दिया था ।

"अरे ! कहां गुम हो गया है हरामख़ोर ? कहीं भी खड़ा-खड़ा सो जाता है निकम्मा । चल इधर मर जल्दी से और 4 नम्बर मेज पर चाय-बिस्किट देकर आ ।"

मालिक की आवाज़ सुनकर वह अपनी सोच से बाहर आ गया और जल्दी से उस तरफ़ भागा ।

वह भी सुबह का भूखा है, बिस्किट देखकर दीपू को याद आया । सुबह से उठकर रात के 12 बजे तक काम में लगता है, तो फिर होश कहां रहता है...और आज तो मां की दवा भी ख़त्म है । सही मूड देखकर आज ही मालिक से पैसे की बात करता हूं...सोचकर वह जल्दी-जल्दी हाथ चलाने लगा । आज काम में कोई ढील नहीं देगा...मालिक को ख़ुश कर देगा । शाम को काम कुछ ख़त्म हुआ तो वह डरता-डरता मालिक के पास गया ।

"क्या है बे...क्यों ख़ड़ा है यहां ?"

"आज कुछ पैसे मिल जाते मालिक ।"

एक भद्दी-सी गाली उसके मालिक ने मुंह से निकाली और घुड़कते हुए कहा–"नहीं है अभी कुछ पैसे....भाग यहां से...चल अभी काम कर ।"

"दे दो न .मालिक...मां बहुत बीमार है...उसकी दवा लानी है ।"

"अभी चुपचाप से काम कर नहीं तो एक लात दूंगा । समझा कुछ ।" वह भीगी आंखें लिए वहां से यह सोचकर हट गया कि दिन ही बुरे चल रहे हैं ।

बिट्टू भी उसके साथ वहीं ढाबे में काम करता था । उससे कुछ बड़ा था और वह भी उसकी तरह ही यूं हालात का मारा था । वह तो उससे भी ज़्यादा मेहनत करता था । सुबह उठकर अख़बार बांटना और कभी-कभी फ़ुरसत मिलने पर कुछ और काम भी दो पैसे के लिए कर लेता था ।

कुछ दिन 5 बजे जाग कर अख़बार भी बांटा था बिट्टू के साथ, पर वह पैसे भी यूं ही देखते-देखते ख़त्म हो गये और सुबह इतनी जल्दी जागकर फिर देर तक काम भी नहीं हो पाता । मुनिया भी कल कैसे दूध के लिए ज़िद कर रही थी और मां भी रोती आंखों से जैसे कह रही थी कि तेरी यह कच्ची उम्र इतना काम करने की नहीं है । पर क्या करे

वह...लगता है कल फिर सुबह जल्दी उठना ही होगा । यह मालिक तो पैसे नहीं देगा । एक लम्बी गहरी सांस ले के वह फिर से काम में जुट गया । रात को जाकर उसने बिट्टू से कहा कि सुबह वह भी उसके साथ फिर से अख़बार बांटने के लिए चलेगा ।

सुबह उठा तो जैसे सारा शरीर टूट रहा था, लेकिन, आज मां की दवा नहीं आयी तो मां कि तबियत और बिगड़ सकती है । रात भर भी वह अपनी खांसी को दबा के सोने की कोशिश करती रही है । वह उठा और कुछ देर में बिट्टू के पास पहुंच गया ।

बिट्टू ने जैसे ही उसका हाथ पकड़ा साथ चलने के लिए तो चौंककर कहा ''अरे ! तुझे तो बहुत तेज़ बुख़ार है, तू कैसे काम करेगा ? आज तो ठंड भी बहुत है...तू रहने दे आज ।''

''नहीं-नहीं, आज यह काम करना बहुत ज़रूरी है...नहीं तो मां की दवा नहीं आ पाएगी । वो ढाबे के मालिक का क्या भरोसा कि फिर आज पैसे न दे और अभी 1 तारीख़ के आने में बहुत देर है...घर में कुछ खाने को भी नहीं है । तू चल, मैं अभी कुछ देर में ठीक हो जाऊंगा ।''

सुबह के अख़बार बांट कर कुछ पैसे हाथ में आये तो चाय पीने की इच्छा जाग गयी । चलो ढाबे में जाकर देखता हूं...क्या पता चाय आज मालिक ही पिला दे और ये पैसे बच जाए ।

वह बिट्टू के साथ ढाबे पहुंचा और काम में जुट गया । शरीर जवाब दे रहा था...पर जैसे-तैसे उसने काम करना शुरू किया ।

बिट्टू ने उसकी हालत देखकर कहा भी कि आज यहां काम रहने दे, तबियत ठीक नहीं है तेरी । ''मैं काम कर लूंगा, तू चिंता न कर ।''

बिट्टू भी क्या कर सकता था ? चाहे उससे कुछ बड़ा था, पर था तो बच्चा ही न ।

अभी वह एक मेज पर चाय दे रहा था कि ज़ोर से चक्कर आ गया । उस मेज पर बैठे व्यक्ति ने जैसे ही उसको पकड़ा कि न गिरे वह ज़मीन पर...तो वह जैसे चौंक गया और ढाबे के मालिक से बोला, ''अरे इसको तो बहुत तेज़ बुख़ार है...तुम इसके मालिक हो या कसाई ? इतनी छोटी-सी उम्र में इतना काम करवाते हो और यह इतना बीमार है, तब भी तरस नहीं आता तुम्हें इस पर ? मैं अभी तुम्हारी शिकायत करता हूं पुलिस से । जानते हो आजकल बाल मज़दूरी एक अपराध है ? मैं कई दिन से तुम्हारे ढाबे पर आ रहा हूं और देखता हूं कि तुम इससे बहुत ज़्यादा काम लेते हो ।''

यह सुनकर ढाबे का मालिक डर गया । उसने दीपू को झूठे प्यार से देखते हुए कहा, ''तबियत ठीक नहीं थी तो नहीं आना था रे ।''

''...वो मालिक पैसे...मां घर में बहुत बीमार है...दवा लानी थी...।'' उसने बहुत मुश्किल से बोला । उसकी सांस अब जैसे उखड़ने लगी थी ।

''...हां-हां देता हूं ।''

जब तक वह अन्दर से पैसे लाता दीपू बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ा । उसको गिरते देख वह व्यक्ति जो उसके लिए उसके मालिक से लड़ रहा था, तेज़ी से उसके पास भागकर पहुंचा, पर तब तक देर हो चुकी थी । एक और मासूम बचपन मौत की मीठी-सी नींद में सो चुका था और उससे कुछ दूर खड़ा बिट्टू मूक और असहाय नज़रों से सब देख रहा था ।

0291-2658786

HOTEL
Crown Plaza

A/C & Non A/C Air Cooled
Rooms & Dormitory

Opp. Minerva Centre,
Railway Station Road, Jodhpur-342001 (Raj.)
Cell : 9784856007, 9414110345

½ km from the railway station

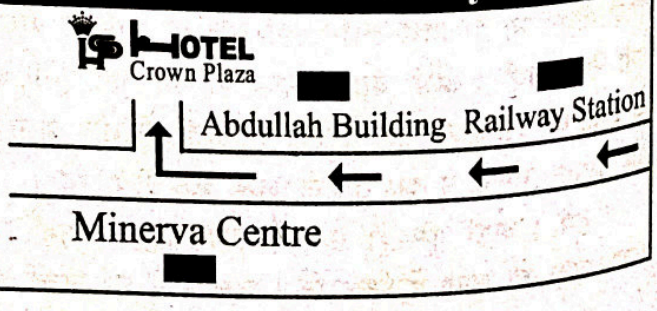

लघुकथाएं

1. आगमन

कुछ दिनों पहले मैं अपने मुहल्ले के मंदिर में गीता का पाठ सुन रहा था । पंडित जी बड़े भाव विभोर स्वर में भगवान कृष्ण के शब्द दोहरा रहे थे ।

''जब धरती पर पाप ही पाप होने लगता है तो मैं जन्म लेता हूं ।''

हमारे जूतों के पास बैठे हुए एक पागल ने पंडित जी को टोक कर कहा : मैं तो जन्म लेकर पागल भी हो चुका हूं, पंडित जी ! मगर कोई मुझे पहचाने भी ।

2. पिछड़ापन

डॉ॰ अपने रोगी को डांट रहे थे, तुम अभी तक 20वीं सदी में जी रहे हो । तुम्हारा इलाज कैसे हो सकता है ?

कई बार समझा चुका हूं की खुली हवा में सांस मत लिया करो, बीमारियों से बचे रहना है तो कृत्रिम ऑक्सीज़न को 1 मिनट के लिए भी अपनी नाक से अलग मत करो।

3. हेड लाइट

अंधेरी रात थी और मैं अपनी मोटर गाड़ी को एक बल खाती हुई अनजानी सड़क पर लिए जा रहा था । मुझे एक समय में सिर्फ़ वहीं तक दिखायी पड़ता था, जहां तक हेड लाइट की रोशनी पड़ रही थी ।

मेरे आगे आगे दौड़ती हुई कोई तीन सौ गज़ की रोशनी ।

और यूं मैं अंधेरे में बढ़ता जा रहा था...।

अचानक मुझे ख़याल आया कि हमारे जीवन के सफ़र में भी तो ऐसा ही होता है ।

4. गुमशुदा

मैं खो गया हूं ।

मैं अपने सामने गंगा को ठाठें मारते हुए देख रहा था ।

अचानक मुझे एहसास होने लगा कि मैं अपने ही मन में डुबकियां लगा-लगाकर डूब रहा हूं ।

पता नहीं कब तक मैं अपने मन की गहराइयों में बेसुध पड़ा रहा और जब आंख खोली तो अपने आपको अपने मन से बाहर यहां किनारे पर पाया...।

5. संपर्क

आप ज़रा मेरी बात को समझने की कोशिश कीजिए!

मैंने जब भी यह नम्बर डायल किया है इसे पहले से लगा हुआ (इंगेज़) पाया है । मैं लगातार इतिज़ार करता रहता हूं, मगर दूसरी ओर से कोई मुझ से बात नहीं करता ।

बस बज...बज...बजज...होता रहता है ।

हां ठीक है यह मेरा ही टेलीफ़ोन नम्बर है, पर ज़रा सोचिए कि मानव ज्ञान का यह क्या कमाल हुआ कि हमारा अपने आप से ही संपर्क न हो ।

6. एक लंबी कहानी

आज भी मेरे साथ वही हुआ, जिसका मुझे डर था । आज भी मेरे साथ कुछ नहीं हुआ ।

7. दृश्य

नहीं तुम उजाड़ नहीं हो । उजाड़ तो वह होता है जिसके दिखने की नौबत ही न आये । नज़र में आ जाएं जो उजाड़ भी गुलज़ार बन जाते हैं।

8. प्रसारण

''एक बात बताइए भगवान ! गंगा आपके सिर से क्यों निकलती है ?''

शिवजी मुस्कुराने लगे, मेरे पैरों के सिर होता तो वहां से भी निकलती । और भगवान सिर से निकलकर पैरों की तरफ़ क्यों बह जाती है ?

शिवजी फिर भी मुस्कुराते रहे, ''न बहे तो नीचे बस्तियों की प्यास कैसे बुझे ।''

9. भूत प्रेत

कुछ भूत अपनी आदत के अनुसार अपनी-अपनी क़ब्रों से निकलकर चांदनी रात में गप्पें हांकने के लिए खुले मैदान में इकट्ठा होकर बैठ गये और बहस करने लगे कि क्या सचमुच भूत होते हैं ।

''नहीं !'' एक ने हंसकर कहा, ''सब मनगढ़ंत बातें हैं ।'' एक और बोला ।

''किसी भी भूत को मालूम नहीं होता कि वही भूत है।''

इसी बीच एक और ने झाड़ियों की ओर इशारा करते हुए भयभीत स्वर में कहा, ''वह देखो !''

चांदनी रात में झाड़ियों के पीछे एक ग़रीब आदमी बड़े ध्यान से लकड़ियां काट रहा था । ''हां ! वही ।''

सारे भूत डरकर चीखने लगे और भाग कर अपनी-अपनी क़ब्रों में जा घुसे ।

● **योगेंद्र पाल**

ڈائریاں اور کیلنڈر 2020

شب وروز (ڈائری) عام اور ڈیلکس ایڈیشن

• ہر صفحے پر قرآنی آیات واحادیث رسولؐ، انبیاء کرام، صحابۂ عظام اور بزرگان سلف کے سبق آموز اقوال • شروع وآخر کے ۳۸ صفحات پر اہم ودل چسپ معلومات • مسنون دعائیں • خطبات جمعہ و نکاح، قربانی، عقیقے، نماز جنازہ اور استخارے کی ماثورات • نقشہ اوقات نماز • اہم سفارت خانے • جماعت اسلامی ہند کے مرکزی وصوبائی دفاتر • لوک سبھا اور راجیہ سبھا کے مسلم ممبران کے پتوں کے علاوہ بہت ساری دوسری معلومات سے مزین ایک دل چسپ ومفید ڈائری۔

• صفحات ۳۲۸، نفیس کاغذ، PVC کور۔

نوٹ: شب وروز ڈائری حسب معمول انگریزی میں بھی شائع ہورہی ہے۔

اسلامی ڈائری (پاکٹ سائز)

• ہر صفحہ قرآنی آیات، احادیث رسولؐ، بزرگوں کے اقوال سے مزین • ۲۵ صفحات پر مشتمل اہم اور ضروری معلومات • کل صفحات: ۲۲۴ نفیس اور عمدہ کاغذ۔

کیلنڈر

• چار رنگوں پر مشتمل سفید آرٹ پیپر پر نفیس طباعت
• اردو ہندی اور انگریزی تراجم کے ساتھ ایک دیدہ زیب کیلنڈر
• 15x20 سائز میں ۳ ورقی دوطرفہ طباعت، ماحولیات کے تحفظ پر دیدہ زیب ڈیزائن اور ہر مہینے کی تاریخیں نمایاں حروف میں۔

نوٹ

اسلامی کیلنڈر اور شب وروز ڈائری پر اپنے ادارے کا نام چھپوانے کے لیے ۱۵/اکتوبر ۲۰۱۹ تک تفصیلات لازماً ارسال فرمادیں۔
شب وروز اور کیلنڈر کے لیے کم از کم مطلوبہ تعداد بالترتیب 100 اور 1000 ہے۔



مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز، نئی دہلی ۲۵ | MMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi - 110025
Phone: 26981652,26984347 Mob: 7290092401
E-mail: info@mmipublishers.net Website: www.mmipublishers.net

آرڈر کے لیے رابطہ کریں: E-mail: info@mmipublishers.net Customer Care No : 7290092403

हुमायूं का मक़बरा



सामान्य विवरण

वास्तुकला शैली : मुग़ल वास्तुकला

स्थान : निज़ामुद्दीन पूर्व, नयी दिल्ली, भारत

निर्माण कार्य शुरू : 1565

निर्माण सम्पन्न : 1572

वास्तुकार : मिर्ज़ा ग़यास

हुमायूं का मक़बरा इमारत परिसर मुग़ल वास्तुकला से प्रेरित मक़बरा स्मारक है । यह नयी दिल्ली के दीनापनाह अर्थात पुराने क़िले के निकट निज़ामुद्दीन पूर्व क्षेत्र में मथुरा मार्ग के निकट स्थित है । गुलाम वंश के समय में यह भूमि किलोकरी क़िले में हुआ करती थी और नसीरुद्दीन (1268-1287) के पुत्र तत्कालीन सुल्तान केकूबाद की राजधानी हुआ करती थी । यहां मुख्य इमारत मुग़ल सम्राट हुमायूं का मक़बरा है और इसमें हुमायूं की क़ब्र सहित कई अन्य राजसी लोगों की भी क़ब्रें हैं । यह समूह विश्व धरोहर घोषित है एवं भारत में मुग़ल वास्तुकला का प्रथम उदाहरण है । इस मक़बरे में वही चारबाग़ शैली है, जिसने भविष्य में ताजमहल को जन्म दिया ।

यह मक़बरा हुमायूं की विधवा बेगम हमीदा बानो बेगम के आदेशानुसार 1562 में बना था । इस भवन के वास्तुकार सैयद मुबारक इब्ने मिराक़ ग़यासुद्दीन जिन्हें अफ़ग़ानिस्तान के हेरात शहर से विशेष रूप से बुलवाया गया था । मुख्य इमारत लगभग आठ वर्षों में बनकर तैयार हुई और भारतीय उपमहाद्वीप में चारबाग़ शैली का प्रथम उदाहरण बनी । यहां सर्वप्रथम लाल बलुआ पत्थर का इतने बड़े स्तर पर प्रयोग हुआ था । 1993 में इस इमारत समूह को युनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया ।

इस इमारत में मुग़ल स्थापत्य में एक बड़ा बदलाव दिखा, जिसका प्रमुख अंग चारबाग़ शैली के उद्यान थे । ऐसे उद्यान भारत में इससे पूर्व कभी नहीं दिखे थे और इसके बाद अनेक इमारतों का अभिन्न अंग बनते गये । ये मक़बरा मुग़लों द्वारा इससे पूर्व निर्मित हुमायूं के पिता बाबर के काबुल स्थित मक़बरे बाग़-ए-बाबर से एकदम भिन्न था । बाबर के साथ ही सम्राटों को बाग़ में बने मक़बरों में दफ़्न

قادری دواخانہ کی کامیاب ترین یونانی دوائیں

LARGEST UNANI
G.M.P.
CERTIFIED COMPANY

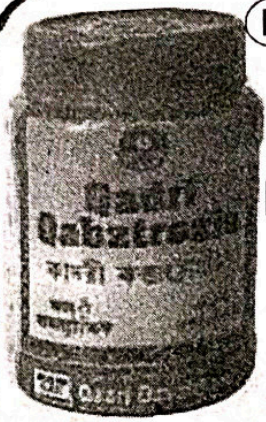

گیسٹک کے درد میں

قادری قبض ٹروجن

بدہضمی، بھوک کی کمی، درد جگر، قبض، سینے کی جلن اور پیٹ کے امراض میں بہت ہی مفید ہے



گھٹیا کے درد میں؟

زعفرانی تیل

کسی بھی قسم کے درد چوٹ موچ، گھٹیا۔ جلنے کٹنے اور بچوں کی مالش میں بہت ہی مفید ہے۔

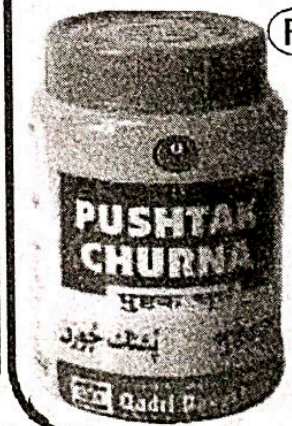

پشٹک چورن

جریان، کثرت احتلام، سرعت انزال، ضعف باہ اور جملہ امراض مردانہ میں بہت مفید ہے

شوگر کی کامیاب دوا

ذیابطیش سی



مثانہ کو قوت پہنچاتی ہے۔ پیشاب کی زیادتی اور ذیابطیش سے ہونے والی کمزوری میں بے حد مفید ہے

Qadri Dawakhana™

An ISO 9001:2008 Certified Company

B-18, Nawab Wajid Ali Shah Road, Kol-24

(O) S-152, S. A. Farooquie Road. (Akra Road) Kolkata- 700 018

Ph. No. 2469-3173-2489-3539

www.qadridawakhana.com • E-mail : qadridawakhana80@yahoo.co.in

करने की परंपरा आरंभ हुई थी । अपने पूर्वज तैमूर लंग के समरकंद उज्बेकिस्तान) में बने मक़बरे पर आधारित ये इमारत भारत में आगे आने वाली मुग़ल स्थापत्य के मक़बरों की प्रेरणा बना । ये स्थापत्य अपने चरम पर ताजमहल के साथ पहुंचा ।

यमुना नदी के किनारे मक़बरे के लिए इस स्थान का चुनाव इसकी हज़रत निज़ामुद्दीन (दरगाह) से निकटता के कारण किया गया था । संत निज़ामुद्दीन दिल्ली के प्रसिद्ध सूफ़ी संत हुए हैं व इन्हें दिल्ली के शासकों द्वारा काफ़ी माना गया है । इनका तत्कालीन आवास भी मक़बरे के स्थान से उत्तर-पूर्व दिशा में निकट ही चिल्ला-निज़ामुद्दीन औलिया में स्थित था ।



बाद के मुग़ल इतिहास में मुग़ल सम्राट बहादुर शाह जफ़र ने तीन अन्य राजकुमारों सहित 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान यहां शरण ली थी । बाद में उन्हें ब्रिटिश सेना के कप्तान हॉडसन ने यहीं से गिरफ़्तार किया था और फिर उन्हें रंगून में मृत्युपर्यंत क़ैद कर दिया गया था ।

20 जनवरी 1556 को, हुमायूं की मृत्यु हुई । मक़बरे का निर्माण हमीदा बानो बेगम के आदेशानुसार 1562 में हुमायूं की मृत्यु के 9 वर्ष उपरांत आरंभ हुआ था । तब इसकी लागत 15 लाख रुपये आयी थी ।

प्रवेश के ईवान और श्वेत संगमरमर के मुख्य गुंबद को घेरती हुई छोटी मीनारों और छतरियों पर बलुआ पत्थर के ज्यामितीय और संगमरमर के पीट्रा ड्यूरा पच्चीकारी के नमूने ।

बाहरी रूप : पाषाण निर्मित विशाल इमारत में प्रवेश के लिए दो 16 मीटर ऊंचे दुर्मंज़िले प्रवेशद्वार पश्चिम और दक्षिण में बने हैं । इन द्वारों में दोनों ओर कक्ष हैं एवं ऊपरी तल पर छोटे प्रांगण हैं । मुख्य इमारत के इवान पर बने सितारे के समान ही एक छह किनारों वाला सितारा मुख्य प्रवेश द्वार की शोभा बढ़ाता है । मक़बरे का निर्माण मूलरूप से पत्थरों को गारे-चूने से जोड़कर किया गया है और उसे लाल बलुआ पत्थर से ढका हुआ है । इसके ऊपर पच्चीकारी, फ़र्श की सतह, झरोखों की जालियों, द्वार-चौखटों और छज्जों के लिए श्वेत संगमरमर का प्रयोग किया गया है । मक़बरे का विशाल मुख्य गुंबद भी श्वेत संगमरमर से ही ढका हुआ है । मक़बरा 8 मीटर ऊंचे मूल चबूतरे पर खड़ा है, 12000 वर्ग मीटर की ऊपरी सतह को लाल जालीदार मुंडेर घेरे हुए है । इस वर्गाकार चबूतरे के कोनों को छांटकर अष्टकोणीय आभास दिया गया है । इस चबूतरे की नींव में 56 कोठरियां बनी हुई हैं, जिनमें 100 से अधिक क़ब्रें बनायी हुई हैं । यह पूरा निर्माण एक कुछ सीढियों ऊंचे चबूतरे पर खड़ा है ।

फ़ारसी वास्तुकला से प्रभावित ये मक़बरा 47 मीटर ऊंचा और 300 फ़ीट चौड़ा है । इमारत पर फ़ारसी बल्बुअस गुंबद बना है, जो सर्वप्रथम सिकंन्दर लोदी के मक़बरे में देखा गया था । यह गुंबद 42. 5 मीटर के ऊंचे गर्दन रूपी बेलन पर बना है । गुम्बद के ऊपर 6 मीटर ऊंचा पीतल का किरीट कलश स्थापित है और उसके ऊपर चंद्रमा लगा हुआ है, जो तैमूर वंश के मक़बरों में मिलता है । गुंबद दोहरी पर्त में बना है, बाहरी पर्त के बाहर श्वेत संगमरमर का आवरण लगा है और अंदरूनी पर्त गुफा रूपी बनी है । गुंबद के शुद्ध और निर्मल श्वेत रूप से अलग शेष इमारत लाल बलुआ पत्थर की बनी है, जिस पर श्वेत और काले संगमरमर तथा पीले बलुआ पत्थर से पच्चीकारी का काम किया गया है । ये रंगों का संयोजन इमारत को एक अलग आभा देता है ।

आंतरिक बनावट : मुख्य केन्द्रीय कक्ष सहित नौ वर्गाकार कक्ष बने हैं । इनमें बीच में बने मुख्य कक्ष को घेरे हुए शेष आठ दुर्मंज़िले कक्ष बीच में खुलते हैं ।

बाहर से सरल दिखने वाली इमारत की आंतरिक योजना कुछ जटिल है, इसमें मुख्य केन्द्रीय कक्ष सहित नौ वर्गाकार कक्ष बने हैं । इनमें बीच में बने मुख्य कक्ष को घेरे हुए शेष

आठ दुमंज़िले कक्ष बीच में खुलते हैं । मुख्य कक्ष गुंबददार (हुजरा) एवं दुगुनी ऊंचाई का एक-मंज़िला है और इसमें गुंबद के नीचे एकदम मध्य में आठ किनारे वाले एक जालीदार घेरे में द्वितीय मुग़ल सम्राट हुमायूं की क़ब्र बनी है । ये इमारत की मुख्य क़ब्र है । इसका प्रवेश दक्षिणी ओर एक ईवान से होता है तथा अन्य दिशाओं के ईवानों में श्वेत संगमरमर की जाली लगी हैं । सम्राट की अस्ली समाधि ठीक नीचे आंतरिक कक्ष में बनी है, जिसका रास्ता बाहर से जाता है । इसके ठीक ऊपर दिखावटी किन्तु सुन्दर प्रतिकृति बनायी हुई है । नीचे तक आम पर्यटकों को पहुंच नहीं दी गयी है । पूरी इमारत में पीट्रा ड्यूरा नामक संगमरमर की पच्चीकारी का प्रयोग है और इस प्रकार के क़ब्र के नियोजन भारतीय-इस्लामिक स्थापत्यकला का महत्वपूर्ण अंग हैं, जो मुग़ल साम्राज्य के बाद के मक़बरों, जैसे ताजमहल आदि में ख़ूब प्रयोग हुए हैं ।

मुख्य कक्ष में संगमरमर की ज़ालीदार घेरे के ठीक ऊपर मेहराब भी बना है, जो पश्चिम में मक्का की ओर बना है । यहां आमतौर पर प्रवेश द्वारों पर खुदे क़ुरआन के सूरह अन-नूर की एक रेखा बनी है, जिसके द्वारा प्रकाश क़िबला (मक्का की दिशा) से अन्दर प्रवेश करता है ।

प्रधान कक्ष के चार कोणों पर चार अष्टकोणीय कमरे हैं, जो मेहराबदार दीर्घा से जुड़े हैं । प्रधान कक्ष की भुजाओं के बीच-बीच में चार अन्य कक्ष भी बने हैं । ये आठ कमरे मुख्य क़ब्र की परिक्रमा बनाते हैं, जैसी सूफ़ीवाद और कई अन्य मुग़ल मक़बरों में दिखती है, साथ ही इस्लाम धर्म में जन्नत का संकेत भी करते हैं । इन प्रत्येक कमरों के साथ 8-8 कमरे और बने हैं, जो कुल मिलाकर 124 कक्षीय योजना का अंग हैं । इन छोटे कमरों में कई मुग़ल नवाबों और दरबारियों की क़ब्रों को समय-समय पर बनाया हुआ है । इनमें से प्रमुख हैं हमीदा बानो बेगम और दारा शिकोह की क़ब्रें । प्रथम तल को मिलाकर इस मुख्य इमारत में लगभग 100 से अधिक क़ब्रें बनी हैं, जिनमें से अधिकांश पर पहचान न खुदी होने के कारण दफ़्न हुए व्यक्ति का पता नहीं है, किन्तु ये निश्चित है कि वे मुग़ल साम्राज्य के राज परिवार या दरबारियों में से ही थे, अतः इमारत को मुग़लों का क़ब्रिस्तान संज्ञा मिली हुई है ।

इस इमारत में लाल बलुआ पत्थर पर श्वेत संगमरमर के संयोजन का सर्वप्रथम प्रयोग किया गया था । इसके साथ ही इसमें बहुत से भारतीय स्थापत्यकला के घटक देखने को मिलते हैं, जैसे मुख्य गुंबद को घेरे हुए राजस्थानी स्थापत्यकला की छोटी छतरियां, जो मूल रूप से नीली टाइल्स से ढकी हुई थीं ।

25 yrs. Service (Regd.)

AL KAUSAR HOLY HERBAL

HOSPITAL & RESERCH CENTRE

(A minority Unit of Islamic Medicine Under Art.30 (1) Const. of India)

Founder: **Al-Hajj Dr. ABDUR RASHEED**

Ph.D. (HOLISTIC HERBAL)

Medicine of Hazrat Mohammad (S.A.W)
By faith of ALLAH
Shyamganj Road, B.Deoghar - 814112
(Jharkhand) India

Kidney, Heart, Liver, Pancreas, Uterus, disorders, Pain Control, Asthama, Child Birth (Cardio, Uro, Nephro, Neuro, Gastroe, Gynae, Hemato, Diabeto Intercentral cardio, Bronco etc.)

Recharge your body, mind, psyco, soul, desire heart way of "Islamic medicine". Further treatment require or not feels within 7 to 19 days

(Rooms available)

Enquiry: 9955725769, E-mail: alkausarreached@gmail.com
Bank of India, Deoghar Branch A/c-446110100000871
IFS Code No. BKID 0004461

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223

संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।

KANTI

Current A/c. No. :0990839195

IFS Code : IDIB000J029

Indian Bank, Jamia Millia Islamia branch

New Delhi 110025

कृपया पैसा जमा करने के बाद फोन न. 011-26949430, मोबाइल न. 9818799223 या ई मेल : managerkantidelhi@gmail.com पर अवश्य सूचित करें।

Prop : MOHD HASHIM

NEW ZICO BATTERY

TOTAL POWER SOLUTION

Deals in : All Types Battery & Inverter



LUMINOUS
DIGITAL INVERTER



MICROTEK
DIGITAL INVERTER

EXIDE



SUJAIT CHOWK, HAZARIBAGH-825301
(JHARKHAND) CELL : 9431159745

Posted on 20-21 October 2019
November 2019
Posted Delhi RMS Delhi-110006
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.10.2019
Total pages 52 with Cover

हिन्दी साहित्यों की मासिक पत्रिका
कान्ति
NEW DELHI-110025

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2018-2020
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2018-2020

THINK PROGRESS THROUGH PROFESSIONAL MANPOWER

A. A. SYED
Chairman

APPLE TRAVELS

INTERNATIONAL HRD CO.
Authorised by Govt. of India as International Recruitment Co.

ATTRACTION FORCE OF GRAVITATION

68, DCB BANK BLDG., 3RD FLOOR,
PALTON ROAD, CRAWFORD MARKET,
MUMBAI-400001 (INDIA)
Phone : 0091-22-6631-1733, 6631-6946
0091-22-6635-5519, 6610-7869,
Fax : 0091-22-66310937
Mobile : 0091-9820673953
E-mail : hr@appleconsultancy.com
Website : www.appleconsultancy.com